अल्लाह के पैग़म्बर
मुहम्मद ﷺ

محمد رسول الله ﷺ

((باللغة الهندية))

लेखक

अब्दुर्रमान अश-शीहा

अनुवादक

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

शफ़ीक़ुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

ज़ाकिर हुसैन मदनी

प्रकाशक

इस्लामी आमंत्रण एवं निर्देशना कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरंभ करता हूँ।

प्रस्तावना

जब पूर्वी और पश्चिमी दुनिया विचारधारा के अंधकार और भ्रष्ट उपासना के अँधेरे में जीवन यापन कर रही थी, मानव-जाति नाना प्रकार की अज्ञानता, मूर्खता, पिछड़ापन, पतन, नैतिक (अख़लाक़ी) और सांस्कृतिक गिरावट से जूझ रही थी। अरब द्वीप में लोग मूर्तियों को पूजते, लड़कियों को मार डालते, वेश्या और व्यभिचार से कमाई करते ... फ़ारसवासी अग्नि पूजा के साथ साथ अत्याचारी किस्रा की भी पूजा में लिप्त थे जिस ने फ़ारसी सम्प्रदाय के मध्य घृणा (नफरत) और ऊँच-नीच को फैला रखा था... हिरक़्ल ने रूमानियों के बीच साम्प्रदायिक भेद भाव को भड़का रखा था। चुनाँचे वह अपने धर्म के

विरोधियों का वध कर देता था, सत्ताधारी रूमानी शासन आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक भ्रष्टाचार से पीड़ित थी... यहाँ तक उन्हों ने जनता पर टैक्स लगा रखा था जिसे "सिर का टैक्स" कहा जाता था जिसे नागरिक अपने सिर को कटने से बचाने के बदले देता था!

इसी कारण हम देखते हैं कि सामान्य रूप से सामूहिक आत्म-हत्या की पूरी तैयारी थी। उस समय मानव जाति आत्म हत्या से केवल प्रसन्न ही नहीं थी, बल्कि उस पर टूटी पड़ रही थी!!

इस प्रकार दुनिया अत्याचार और पतन तथा पिछड़ेपन के समुद्र में हचकोले खा रही थी कि अरब द्वीप के पवित्र नगर मक्का मुकर्रमा में अल्लाह के सन्देष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रूप में एक उज्ज्वल प्रकाश फूटा जिस की किरणों से सर्व संसार प्रकाशमान हो गया और उसे इस्लाम का मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ।

इस प्रकार भटकती हुई मानवता को एक वास्तविक मार्ग दर्शक, रक्षक और मुक्ति देने वाला महान उपकारी, कृपालू, निष्काम और शुद्धहृदय पुरूष प्राप्त हो गया। जिसे उसकी

क़ौम के लोगों ने "**सादिक़**" (सच्चा, सत्यवादी) और "**अमीन**" (विश्वस्त, अमानतदार) की उपाधि से जानती थी और जिस को उस के पालनहार ने इस तरह से सम्बोधित किया:

"हम ने आप को सर्व संसार के लिए रहमत -करूणा- बनाकर भेजा है।" (सूरतुल अम्बियाः१०७)

चुनांचे सर्व संसार के पालनहार ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैग़ाम को विश्व व्यापी करूणा और दया घोषित किया है जो सर्व समय काल में सर्व संसार के लोगों को सामान्य रूप से सम्मिलित है। यह रहमत (करूणा और दया) किसी समय अथवा किसी सम्प्रदाय के साथ विशिष्ट नहीं है। अर्थात प्रत्येक मानव के निकट आप दया के पात्र हैं।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं फरमाते हैं कि: **"मैं करूणा बन कर आया हूँ जो सर्व संसार के पालनहार की ओर से संसार वालों के लिए एक उपहार है।"**

यदि आप इसकी पुष्टि करना चाहते हैं तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी का अध्ययन करें, आप को पग पग पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की करूणा और दया के अनुपम दर्शन का अनुभव होगा।

तथा पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सद्व्यवहार और शिष्टाचार के जिस शिखर पर पदासीन थे वहाँ तक न किसी की पहुँच हुई है और न होगी। और ऐसा क्यों न हो जब सर्व संसार का पालनहार ही इस की गवाही देते हुए कह रहा है:

"निःसंदेह आप महान आचरण -अखलाक़- से सुसज्जित हैं।" (सूरतुल-क़लमः ४)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं फरमाते हैं कि: **"मुझे पैग़म्बर बना कर भेजा ही इस लिए गया है कि मैं अच्छे अखलाक़ -शिष्टाचार- की पूर्ति कर दूँ।"**

इस की पुष्टि में आप के जीवन साथी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का यह कथन कितना तर्क पूर्ण है कि: **"क़ुरआन करीम ही आप का अख़लाक़ -आचार- था।"**

फिर सर्व संसार के लिए कितनी लज्जा की बात है कि ऐसे महान पुरूष के विरूद्ध मीडिया ने युद्ध छेड़ रखा है और उन्हें बदनाम करने के मूर्ख प्रयास किये जा रहे हैं। "**रहमत**" -करूणा, दया- जो आप का सबसे महान और विशेष गुण है और जिस से आप के बड़े से बड़े शत्रु भी प्रभावित हुए बिना न रह सके, उसी पर प्रश्न का चिन्ह लगाया जा रहा है!!

सच तो यह है कि कुत्तों के भूंकने से बादल का कुछ नहीं बिगड़ता, किन्तु यह संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिए कलंक का कारण है कि मानव जाति के मुक्तिदाता, ईश्वर के अंतिम सन्देष्टा, इस्लाम और शांति के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस प्रकार अपमान किया जाए।

यदि आप इस महान पुरूष के सद्व्यवहार और शिष्टाचार से अनभिज्ञ और अपरिचित हैं या किसी भ्रांति के शिकार हैं, तो विशेष रूप से आप के लिए पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो) का जीवन-दर्पण प्रस्तुत है, जो

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होगा। तत्पश्चात आप स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि इस न्याय-प्रिय महान पुरूष के साथ वर्तमान समय के **"न्याय के दावेदार"** कितना बड़ा अन्याय कर रहे हैं!!!

सर्व जगत के पालनहार से हमारी प्रार्थना है कि इस पुस्तिका को पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी से मानवता को परिचित कराने में लाभदायक बनाये।

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
atazia75@gmail.com*

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

भूमिका

जब हम सर्वसंसार के लोगों की ओर अल्लाह के संदेशवाहक -पैग़म्बर- मुहम्मद ﷺ (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विषय में बात करते हैं तो प्राचीन और आधुनिक इतिहास के सबसे महान व्यक्तित्व के बारे में बात कर रहे होते हैं। और यह कोई निराधार दावा नहीं है, क्योंकि जो भी व्यक्ति धार्मिक पक्षपात एंव कट्टरपन तथा व्यक्तिगत अभिरूचियों से अलग थलग हो कर आप

की जीवनी का अध्ययन करेगा और आपके चरित्र और सद्व्यवहार की जानकारी प्राप्त करेगा वह हमारे इस विचार की पुष्टि करेगा और इसका साक्षी होगा, जैसाकि कुछ न्याय प्रिय ग़ैर मुस्लिमों ने इस बात की साक्ष्य दी है।

प्रोफेसर हसन अली "नूरूल इस्लाम" नामी पत्रिका में कहते हैं: उनके एक ब्राह्मड़ मित्र ने उनसे कहा: "मैं इस्लाम के पैग़म्बर को संसार का सबसे महान और निपुणतम पुरूष मानता हूँ।"

प्रोफेसर हसन अली ने उस से पूछा: इस्लाम के पैग़म्बर आपकी निगाह में किस कारण सर्वसंसार के सबसे कामिल पुरूष थे? तो उस ने उत्तर दिया: "मैं इस्लाम के पैग़म्बर के भीतर विभिन्न आचार, सम्पूर्ण व्यवहार और अनेक स्वभाव पाता हूँ जो मैं ने विश्व के इतिहास में किसी एक व्यक्ति के अंदर एक ही समय में नहीं देखा। आप एक ऐसे राजा -शासक- थे जिनके अधीन उनका पूरा राज्य था, आप उसमें जिस प्रकार चाहते शासन करते थे, इसके उपरान्त आप बहुत विनीत और नम्र थे, यह समझते थे कि आप किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखते हैं बल्कि

सारा अधिकार उनके पालनहार के हाथ में है। आप उन्हें बहुत ही निस्पृह और बेनियाज़ पायेंगे कि आपकी राजधानी में संपत्तियों से लदे हुए ऊँट आते थे लेकिन इसके बावजूद आप निर्धन रहते थे, कई कई दिनों तक आपके घर में खाना पकाने के लिए चूल्हा नहीं जलता था और अधिकांश आप उपास रहते थे! हम आपको एक महान सिपह् सालार के रूप में देखते हैं कि आप एक अल्प संख्यक और कमज़ोर अस्त्र शस्त्र वाली फौज की सिपह सालारी करते हैं और उनके द्वारा सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित हज़ारों की संख्या वाली फौज से युद्ध करते हैं और उन्हें बुरी तरह पराजित कर देते हैं। हम आप को ऐसा शान्ति प्रिय पाते हैं जो संधि को प्रधानता देते थे और निश्चिंत होकर संतुष्टापूर्वक संधि की शर्तों पर हस्ताक्षर करते थे जबकि आप के साथ आप के साथियों की हज़ारों की फौज होती थी जिन में से हर एक वीर, बहादुर, साहसी और उत्साह से भरा हुआ होता था। तथा हम आप को एक वीर बहादुर के रूप में देखते हैं जो अपने हज़ारों दुश्मनों के सामने उनकी अधिकता की चिंता किए बिना अकेले डट कर खड़े हो जाते हैं, इसके बावजूद आप दयालु, कृपालु,

कोमल हृदय वाले और अपने दामन को एक बूँद खून बहाने से पाक रखने वाले हैं। आप सारे अरब द्वीप की समस्याओं के समाधान में चिंतित रहते थे, इसके होते हुए आप अपने घर-बार, बीवी-बच्चों और मुसलमान फक़ीरों और मिस्कीनों -दरिद्रों व निर्धन लोगों- के मामलों की देख रेख और प्रबंध करने से पीछे नहीं रहते थे। आप उन लोगों का ध्यान रखते थे जिन्होंने अपने पैदा करने वाले को भुला दिया था और उससे मुँह मोड़ लिया था, आप ऐसे लोगों के सुधार के लिए बहुत इच्छुक और लालायित थे। सारांश यह कि आप पूरी दुनिया की भलाई की फिक्र में पड़े रहते थे किन्तु इसके बावजूद आप दुनिया से कट कर अल्लाह की ओर ध्यान लगाए रहते थे, आप दुनिया में होते हुए भी दुनिया में -लिप्त- नहीं रहते थे, इसलिए कि आप का दिल अल्लाह तआला में और अल्लाह को प्रसन्न करने वाली चीज़ों में लगा रहता था। आप ने कभी अपने स्वार्थ के लिए किसी से इन्तिक़ाम (बदला) नहीं लिया। आप अपने दुश्मनों के लिए भलाई की दुआ करते थे और उनका भला (कल्याण) चाहते थे, किन्तु अल्लाह

के दुश्मनों को क्षमा नहीं करते थे और न उन्हें छोड़ते थे। अल्लाह के रास्ते से मुँह मोड़ने वाले लोगों को लगातार डराते रहते थे और उन्हें नरक के अज़ाब की धमकी देते थे। आप ज़ाहिद थे, दुनिया में कोई रूचि नहीं रखते थे, आप इबादत गुज़ार थे अल्लाह का ज़िक्र करने और उससे प्रार्थना करने के लिए रात को जागा करते थे। आपके स्वभाव में यह भी नज़र आएगा कि आप एक वीर-बहादुर सिपाही थे जो तलवार से युद्ध करते थे। आप उन्हें ठीक उसी समय एक बुद्धिमान रसूल (संदेशवाहक) और मासूम (निर्दोष) नबी (ईश्दूत) पायेंगे जिस घड़ी आप उन्हें एक विजेता के रूप में देखते हैं जिन्हों ने देशों को विजय कर लिया और राष्ट्रों को अपने झण्डे तले कर लिया। आप खजूर के पत्ते की बनी हुई एक चटाई पर लेटते हैं और खजूर के पेड़ की छाल से भरे हुए एक तकिया पर टेक लगाते हैं, जिस समय हमारे दिलों में यह आता है कि हम उन्हें अरब का राजा कहें और आपको पूरे अरब देशों का बादशाह कहकर पुकारें। आपके घर वाले उपास रहते थे और कठिन जीवन बिताते थे जबकि आपके पास अरब

प्रायद्वीप के कोने-कोने से अधिकाधिक धन-दौलत आते थे और आप की मस्जिद के आँगन में उसके ढेर लग जाते थे। आपकी बेटी और कलेजे का टुकड़ा फातिमा -रज़ियल्लाहु अन्हा- आपके पास आती हैं और यह शिकायत करती हैं कि मशकीज़ा उठाने और चक्की से आटा पीसने के कारण उन्हें कठिनाई झेलनी पड़ती है यहाँ तक कि उनके हाथों में छाले पड़ गये और शरीर में मशकीज़ा उठाने से निशान पड़ गए हैं, उस समय अल्लाह के पैग़म्बर मुसलमानों के बीच जंग से प्राप्त होने वाले गुलामों और लौंडियों को बाँट रहे होते हैं, किन्तु आप की बेटी को उस से कोई हिस्सा नहीं मिलता है, सिवाय इसके कि आप उनको कुछ दुआयें सिखलाते हैं कि उनके द्वारा वह अपने पालनहार को जपें। एक दिन आपके साथी उमर -रज़ियल्लाहु अन्हु- आपके पास आए और आपके कमरे में अपनी निगाह दौड़ाई तो एक खजूर के पत्ते की बनी हुई चटाई के सिवा कुछ नहीं पाया जिस पर आप लेटे हुए थे और आप के पहलू में उसके निशान पड़े हुए थे, और घर की कुल पूँजी एक साअ (लगभग अढ़ाई किलो) जौ

और उसी के पास खूंटी पर टंगा हुआ एक मश्कीज़ा था। उस समय अल्लाह के पैग़म्बर के घर की यही पूरी सम्पत्ति थी जिस दिन आधा अरब आप के अधीन था। जब उमर -रज़ियल्लाहु अन्हु- ने यह देखा तो आप से रहा न गया और आप की आँखों से आँसू बहने लगे तो अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमर से पूछाः ऐ उमर क्यों रो रहे हो? तो उन्हों ने कहाः मैं क्यों न रोऊँ जबकि रूम और ईरान के बादशाह दुनिया का आनन्द ले रहे हैं और उसकी नेमतों का लाभ उठा रहे हैं, और अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम केवल उन्हीं चीज़ों के मालिक हैं जो मैं देख रहा हूँ! इस पर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे कहाः ऐ उमर! क्या तुम्हें यह बात पसंद नहीं कि क़ैसर व किस्रा को इस दुनिया की नेमतों से यह हिस्सा प्राप्त हो और आख़िरत केवल हमारे लिए हो?!

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का को विजय करने के लिए अपने फौजियों का जाँच पड़ताल किया तो अबू सुफ़्यान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा

अब्बास के बगल में था और दोनों, मुसलमान मुजाहिदों को देख रहे थे जिनके आगे बहुत सारे झण्डे थे। अबू सुफ़्यान उस समय अभी इसलाम का विरोधी था। चुनाँचे वह मुसलमानों की सेना की बड़ी संख्या और उनके साथ सम्मिलित मुसलमान क़बीलों को देख कर भयभीत हो गया जो भयानक तूफ़ान की तरह मक्का पर चढ़े चले आ रहे थे, जिन्हें न कोई रोकने वाला था और न कोई चीज़ उनके रास्ते में आड़े आ सकती थी। यह देख कर अबू सुफ़्यान ने अपने साथी से कहाः "ऐ अब्बास! तेरा भतीजा तो बहुत बड़ा बादशाह बन गया है।" तो अब्बास ने जवाब दिया -और वह अबू सुफ़्यान जो कुछ देख रहा था उसके विपरीत देख रहे थे- : "ऐ अबू सुफ़्यान! इसका बादशाहत से कुछ नहीं लेना देना है, यह तो नुबुव्वत (ईश्दूतत्व) और पैग़म्बरी है।"

अदी अत्ताई -जो सुप्रसिद्ध हातिम का बेटा है जिसकी सखावत और दानशीलता में कहावत बयान की जाती है- वह "तै" नामी क़बीले का सरदार था, एक दिन वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महफिल में उपस्थित हुआ

जबकि वह अभी ईसाई ही था। जब उसने देखा कि सहाबा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बहुत आदर और सम्मान करते हैं और जिहाद के हथियारों और सुरक्षा के लिए ज़िरह से लेस हैं तो वह पैग़म्बरी और बादशाहत के बारे में संदेह का शिकार हो गया और अपने दिल में उसने यह प्रश्न उठाया कि आप एक बादशाह हैं या पैग़म्बरों में से एक पैग़म्बर हैं? वह इसी उधेड़ बुन में था कि मदीना की एक ग़रीब महिला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और आप से कहाः "ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! मैं आप से कुछ राज़ की बात करना चाहती हूँ।" आप ने उससे कहाः "तुम मदीना की जिस गली में चाहो मैं तुम से एकांत -तन्हाई- में मिलने के लिए तैयार हूँ।" फिर आप उस महिला के साथ उठ कर चले गये और उसकी ज़रूरत पूरी की। जब हातिम ताई के बेटे ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह महान आजिज़ी व खाकसारी देखी जबकि आप अपने साथियों के बीच बादशाह की महानता के समान महत्व रखते थे तो उसकी आंखों के सामने से बातिल (असत्य, मिथ्या) का अंधेरा

छट गया और उसके लिए हक़ (सत्य) स्पष्ट हो गया और उसे यह विश्वास हो गया कि यह मामला अल्लाह की पैग़म्बरी से संबंधित है, चुनांचे उसने अपनी सलीब निकाल कर फेंक दी और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों के साथ इस्लाम के प्रकाश में प्रवेश कर गए।

हम इस पुस्तिका में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में मुस्तशरेक़ीन -ग़ैर मुस्लिम विद्वान जो इस्लामी विज्ञान एंव शास्त्र का ज्ञान रखते हैं - के कुछ कथनों का (भी) उल्लेख करेंगे, जबकि मुसलमान होने की हैसियत से हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी और ईश्दूतत्व पर विश्वास रखते हैं, हमें इस तरह के कथनों का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन ऐसा करने के दो कारण हैं:

पहला कारण: हमने मुस्तशरेक़ीन के कथनों का उल्लेख किया है ताकि कुछ वह मुसलमान जो इस्लाम का केवल नाम जानते हैं, उन्हें पढ़ें और यह जानकारी प्राप्त करें कि ग़ैर-मुस्लिम उनके उस नबी व पैग़म्बर के बारे में क्या

कहते हैं जिनकी पैरवी और आज्ञा पालन को उन्हों ने छोड़ दिया है, संभव है कि यह उनके लिए अपने दीन की ओर सच्चाई के साथ पलटने की शुरूआत बन जाए।

दूसरा कारणः हम ने मुस्तशरेक़ीन के अक़्वाल (कथन) इसलिए उल्लेख किये हैं ताकि ग़ैर-मुस्लिम इन्हें पढ़ें, समझें और इस अमानतदार पैग़म्बर की हकीक़त का पता उन लोगों के मुँह से चलाएं जो उन्हीं की नस्ल से हैं और उन्हीं की बोली बोलते हैं। हो सकता है यह लोग इस्लाम के मार्ग पर आ जाएं और यह उनके लिए इस महान दीन को समझने के लिए एक सच्ची खोज का आरम्भ सिद्ध हो।

इन लोगों से मेरा यह अनुरोध है कि वह दूसरों की बुद्धियों (अक़्लों) से सोच विचार न करें, बल्कि उनके पास भी बुद्धियाँ हैं जिन के द्वारा वह -अगर पक्षपात और तअस्सुब को छोड़ दें तो- हक़ और बातिल, गलत और सहीह की पहचान कर सकते हैं। इस प्रकार के लोगों के लिए मेरी यह प्रार्थना है कि अल्लाह तआला उनके दिलों

को हक़ के लिए खोल दे, उसकी ओर उनकी रहनुमाई करे और उन्हें सीधे मार्ग की हिदायत दे।

अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल करीम अश्शीहा

रियाज़: ११५३५ पोस्ट बाक्स: ५६५६५

www.islamland.org

Email:alsheha@yahoo.com

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन हैं?

आप का नसब नामा (वंशावली) :

आप की कुन्नियत 'अबुल-क़ासिम' तथा नाम 'मुहम्मद' है। आप के पिता का नाम 'अब्दुल्लाह' और दादा का नाम 'अब्दुल मुत्तलिब' है। आपका नसब 'अद्नान' तक पहुँचता है जो अल्लाह के खलील -दोस्त- इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम (जो अल्लाह के पैग़म्बर थे) की औलाद में से हैं। आप की माँ 'आमिनह' पुत्री 'वहब' हैं जिनका नसब भी 'अदनान' तक पहुँचता है जो इब्राहीम खलीलुल्लाह के बेटे पैग़म्बर इस्माईल अलैहिस्सलाम

की औलाद में से हैं। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

"अल्लाह तआला ने किनानह को इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से चुना, और कुरैश को किनानह में से चुना और कुरैश में से बनू-हाशिम को चुना और बनू-हाशिम में से मुझे चुना है।" (सहीह मुस्लिम)

इस तरह आप का यह नसब पूरी धरती पर सबसे श्रेष्ठ नसब है। इसकी गवाही आपके दुश्मनों ने भी दी है। अबु-सुफ़्यान जो इस्लाम लाने से पहले पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कट्टर दुश्मन था, उसने रूम के शासक हिरक़्ल के पास इसकी गवाही दी।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं: अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ैसर (रूम के बादशाह) के पास उसे इस्लाम की दावत देने के लिए पत्र लिखा और वह पत्र देह्या अल-कलबी को देकर भेजा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

उन्हें आदेश दिया कि वह पत्र बुस्रा के गवर्नर को सौंप दें ताकि वह उसे क़ैसर तक पहुँचा दे। क़ैसर उस समय अल्लाह का शुक्रिया अदा करने के लिए हिम्स से ईलिया (वर्तमान बैतुल-मक़्दिस) आया था क्योंकि अल्लाह तआला ने ईरान की सेना पर उसे विजय प्रदान किया था। जब क़ैसर को अल्लाह के पैग़म्बर का पत्र मिला तो उसे पढ़ने के बाद उसने कहाः यहाँ से उनकी क़ौम का कोई आदमी ढूँढ कर मेरे पास लाओ ताकि मैं उस से मुहम्मद के बारे में पूछ-ताछ करूँ। इब्ने अब्बास कहते हैं कि अबू-सुफ़्यान ने मुझसे बताया कि वह उस समय क़ुरैश के कुछ लोगों के साथ शाम में थे जो तिजारत के लिए आये थे, यह उस समय काल की बात है जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के बीच संधि हुई थी। अबू-सुफ़्यान का कहना है कि क़ैसर के हरकारे ने शाम के किसी नगर मे हमें पा लिया और मुझे और मेरे साथियों को लेकर ईलिया (बैतुल-मक़्दिस) आया और हमें क़ैसर के शाही महल में ले गया, जो ताज पहने हुए अपने

सिंहासन पर बिराजमान था और उसके चारों तरफ रूम के बड़े बड़े लोग थे।

उसने अपने तर्जुमान (अनुवादक) से कहाः इन से पूछो कि यह आदमी जो अपने आपको पैग़म्बर समझता है इस से इन में से कौन आदमी सब से निकट खानदानी संबंध रखता है?

अबू-सुफ़्यान का कहना है कि मैं ने कहाः मैं उस से सबसे निकट खानदानी संबंध रखता हूँ।

उसने कहाः तुम्हारे और उनके बीच क्या रिश्तेदारी है?

मैं ने कहाः वह मेरे चचेरे भाई हैं। और इस कारवाँ में उस समय मेरे सिवा बनू-अब्दे मनाफ़ का कोई अन्य आदमी नहीं था।

क़ैसर ने कहाः इसे मेरे क़रीब कर दो, और मेरे साथियों को भी मेरे पीछे मेरे कन्धे के पास बैठाने का आदेश दिया।

फिर अपने तर्जुमान से कहाः इसके साथियों से बता दो कि मैं इस आदमी से उस व्यक्ति के बारे में प्रश्न करूँगा जो

अपने आप को पैग़म्बर समझता है, अगर यह झूठ बोले तो तुम लोग इसे झुठला देना।

अबू-सुफयान कहते हैंः अल्लाह की क़सम अगर मुझे यह शर्म न आती कि मेरे साथी मेरे बारे में झूठ की चर्चा करेंगे तो जब उसने मुझसे आप के बारे में पूछा था मैं अवश्य उससे झूठ बोलता, लेकिन मुझे शर्म आई कि वह मेरे बारे में झूठ की चर्चा करें। इसलिए मैं ने उसे सच सच जवाब दिया।

फिर उसने अपने तर्जुमान से कहाः तुम लोगों में उसका नसब कैसा है?

मैं ने कहाः वह हमारे बीच ऊँचे नसब वाला है।

उसने कहाः तो क्या यह बात इस से पहले भी तुम में से किसी ने कही थी?

मैं ने कहाः नहीं।

उसने कहाः क्या इसने जो बात कही है इसे कहने से पहले तुम उसे झूठ से आरोपित करते थे?

मैं ने कहाः नहीं।

उसने कहाः क्या उसके बाप दादा में कोई बादशाह हुआ है?

मैं ने कहाः नहीं

उसने कहाः अच्छा तो बड़े लोगों ने उसकी बात मानी है या कमज़ोर लोगों ने?

मैं ने कहाः बल्कि कमज़ोरों ने।

उसने कहाः क्या यह लोग बढ़ रहे हैं या घट रहे हैं?

मैं ने कहाः बल्कि बढ़ रहे हैं।

उसने कहाः क्या उसके दीन में प्रवेश करने के बाद कोई आदमी उसके दीन से नाराज़ होकर पलट (मुर्तद हो) जाता है?

मैं ने कहाः नहीं।

उसने कहाः क्या वह वादा खिलाफ़ी (विश्वास घात) करता है?

मैं ने कहाः नहीं, किन्तु इस समय हम उसके साथ एक संधि की अवधि में हैं और हमें डर है कि वह ग़द्दारी करेगा।

अबू-सुफ़्यान कहते हैं कि इसके सिवा मैं कोई अन्य ऐसी बात घुसेड़ नहीं सका जिस से आपकी निंदा कर सकूँ और मुझे उसके चर्चा का भय न हो।

उसने कहाः क्या तुम लोगों ने उस से या उसने तुम लोगों से लड़ाई की है?

मैं ने कहाः हाँ।

उसने कहाः तो उसकी और तुम्हारी लड़ाई कैसे रही?

मैं ने कहाः हमारी लड़ाई बराबर की रही, कभी वह जीता कभी हम।

उसने कहाः वह तुम्हें क्या आदेश देता है?

मैं ने कहाः वह हमें यह आदेश देता है कि हम केवल अल्लाह की इबादत (उपासना) करें उसके साथ किसी को भी साझी न ठहरायें, और हमारे बाप दादा जो कुछ पूजते

थे उससे हमें रोकता है, और वह हमें नमाज़, सच्चाई, पाक दामनी, वादा निभाने और अमानत अदा करने का आदेश देता है।

जब मैं ने उस से यह कहा तो उसने अपने तर्जुमान से कहाः "इस आदमी (अबू-सुफ़्यान) से कहोः मैं ने तुम से तुम्हारे बीच उस आदमी (पैग़म्बर) के नसब के बारे में पूछा तो तुम ने बताया कि वह ऊँचे नसब वाला है। और दरअसल पैग़म्बर अपनी क़ौम के ऊँचे नसब में से भेजे जाते हैं।

मैं ने तुम से पूछा कि क्या यह बात इस से पहले भी तुम में से किसी ने कही थी? तो तुम ने बतलाया कि नहीं। मैं कहता हूँ कि अगर यह बात इससे पहले तुम में से किसी और ने कही होती तो मैं सोचता कि यह आदमी एक ऐसे बात की पैरवी कर रहा है जो इससे पहले कही जा चुकी है।

मैं ने तुम से पूछा कि क्या इसने जो बात कही है इसे कहने से पहले तुम उसे झूठ से आरोपित करते थे? तो

तुम ने कहा कि नहीं। तो मैं समझ गया कि ऐसा नहीं हो सकता कि वह लोगों पर तो झूठ न बोले और अल्लाह पर झूठ बोले।

और मैं ने तुम से पूछा कि क्या उसके बाप दादा में कोई बादशाह हुआ है? तो तुम ने जवाब दिया कि नहीं। मैं कहता हूँ कि अगर उसके बाप दादा में कोई बादशाह गुज़रा होता तो मैं कहता कि यह अपने बाप की बादशाहत चाहता है।

मैं ने तुम से पूछा कि बड़े लोग इसकी बात की पैरवी कर रहे हैं या कमज़ोर लोग? तो तुम ने कहा कि कमज़ोर लोगों ने उसकी पैरवी की है। वास्तव में पैग़म्बरों के मानने वाले ऐसे ही लोग होते हैं।

मैं ने तुम से पूछा कि क्या वह लोग बढ़ रहे हैं या घट रहे हैं? तो तुम ने कहा कि वह बढ़ रहे हैं। दरअसल ईमान इसी तरह बढ़ता रहता है यहाँ तक कि मुकम्मल हो जाता है।

मैं ने तुम से यह पूछा कि क्या उस के दीन में प्रवेश करने के बाद कोई आदमी उस के दीन से नाराज़ (अप्रसन्न) होकर मुर्तद होता है? तो तुम ने कहा कि नहीं। वास्तविकता यह है कि जब ईमान का आनन्द दिलों में घुल-मिल जाता है तो कोई उस से अप्रसन्न नहीं होता।

मैं ने तुम से यह पूछा कि क्या वह बेवफाई (प्रतिज्ञा भंग) करता है? तो तुम ने उत्तर दिया कि नहीं। और पैग़म्बर ऐसे ही होते हैं, वह ग़द्दारी (अहद शिकनी) नहीं करते।

मैं ने पूछा कि क्या तुम लोगों ने उस से और उसने तुम लोगों से जंग की है? तो तुम ने कहा कि हाँ, और तुम्हारी और उसकी लड़ाई बराबर की रही है, कभी तुम हारे कभी वह हारे। पैग़म्बर ऐसे ही होत हैं कि उन की परीक्षा की जाती है और अंतिम परिणाम उन्हीं का होता है।

मैं ने तुम से यह भी पूछा कि वह तुम्हें किन बातों का हुक्म देता है? तो तुम ने बतलाया कि वह तुम्हें अल्लाह

की इबादत करने और उसके साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराने का हुक्म देता है, तुम्हारे बाप दादा जिनकी पूजा करते थे उस से मना करता है, और नमाज़, सच्चाई, पाक-दामनी, प्रतिज्ञा-पालन और अमानत लौटाने का हुक्म देता है।

क़ैसर ने कहाः यह सब निःसंदेह उस पैग़म्बर की विशेषताएं हैं जिसके बारे में मुझे पता था कि वह आने वाला है, किन्तु मेरा गुमान यह नहीं था कि वह तुम में से होगा। जो कुछ तुम ने बताया है अगर वह सच है तो बहुत शीघ्र ही वह मेरे इन दोनों पैरों की जगह का मालिक हो जाएगा। अगर मुझे आशा होती कि मैं उसके पास पहुँच सकूंगा तो मैं उस से मिलने का कष्ट करता, और अगर मैं उसके पास होता तो उसके दोनों पाँव धुलता।

अबू-सुफयान ने कहाः फिर क़ैसर ने अल्लाह के पैग़म्बर का पत्र मंगाया और उसे पढ़ा गया, उस पत्र में इस तरह लिखा थाः

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के दास (बन्दे) और पैग़म्बर मुहम्मद की ओर से रूम के बादशाह हिरक़्ल के नाम

उस आदमी पर सलाम हो जो हिदायत की पैरवी करे। (अम्माबाद)

मैं तुम्हें इस्लाम का आमंत्रण देता हूँ। इस्लाम लाओ, सालिम (सुरक्षित) रहोगे। इस्लाम लाओ अल्लाह तुम्हें तुम्हारा अज्र दो बार देगा। अगर तुम ने मुँह फेरा तो तुम पर अरीसियों (तुम्हारी प्रजा) का भी गुनाह होगा। ''ऐ अहले–किताब! एक ऐसी बात की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे बीच बराबर है; कि हम अल्लाह के सिवा किसी और को न पूजें, और उसके साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराएं, और अल्लाह को छोड़ कर हम में से एक दूसरे को रब्ब (पालनहार) न बनाएं। अगर लोग मुँह फेरें तो कह दो कि तुम लोग गवाह रहो कि हम मुसलमान हैं।''

अबू-सुफ़्यान ने कहाः जब वह अपनी बात पूरी कर चुका तो उसके पास बैठे हुए रूम के बड़े-बड़े लोगों की आवाज़ें

ऊँची हुईं और बड़ा शोर व गुल मचा, पर मुझे नहीं मालूम कि उन्हों ने क्या कहा। हिरक़्ल ने हमारे बारे में आदेश दिया और हम बाहर निकाल दिये गये। जब मैं अपने साथियों के साथ बाहर आ गया और उनके साथ अकेले में हुआ तो मैं ने उन से कहाः "अबु-कब्शा के बेटे (यानी मुहम्मद) का मामला बहुत ज़ोर पकड़ गया, उस से तो बनू-असूफ़र (रूमियों) का बादशाह डरता है।

अबु-सुफ़्यान कहते हैंः अल्लाह की क़सम इसके बाद मुझे लगातार यह विश्वास रहा कि उस का दीन ग़ालिब होकर रहेगा, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मेरे दिल में इस्लाम को बैठा दिया, जबकि मैं उसे नापसंद करता था।

आप का जन्म और पालन-पोषणः

आप का जन्म ५७१ ई० में क़ुरैश (जिसकी अरब के लोग ताज़ीम और आदर व सम्मान करते थे) के क़बीला में मक्का के अंदर हुआ, जो अरब द्वीप का धार्मिक केन्द्र समझा जाता है, जहाँ काबा मुशर्रफा है जिसे अबुल-अम्बिया इब्राहीम और उनके सुपुत्र इस्माईल

अलैहिमस्सलाम ने बनाया था, जिसका अरब के लोग हज्ज करते और उसका तवाफ करते थे। अभी आप अपनी माँ के पेट ही में थे कि आपके पिता का निधन हो गया। और आप के जन्म के पश्चात ही आपकी माँ भी चल बसीं। चुनाँचे आपको यतीमी की ज़िंदगी बितानी पड़ी, आप के दादा अब्दुल-मुत्तलिब ने आपकी किफालत की। जब आपके दादा की भी मृत्यु हो गई तो आपके चचा अबु-तालिब ने आपकी किफालत संभाली।

आपका क़बीला और उसके आस पास के अन्य क़बाईल बुतों की पूजा करते थे जिन्हें उन्हों ने पेड़, और कुछ को पत्थर और कुछ को सोने से बना रखा था और वह काबा के चारों ओर रख दिए गए थे। और लोग उनके बारे में लाभ और हानि का आस्था रखते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पूरी ज़िंदगी सच्चाई और अमानत दारी का पैकर थी, आप के बारे में बेवफाई, झूठ, खियानत, धोखा और फरेब का कोई उल्लेख नहीं है। आप अपनी क़ौम के बीच 'अमीन' (अमानत दार, विश्वस्त) के लक़ब से प्रसिद्ध थे। लोग आप के पास अपनी

अमानतें रखते थे और जब सफर का इरादा करते तो अपनी अमानतें आप के पास सुरक्षित कर देते थे। आप उनके बीच सादिक़ (सच्चा आदमी) के नाम से जाने जाते थे; क्योंकि आप जो कुछ कहते और बात चीत करते थे उसमें सच्चाई से काम लेते थे। आप अच्छे व्यवहार वाले, मधु भाषी और ज़ुबान के फसीह थे, लोगों के लिए भलाई और कल्याण को पसंद करते थे। आपकी क़ौम आप से महब्बत करती थी, अपना और पराया, नज़दीक और दूर का; हर एक आप से महब्बत करता था। आप रूपवान (खुश मन्ज़र) थे, आँख आप को देखने से नहीं थकती थी, इस प्रकार आप खुश अख़्लाक़ और खुश मन्ज़र थे जितना कि यह शब्द अपने अंदर अर्थ रखता है। आपके रब (स्वामी और पालनहार) ने आप के बारे में फरमायाः

﴿وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ﴾ [القلم:٤]

"निःसंदेह आप महान अख़्लाक़ के मालिक हैं।"

(सूरतुल-क़लमः ४)

थामस् कार्लायल (एक अंग्रेज़ लेखक) अपनी पुस्तक "हीरोज़" के अंदर कहता है: "बचपन ही से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक विचारक युवा के रूप में देखा जाता था, आपके साथियों ने आपका नाम अमीन (विश्वस्त) -सच्चाई और वफादारी वाला आदमी- रखा, अर्थात अपने कर्म, अपने कथन और अपने विचार में सच्चाई वाला। लोगों ने इस बात का निरीक्षण किया कि आप के मुँह से जो भी शब्द निकलता है वह हिकमतों (विज्ञान और बुद्धि) से भरा होता है। मैं उनके बारे में जानता हूँ कि वह बहुत खामोश मिज़ाज थे, जहाँ बोलने का कोई कारण नहीं होता था वहाँ खामोश रहते थे। जब आप बात करते तो हिक्मत के मोती झड़ते थे ... हमने आपको पूरी ज़िंदगी दृढ़ सिद्धान्त वाला, ठोस संकल्प वाला, दूरदर्शी, दयालु, सदात्मा, कृपालु, परहेज़गार (सयंमी) प्रतिष्ठित और उदार हृदय वाला देखा है। आप बहुत संजीदा (गंभीर) और निःस्वार्थ थे, इसके बावजूद आप नम्र और सरल, हंस-मुख और प्रफुल्ल, अच्छी आपसदारी और प्रेम भावना वाले थे। बल्कि कभी कभी हंसी मज़ाक़ करते

थे। प्रायः आपका चेहरा सच्चे दिल से मुसकुराता और चमकता रहता था। आप ज़हीन, बुद्धिमान और शेर दिल (सिंह साहस) थे... स्वभाविक रूप से महान थे। किसी पाठशाला ने आप को शिक्षित नहीं किया था और न किसी शिक्षक ने आपके अख़्लाक़ को संवारा और आपको सभ्य बनाया था, आप इस से बेनियाज़ थे... आप ने जीवन में अपने कार्य (मिशन) को अकेले रेगिस्तान के अंदर अंजाम दिया।

पैग़म्बर बनाये जाने से पहले आप को तन्हाई महबूब हो गई थी, चुनांचे 'ग़ारे-हिरा' (हिरा नामी गुफ़ा) में लम्बी लम्बी रातों तक इबादत करते रहते थे। आप की क़ौम जो खुराफात किया करती थी, आप उन से बहुत दूर रहते थे। चुनांचे आप ने शराब को कभी मुँह नहीं लगाया, किसी बुत के सामने सिर नहीं झुकाया और न उसकी क़सम खाई, और न उस पर कभी चढ़ावा चढ़ाया जैसा कि आपकी क़ौम किया करती थी। आप ने अपनी क़ौम की बकरियाँ चराईं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"अल्लाह तआला ने जो भी नबी भेजा सबने बकरियाँ चराईं" आप के साथियों ने पूछाः क्या आप ने भी? आप ने जवाब दियाः "हाँ, मैं चंद क़ीरात के बदले मक्का वालों की बकरियाँ चराया करता था।"
(सहीह बुख़ारी)

जब आप की उमर चालीस साल की हो गई तो आप पर आसमान से वह्य उतरी, उस समय आप मक्का में 'गारे-हिरा' के अंदर इबादत कर रहे थे। अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी उम्मुल-मोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैंः अल्लाह के पैग़म्बर पर वह्य की शुरूआत नीन्द में अच्छे (सच्चे) सपनों से हुई। आप जो भी सपना देखते थे, वह सुब्ह की सफेदी की तरह प्रकट होता था। फिर आप को तन्हाई महबूब हो गई। चुनाँचे आप 'ग़ारे-हिरा' में तन्हाई अपना लेते और कई कई रात घर आए बिना इबादत में व्यस्त रहते थे। इसके लिए आप तोशा ले जाते थे। फिर आप खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आते और उतने ही दिनों के लिए फिर तोशा ले जाते। यहाँ तक कि आप

के पास हक़ आ गया और आप गारे हिरा ही में थे। चुनाँचे आप के पास फरिश्ता आया और उसने कहाः पढ़ो। आप ने फरमायाः मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। आप कहते हैं कि इस पर उसने मुझे पकड़ कर इतना ज़ोर से दबाया कि मेरी शक्ति निचोड़ दी। फिर उसने मुझे छोड़ कर कहाः पढ़ो। मैं ने कहाः मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उसने दुबारा पकड़ कर दबोचा यहाँ तक कि मैं थक गया, फिर छोड़ कर कहाः पढ़ो, तौ मैं ने कहाः मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उसने तीसरी बार मुझे पकड़ कर दबोचा, फिर छोड़ कर कहाः

﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ﴾ [العلق:١-٣]

"पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, मनुष्य को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया। पढ़ो और तुम्हारा रब बहुत करम वाला (दानशील) है।"
(सूरतुल अलक़ः १-३)

इन आयतों के साथ अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पलटे, आप का दिल धक धक कर रहा था। खदीजा पुत्री खुवैलिद के पास आए और फरमायाः **"मुझे चादर उढ़ा दो, मुझे चादर उढ़ा दो।"** उन्हों ने आपको चादर उढ़ा दिया यहाँ तक कि आप का भय समाप्त हो गया।

फिर खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को पूरी बात बतलाकर कहाः "मुझे अपनी जान का डर लगता है।"

खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहाः हरगिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम ! अल्लाह तआला आप को रुस्वा नहीं करेगा। आप सिला-रह्मी करते हैं, कमज़ोरों का बोझ उठाते हैं, दरिद्रों की व्यवस्था करते हैं, मेहमान की मेज़बानी करते हैं, हक़ की मुसीबतों पर सहायता करते हैं।

इसके बाद ख़दीजा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने चचेरे भाई वर्क़ा बिन नौफिल बिन असद बिन अब्दुल-उज़्ज़ा के पास ले गईं। वह जाहिलियत के काल में ईसाई हो गये थे और इब्रानी में लिखना जानते थे। चुनाँचे जितना अल्लाह तआला चाहता था इब्रानी भाषा में इन्जील

लिखते थे। उस समय बहुत बूढ़े और अंधे हो चुके थे। उनसे खदीजा ने कहाः भाई जान! आप अपने भतीजे की बात सुनें।

वर्क़ा ने कहाः भतीजे ! तुम क्या देखते हो?

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो कुछ देखा था बयान कर दिया।

इस पर वर्क़ा ने कहाः यह तो वही नामूस है जिसे अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा था। काश मैं उस समय शक्तिवान होता ! काश मैं उस समय ज़िन्दा होता ! जब आप की क़ौम आप को निकाल देगी।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम ने फरमायाः "क्या यह लोग मुझे निकाल देंगे?"

वर्क़ा ने कहाः हाँ, जब भी कोई आदमी इस तरह का पैग़ाम लाया जैसा तुम लाए हो तो उस से अवश्य दुश्मनी की गई, और अगर मैं ने तुम्हारा समय पा लिया तो तुम्हारी भरपूर सहायता करूंगा।

इसके बाद वरक़ा की शीघ्र ही मृत्यु हो गई और वह्य का सिलसिला बन्द हो गया। (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम)

यह सूरत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत (ईश्दूतत्व) का आरम्भ थी। इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह का यह फर्मान उतराः

﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَأَنذِرْ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ﴾ [المدثر:١-٥]

“ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले! खड़ा हो जा और डरा दे। और अपने रब (पालनहार) की महानता (बड़ाई) बयान कर। अपने कपड़े को पाक रखा कर। नापाकी (बुतों की पूजा) को छोड़ दे।” (सूरतुल-मुद्दस्सिरः १-४)

इस सूरत के द्वारा आपकी पैग़म्बरी (रिसालत) और दावत का आरम्भ हुआ। चुनाँचे आप ने अपने रसूल (पैग़म्बर) होने का एलान किया और अपनी क़ौम -मक्का वालों- को इस्लाम की दावत देना शुरू कर दिया। इस पर आप को उनकी ओर से हठ का

सामना हुआ और उन्होंने आपकी दावत को नकार दिया। क्योंकि आप उन्हें एक ऐसी चीज़ की दावत दे रहे थे जो उनके लिए अनोखी थी, और जिस का संबंध उनके सारे धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मामलों से था। उन्हें केवल एक अल्लाह की इबादत करने और उसके सिवा की इबादत छोड़ने की दावत देने, और क़ौम की अक़्लो और उनके पूज्यों -बुतों- को मूर्ख और बुद्धिहीन ठहराने पर बस नहीं किया गया था, बल्कि इस्लाम ने उन पर उनके मनोरंजन, मालदारी और एक दूसरे पर गर्व करने के साधन को भी हराम कर दिया। चुनाँचे सूद-ब्याज, ज़िना, जुवा और शराब को उन पर हराम कर दिया। इसके साथ ही उन्हें तमाम लोगों के बीच अद्ल व इन्साफ और न्याय करने की दावत दी, जिनके बीच कोई ऊँच-नीच और भेद-भाव नहीं, अगर है तो केवल तक़्वा (परहेज़गारी) के आधार पर है। ऐसी हालत में क़ुरैश, जो अरब के सरदार थे, इस बात को कैसे पसंद कर सकते थे

कि उनके और गुलाम के बीच बराबरी पैदा की जाए (और दोनों को एक स्थान पर ला खड़ा किया जाए)। उन्हों ने केवल आप की दावत को नकारने पर ही बस नहीं किया, बल्कि उन्हों ने आप को गाली गलूज के द्वारा दुख पहुँचाया। विभिन्न तोहमतों -झूठ, पागल पन, जादू- से आरोपित किया, जिन से वह आपको अपनी दावत की घोषणा करने से पहले आरोपित करने की शक्ति नहीं रखते थे। चुनाँचे उन्होंने अपने बेवकूफों को आप के पीछे लगा दिया जिन्हों ने आप को सताया और आपके साथियों को तकलीफें पहुंचाईं। आप को शारीरिक तकलीफ भी दी गई।

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे और क़ुरैश की एक जमाअत अपनी बैठक में थी कि इतने में उनके एक कहने वाले ने कहा: क्या तुम इस रियाकार को नहीं देखते, कौन है जो आले-फलाँ के ऊँटों के पास जाए और उस की ओझड़ी ले कर आए और जब

वह सज्दा करें तो उनके दोनों कंधों के बीच (पीठ) पर डाल दे? इस पर क़ौम का सबसे अभागा आदमी उठा, ओझड़ी ले आया और जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में गये तो उसे आप की पीठ पर दोनों कंधों के बीच डाल दिया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे ही में पड़े रहे और वह लोग इस तरह से हँसे कि हँसी के मारे एक दूसरे पर गिरने लगे। फिर किसी ने जा कर फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को बताया। वह उस समय छोटी बच्ची थीं। चुनाँचे वह दौड़ कर आईं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे ही में थे यहाँ तक कि उन्होंने आप की पीठ से ओझड़ी हटा कर फेंकीं और उन लोगों को बुरा भला कहने लगीं। (सहीह बुख़ारी)

मुनीब अल-अज़दी कहते हैं: मैं ने जाहिलियत के ज़माने में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा है कि आप फरमा रहे थे:

"ऐ लोगो! ला-इलाहा-इल्लल्लाह कहो कामयाब हो जाओगे।" इस पर कुछ लोगों ने आपके चेहरे पर थूक दिया, कुछ ने आप पर मिट्टी फेंकी, और कुछ ने गालियाँ

दीं, यहाँ तक कि दोपहर हो गया, तो एक बच्ची पानी का एक बड़ा प्याला ले कर आई और उस से आप का चेहरा और हाथ धोया। इस पर आप ने कहाः "ऐ प्यारी बेटी! अपने बाप पर ग़रीबी और रुस्वाई से न डर।"
(अल-मोजमुल कबीर लित-तबरानी)

उर्वा बिन ज़ुबैर कहते हैं : मैं ने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस से पूछा कि मुश्रिकीन ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जो सब से सख्त तरीन (बुरा) बर्ताव किया था आप मुझे उसके बारें में बतायें? उन्हों ने कहाः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़्बा बिन अबी मुऐत आ गया। उसने आते ही अपना कपड़ा आप की गर्दन में डाल कर कठोरता से आप का गला घूँटा। इतने में अबु बक्र आ गये और उन्हों ने उसका कंधा पकड़ कर धक्का दिया और उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दूर करते हुए फरमायाः तुम लोग एक आदमी को इस लिए मार डालना चाहते हो कि वह कहता है मेरा रब अल्लाह है

और तुम्हारे पास तुम्हारे रब के पास से खुली हुई निशानियाँ ले कर आया है? (सहीह बुख़ारी)

यह सारी घटनायें पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी दावत को जारी रखने से न रोक सकीं। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज्ज के लिए मक्का आने वाले क़बीलों पर इस्लाम को पेश करते थे। जिसके फलस्वरूप यसरिब - जो आज 'मदीना तैयिबा' के नाम से सुप्रसिद्ध है - के कुछ लोग आप पर ईमान ले आए और आप को यह वचन दिया कि अगर आप उनके पास आते हैं तो वह आपकी मदद और हिफाज़त करेंगे। आप ने उनके साथ अपने एक साथी मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को उन्हें इस्लाम की शिक्षा देने के लिए भेजा। फिर उस अत्याचार और तक्लीफ व परेशानी के बाद जो आपको और आप पर ईमान लाने वाले कमज़ोर लोगों को अपनी क़ौम की तरफ से पहुँची, आप के रब ने आप को मदीना की ओर हिज्रत कर जाने की आज्ञा दे दी। मदीना वालों ने आप का बेहतरीन स्वागत किया।

इस प्रकार मदीना आप की दावत का केन्द्र और इस्लामी राज्य की राजधानी बन गया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको अपना ठिकाना बना लिया और लोगों को क़ुरआन पढ़ाना और उन्हें दीन के अहकाम (धर्म-शास्त्र) की शिक्षा देना शुरू कर दिया। मदीना के लोग पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सद्व्यवहार और महान गुणों से बहुत प्रभावित हुए और आप से हर चीज़ से बढ़ कर, यहाँ तक कि अपनी जानों से भी अधिक महब्बत करने लगे। वह आपकी सेवा करने में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते थे और आप के रास्ते में क़ीमती से क़ीमती चीज़ निछावर कर देते थे। उन्होंने ईमान और रूहानियत के समाज में ज़िंदगी गुज़ारी जो खुशहाली और सौभाग्य से परिपूर्ण था। जहाँ समाज के हर व्यक्ति के बीच महब्बत, उल्फत और भाईचारगी के रिश्ते प्रकाश में आए। चुनाँचे धनी और निर्धन, शरीफ (सज्जन) और नीच, गोरा और काला, अरबी और अजमी; इस महान दीन में बराबर हो गये। उनके बीच केवल तक़्वा (सयंम) के आधार पर ही कोई फर्क़ और अंतर रह गया। पैग़म्बर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना में एक साल ठहरने के बाद आप के और आपकी उस क़ौम के बीच, जिसे आपकी दावत की प्रगति (तरक्क़ी) बुरी लग रही थी, सामना और टकराव शुरू हो गया। तथा इस्लामी इतिहास की पहली लड़ाई अर्थात 'बद्र' की लड़ाई दो ऐसे दलों के बीच घटित हुई, जो दोनों आपस में संख्या और जंगी हथियार में एक दूसरे से बहुत मुख़्तलिफ (विभिन्न) थे; मुसलमानों की संख्या ३१४ और मुशरिकों की संख्या १,००० थी। अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने अपने पैग़म्बर और उनके साथियों की सहायता की और उनकी जीत हुई। फिर इसके बाद मुसलमानों और मुशरिकीन के बीच लगातार (एक के बाद दूसरी) लड़ाईयाँ होती रहीं। आठ साल के बाद पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस हज़ार (१०,०००) योद्धाओं की फौज तैयार करने में सफल हो गये। उसे लेकर मक्का की ओर रवाना हुए और उसमें विजेता बनकर प्रवेश किया और अपने क़बीले और अपनी उस क़ौम को पराजित कर दिया जिसने आप को हर प्रकार की तकलीफें दी थी और आप के मानने वालों को

विभिन्न प्रकार की यातनाओं से दोचार किया था यहाँ तक कि उन्हें अपने धन-दौलत, बाल-बच्चे और घर-बार को त्यागने पर मजबूर कर दिया था। आप ने उन्हें पराजित कर दिया और उन पर करारी जीत प्राप्त की। चुनाँचे उस साल का नाम ही "विजय का साल" पड़ गया जिसके बारे में अल्लाह तबारक व तआला ने फरमायाः

﴿إِذَا جَآءَ نَصۡرُ ٱللَّهِ وَٱلۡفَتۡحُ ١ وَرَأَيۡتَ ٱلنَّاسَ يَدۡخُلُونَ فِي دِينِ ٱللَّهِ أَفۡوَاجٗا ٢ فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَٱسۡتَغۡفِرۡهُۚ إِنَّهُۥ كَانَ تَوَّابَۢا ٣﴾

[النصر: ١-٣]

"जब अल्लाह की मदद और फत्ह (विजय) आ जाए। और तू लोगों को अल्लाह के दीन में गिरोह ही गिरोह आता देख ले, तो आपने रब की तस्बीह करने लग हम्द के साथ और उससे क्षमा की प्रार्थना

कर, निःसंदेह वह बड़ा ही क्षमा करने वाला है।''
(सूरतुन-नस्रः १-३)

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का वालों को जमा करके उनसे कहाः ''तुम्हारा क्या खयाल है मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ?'' उन्होंने कहाः अच्छा, आप करीम (दयालु) भाई हैं और करीम (दयालु) भाई के बेटे हैं। आप ने फरमायाः ''जाओ तुम सब आज़ाद हो।''
(सुनन बैहक़ी अल-कुब्रा)

फत्हे मक्का के कारण बहुत से लोग इस्लाम में प्रवेश किए। फिर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना वापस लौट गए और एक समय काल के बाद अपने मानने वाले साथियों में से एक लाख चौदह हज़ार साथियों के साथ हज्ज के लिए मक्का की ओर रवाना हुए और यह हज्ज 'हज्जतुल-वदाअ' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस लिए कि यह हज्ज मुसलमानों को बिदा कहने के समान था क्योंकि आप की वफात का समय करीब आ गया था।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मदीना में सोमवार के दिन १२ रबीउल-अव्वल सन् ११ हि० को स्वर्गवास

हुआ और उसी दिन आप को दफन किया गया। आप की वफात पर मुसलमानों को बहुत गहरा दुख हुआ यहाँ तक कि कुछ सहाबा ने इस खबर को सच्चा नहीं माना। उन्हीं में से उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उन्हों ने कहाः जिसको मैं ने यह कहते हुए सुन लिया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु हो गई, उसकी गर्दन उड़ा दूँगा। इस पर अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और अल्लाह तआला के इस फर्मान की तिलावत की :

﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلاَّ رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِن مَّاتَ أَوْ قُتِلَ انقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ وَمَن يَنقَلِبْ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَن يَضُرَّ اللّهَ شَيْئاً وَسَيَجْزِي اللّهُ الشَّاكِرِينَ﴾

[آل عمران:١٤٤]

“मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) केवल एक पैग़म्बर ही हैं, इन से पहले बहुत से पैग़म्बर हो चुके हैं, क्या अगर उनकी वफात हो जाए या वह शहीद हो जाएँ, तो तुम इस्लाम से अपनी ऐड़ियों के

बल फिर जाओगे? और जो कोई फिर जाए अपनी ऐड़ियों पर तो वह हरगिज़ अल्लाह तआला का कुछ न बिगाड़ेगा। और अनक़रीब अल्लाह तआला शुक्रगुज़ारों को अच्छा बदला देगा।" (सूरत आल इम्रानः १४४)

जब उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत सुनी तो इस पर ठहर गए, और आप रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह की किताब पर अमल करने वाले थे। वफात के समय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र त्रिसठ (६३) साल की थी; पैग़म्बर बनाए जाने से पहले आप मक्का में चालीस साल रहे और नबी होने के बाद तेरह साल तक मक्का में रहे और लोगों को तौहीद की दावत देते रहे। फिर आप ने मदीना की ओर हिज्रत की और वहाँ दस साल तक क़ियाम किया। आप पर वह्य के उतरने का सिलसिला लगातार जारी रहा यहाँ तक कि आप पर पूरा क़ुर्आन उतर गया और इस्लाम के अहकाम व क़वानीन परिपूर्ण होगये।

डा० जी० लीबोन (*Dr. G. Lebon*) अपनी किताब 'अरब की सभ्यता' में कहते हैं: "यदि लोगों की क़ीमत और महत्त्व को उनके महान कारनामों के द्वारा आंका जाए तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतिहास में सबसे महान लोगों मे से हैं, पच्छिमी देशों के विद्वानों ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इन्साफ से काम लेना शुरू कर दिया है, जब कि धार्मिक कट्टरपन और पक्षपात ने बहुत से इतिहासकारों की आँखों को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानता को स्वीकार करने से अंधा कर दिया है।

पैग़म्बर ﷺ का हुल्या (रूप रेखा):

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आकार दरमियानी था, दोनों कंधों के बीच दूरी थी, बाल दोनों कानों की लौ तक पहुँचते थे। आप का मुखड़ा सबसे अधिक सुंदर था और आपकी बनावट बहुत अच्छी थी, आप न लम्बे तड़ंगे थे और न ही नाटे खोटे। आप का रंग न निर्मल सफेद

था न बिल्कुल गन्दुमी। आप के बाल न अधिक घुंघरियाले थे, न बिल्कुल खड़े खड़े। आपका चेहरा सब से अधिक सुंदर था, आप गोरे सलोने चेहरे वाले थे मानो वह चाँदी का बना हुआ है, आप का रंग चमकदार था, आप का पसीना गोया मोती होता था। दाढ़ी के बाल बहुत अधिक थे। जाबिर बिन समुरह से पूछा गया किः क्या पैग़म्बर का चेहरा तलवार जैसा था? तो उन्हों ने कहाः 'नहीं, बल्कि सूरज और चाँद जैसा था और वह गोल था'। आप का मुँह बड़ा, पलकें लम्बी और ऐड़ियाँ पतली थीं। आप गोरे सलोने, न भारी-भरकम न दुबले पतले, न लम्बे न नाटे, बल्कि दरमियानी डील-डोल वाले थे। आप के दोनों हाथ और पाँव भारी भरकम और दोनों हथेलियाँ विशाल थीं। अनस कहते हैंः मैं ने कोई रेशम व दीबा (एक प्रकार का रेशमी कपड़ा) नहीं छुआ जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हथेली से अधिक कोमल (नरम) हो। और न कभी कोई कस्तूरी या अंबर सूंघी जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुश्बू से बेहतर हो। (देखिये सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

पैग़म्बर ﷺ के कुछ सद्व्यवहार, स्वभाव और गुण-विशेषण

1. **परिपूर्ण बुद्धिः** पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम परिपूर्ण बुद्धिमानता की उस चरम सीमा पर पहुंचे हुए थे जहाँ आप के सिवा कोई मनुष्य नहीं पहुंचा है। क़ाज़ी अयाज़ कहते हैंः ''परिपूर्ण बुद्धि और उस की विभिन्न शाखाओं में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सर्वश्रेष्ठ स्थान उस आदमी के निकट निश्चित रूप से

सिद्ध और साबित है जो आप के हालात और समाचार के धारे तथा आप के स्वभाव की निरंतरता और व्यवहार कुशलता को खोजता और टटोलता है, आप के जवामिउल-कलिम (संक्षिप्त परन्तु अर्थपूर्ण व्यापक कथन), आप के शिष्टाचार की सुंदरता, आपके अनुपम जीवन चरित्र और आप की बुद्धिमत्ता की बातों का अध्ययन करता है, तथा तौरात, इन्जील और अन्य उतरी हुई आसमानी किताबों में मौजूद बातों, बुद्धिमानों के कथनों, पिछली क़ौमों (समुदायों) के हालात एंव समाचार, कहावतों (लोकोक्तियों) और लोक राजनीतियों के विषय में आप के ज्ञान और जानकारी से अवगत होता है, तथा आप का संविधान रचना एंव संचालन, उत्तम शिष्टाचार और सराहने योग्य स्वभाव एंव व्यवहार की स्थापना करना, तथा इनके अतिरिक्त अनेक प्रकार के शास्त्र एंव विज्ञान (से अवज्ञत होता है) जिनके विषय में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन, उनके ज्ञानियों ने अपना आदर्श और आप के संकेतों को हुज्जत (तर्क) बनाया है, जैसे- ख़ाब की ताबीर (स्वपनफल), तिब (आयुर्वेद), हिसाब (गणित

शास्त्र), विरासत (मुरदे की जायदाद को बांटने का शास्त्र) और नसब (वंशावली शास्त्र) इत्यादि.... इन समस्त चीज़ों की जानकारी आप को बिना शिक्षा और पढ़ाई के प्राप्त थी। इसके लिए आप ने कहीं शिक्षा प्राप्त नहीं की, और न आप ने पिछले लोगों की किताबों का पाठ किया और न ही आप उनके ज्ञानियों और विद्वानों के पास बैठे, बल्कि आप एक अपनढ़ (निरक्षर) ईश्दूत थे (पढ़ना लिखना जानते ही न थे)। आप को इन में से किसी भी चीज़ का ज्ञान नहीं था यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने आप के सीने को खोल दिया, आप के मामले को स्पष्ट कर दिया, आप को सिखाया और पढ़ाया। (अश्शिफा बि-तारीफि हुक़ूक़िल-मुस्फा १/८५)

2. एहतिसाब (अर्थात किसी भी काम का बदला अल्लाह तआला से चाहना): पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो भी काम करते थे उसका बदला केवल अल्लाह तआला से चाहते थे और इस मैदान में आप सब के नायक थे। आप को अपनी दावत के फैलाने के मार्ग में बहुत कष्ट और कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, किन्तु

आप ने धैर्य के साथ और अल्लाह की ओर से अज्र व सवाब और बदले की उम्मीद रखते हुए सब कुछ सहन कर लिया। अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः गोया मैं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख रहा हूँ कि आप एक ईश्दूत का बयान कर रहे थे जिन्हें उनकी क़ौम ने मारा-पीटा था और वह अपने चेहरे से ख़ून पोंछते हुए कह रहे थेः "ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को क्षमा कर दे क्योंकि वह नहीं जानती"। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

जुन्दुब बिन सुफ्यान कहते हैंः एक लड़ाई के दौरान पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अंगुली घायल हो गई तो आप ने फरमायाः

"तू एक अंगुली है जो घायल हो गई है, जो तकलीफ तुझे पहुंची है वह अल्लाह के रास्ते में है।" (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

3. इख़्लास (निःस्वार्थता) : (अर्थात कोई भी काम केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए

करना) पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने तमाम कामों और मामलों में मुख़्लिस -निःस्वार्थ- थे, जैसाकि अल्लाह तआला ने आपको इसका आदेश देते हुये फरमायाः

﴿قُلْ إِنَّ صَلاَتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لاَ شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَاْ أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ﴾ [الأنعام:١٦٢-١٦٣]

"आप कह दीजिये कि निःसंदेह मेरी नमाज़ और मेरी समस्त उपासना (इबादत) और मेरा जीना और मेरा मरना; ये सब केवल अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का पालनहार है। उसका कोई साझी नहीं और मुझे इसी का आदेश हुआ है और मैं सब मानने वालों में से पहला हूँ।" (सूरतुल-अन्आमः १६२-१६३)

4. सद्व्यवहार -खुश अख्लाक़ी- और सामाजिकताः आप की पत्नी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा

से जब आप के आचार के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहाः **"क़ुरआन करीम ही आप का आचार-अख़्लाक़- था।"** (मुस्नद अहमद)

इस का अर्थ यह है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुरआन करीम के आदेशों का पालन करने वाले और उसकी मना की हुई (निषिद्धि) चीज़ों से बचने वाले थे। उसके अंदर जिन विशेषताओं और गुणों का उल्लेख किया गया है उनको अपनाने वाले और अपने आप को उनके अनुसार ढालने वाले थे। जिन ज़ाहिरी या बातिनी (प्रत्यक्ष या परोक्ष) बुराईयों से क़ुरआन ने रोका है उन्हें त्यागने वाले थे।

और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है; क्योंकि आप का ही यह फर्मान हैः

> **"अल्लाह तआला ने मुझे उत्तम अख़्लाक़ और अच्छे कामों की तक्मील (परिपूर्ण करने)के लिए भेजा है।"** (अदबुल-मुफरद लिल-बुख़ारी, मुस्नद अहमद)

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में अपने इस कथन के द्वारा आप की विशेषता का वर्णन किया है:

﴿وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ﴾ [القلم:٤]

"निःसंदेह आप महान अख़्लाक़ पर हैं।" (सूरतुल-क़लम :४)

अनस बिन मालिक *-जिन्हों ने दस साल तक रात व दिन और यात्रा व निवास में आपकी सेवा की और उसके दौरान आपके अहवाल का ज्ञान प्राप्त किया-* कहते हैं: अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से उत्तम अख़्लाक़ के मालिक थे। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

तथा वह कहते हैं: "पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न गाली बकते थे, न फक्कड़ बाज़ी करते थे और न शाप देते थे। अगर आप किसी को डांट फटकार करते थे तो केवल इतना कहते थे: उसे क्या हो गया है? उसकी पेशानी खाक आलूद हो ! (मट्टी में सने) ।" (सहीह बुख़ारी)

5. अदब व सलीक़ा (सभ्यता और शिष्टता): सह्ल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पीने वाली कोई चीज़ लाई गई जिस में से आप ने पिया। आपके दाहिने ओर एक बच्चा और आपके बायें ओर बड़े-बड़े लोग थे, आप ने बच्चे से कहा: **"क्या तुम मुझे यह इजाज़त देते हो कि यह (पीने वाली चीज़) इन लोगों को दे दूँ"**? बच्चे ने कहा: अल्लाह की क़सम मैं आपसे मिलने वाले अपने हिस्से पर किसी को प्राथमिकता नहीं दे सकता। सहाबी कहते हैं: चुनाँचे आप ने उस चीज़ को उस बच्चे के हाथ में रख दिया। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

6. सुलह पसंदी (संधि प्रियता) : आप सुधार और संधि प्रिय थे, सह्ल बिन सअद कहते हैं: क़ुबा वालों ने आपस में लड़ाई-झगड़ा किया यहाँ तक कि एक दूसरे पर पत्थर बाज़ी किये, जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसकी सूचना मिली तो आप ने फरमाया:

"चलो चलकर हम उनके बीच समझौता -सुलह- करा दें।" (सहीह बुख़ारी)

7. भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकनाः अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी के हाथ में सोने की एक अंगूठी देखी तो उसे निकाल कर फेंक दिया और फरमायाः **"तुम में से कोई व्यक्ति आग का अंगारा ले कर अपने हाथ में डाल लेता है!"** जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चले गये तो उस आदमी से कहा गया कि अपनी अंगूठी ले लो और उस से लाभ उठाओ। उसने कहाः नहीं, अल्लाह की क़सम! जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे फेंक दिया तो मैं उसे कभी भी नहीं उठा सकता। (सहीह मुस्लिम)

8. पवित्रता और सफाई पसंदीः आप बहुत पवित्रता और स्वच्छता प्रिय थे, मुहाजिर बिन कुनफ़ुज़ बयान करते हैं कि वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये इस हाल में कि आप पेशाब कर रहे थे। उन्हों ने आप को सलाम किया तो आप ने उसका जवाब नहीं दिया यहाँ तक कि आप ने वुज़ू कर लिया, फिर आप ने उनसे क्षमा याचना करते हुए कहा : **"मैं ने बिना पाकी के**

अल्लाह तआला का ज़िक्र (स्मरण) करना पसंद नहीं किया।" (सुनन अबूदाऊद)

9. ज़ुबान की सुरक्षाः अब्दुल्लाह बिन अबी औफा बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह का अधिक ज़िक्र करते थे, निरर्थक और बेकार बात नहीं करते थे, नमाज़ लम्बी करते थे और खुत्बा छोटा, और किसी विधवा या मिस्कीन के साथ चलकर उसकी आवश्यकता पूरी करने में कोई घृणा नहीं करते थे। (सुनन नसाई)

10. अधिक उपासनाः आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैंः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को जाग कर नमाज़ पढ़ते थे यहाँ तक कि आपके दोनों पाँव फट जाते थे। {एक रिवायत के शब्द यह हैं कि : यहाँ तक कि आप के पाँव फूल जाते थे।} इस पर आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप से पूछाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप ऐसा क्यों करते हैं? जबकि अल्लाह तआला ने आप के अगले और पिछले गुनाह माफ कर दिये हैं। आप ने फरमायाः **"क्या**

मैं अल्लाह का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूँ?" (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

11. नम्रता और नर्म दिली: अबू-हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: तुफैल बिन अम्र दौसी और उनके साथी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए और उन्हों ने कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! क़बीला दौस वालों ने अवहेलना और इन्कार किया है, आप उन पर बद्-दुआ (शाप) कर दीजिए। इस पर कहा गया कि दौस क़बीला का अब सर्वनाश हुआ। तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा: **"ऐ अल्लाह! तू दौस वालों को हिदायत (मार्ग दर्शन) प्रदान कर और उन्हें लेकर आ।"** (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

12. अच्छी वेशभूषा : बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आकार दरमियाना था, दोनों कंधों के बीच दूरी थी, बाल दोनों कानों की लुरकी तक पहुंचते थे। मैं ने आप को एक लाल जोड़ा पहने हुए देखा। मैं ने आप से अधिक सुंदर कभी कोई चीज़ नहीं देखी। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

13. दुनिया से बे-रग़बती (अरूचि): अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक चटाई पर सोए थे, आप उठे तो आप के पहलू में उसके निशानात थे, इस पर हम ने कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या हम आप के लिए एक बिस्तर की व्यवस्था न कर दें? आप ने फरमाया: **"मुझे दुनिया से क्या लेना देना, मैं तो दुनिया में उस सवार के समान हूँ जिसने एक पेड़ के नीचे विश्राम किया फिर उसे छोड़ कर चला गया।"** (सुनन-तिर्मिज़ी)

अम्र बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी वफात के समय न कोई दिरहम छोड़ा न दीनार, न कोई ग़ुलाम छोड़ा न कोई लौण्डी। आप ने केवल अपना सफेद खच्चर, हथियार और एक टुकड़ा ज़मीन छोड़ा जिसे आप ने ख़ैरात कर दिया। (सहीह बुख़ारी)

14. ईसार (स्वार्थ त्याग): अर्थात अपने ऊपर दूसरे को प्राथमिकता देना। सहल बिन सअद बयान करते हैं कि:

एक महिला एक बुर्दा (चादर) लेकर आई। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (सहाबा से) कहाः "**क्या तुम जानते हो कि बुर्दा क्या है?**" आप से कहा गयाः जी हाँ, ये वह चादर होती है जिसके किनारे बेल बूटे बने होते हैं। उस महिला ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! मैं ने इसे आप को पहनाने के लिए अपने हाथ से बुना है। चुनाँचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे ले लिया, आप को इसकी आवश्यकता थी। कुछ देर बाद आप उसे पहने हुए हमारे पास आए तो क़ौम के एक आदमी ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! यह मुझे पहनने के लिए दे दीजिये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "**ठीक है।**" इसके बाद कुछ देर आप मज्लिस में बैठे रहे, फिर घर वापस गए, चादर को लपेटा और उसे उस आदमी के पास भिजवा दिया। क़ौम के लोगों ने उस से कहाः तुम ने चादर माँग कर अच्छा नहीं किया, जबकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि आप किसी साइल (मांगने वाले) को खाली हाथ नहीं लौटाते हैं। उस आदमी ने कहाः अल्लाह की क़सम! मैं ने इसे केवल इस लिए माँगा है ताकि यह मेरे मरने के

दिन मेरा कफन बन जाए। सहल कहते हैं, चुनाँचे वह चादर उनकी कफन बनी थी। (सहीह बुख़ारी)

15. ईमान की शक्ति और अल्लाह पर भरोसाः अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैंः जब हम ग़ार (सौर नामी गुफा) में छुपे थे तो मैं ने मुशरिकों के पाँवों को अपने सिर के पास देखा और मैं बोल पड़ाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! अगर उन में से कोई आदमी अपने पाँव की तरफ निगाह करे तो हमें अपने पाँव के नीचे देख लेगा। इस पर आप ने फरमायाः **"ऐ अबू-बक्र ऐसे दो आदमियों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिनका तीसरा अल्लाह है।"** (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

16. कृपा और सहानुभूति (शफ़्क़त और रहम दिली) : अबू-क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैंः अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबुल-आस की बेटी उमामा को अपने कंधे पर उठाए हुए हमारे पास आए और नमाज़ पढ़ाई, जब आप रुकूअ में जाते तो उन्हें नीचे उतार देते और जब रुकूअ से उठते तो उन्हें दोबारा उठा लेते। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

17. सरलता और आसानी: अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि : पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

"मैं नमाज़ शुरू करता हूँ और मेरा इरादा नमाज़ को लम्बी करने का होता है, लेकिन मैं बच्चे के रोने की आवाज़ सुन कर अपनी नमाज़ हल्की कर देता हूँ; क्योंकि मैं जानता हूँ कि उसके रोने से उसकी माँ को कितनी परेशानी होगी।" (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम)

18. अल्लाह का डर और परहेज़गारी (संयम): अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

"कभी-कभार मैं अपने घर वापस लौटता हूँ तो अपने बिछौने पर खजूर पड़ा हुआ पाता हूँ, मैं उसे खाने के लिए उठा लेता हूँ, फिर मैं डरता हूँ कि कहीं यह सद्क़ा (ख़ैरात) का न हो। यह सोचकर मैं उसे रख देता हूँ।" (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

19. उदारता के साथ खर्च करनाः अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं किः इस्लाम लाने पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो कुछ भी मांगा गया, आप ने उसे प्रदान कर दिया। वह कहते हैंः चुनांचे एक आदमी आप के पास आया तो आप ने उसे दो पहाड़ों के बीच चरने वाली बकरियों का रेवड़ प्रदान कर दिया। वह अपनी क़ौम के पास वापस लौट कर गया तो कहाः ऐ क़ौम के लोगो! इस्लाम ले आओ; क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतनी बख़्शिश (अनुदान) देते हैं कि फाक़ा का कोई डर नहीं होता है। (सहीह मुस्लिम)

20. आपसी सहयोग एंव सहायता प्रियताः आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से जब यह पूछा गया कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर में क्या किया करते थे? तो उन्हों ने कहाः अपने परिवार की सेवा-सहयोग में लगे रहते थे, और जब नमाज़ का समय हो जाता तो नमाज़ के लिए निकल पड़ते थे। (सहीह बुख़ारी)

बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः मैं ने ख़न्दक़ के दिन पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप मट्टी ढो रहे थे यहाँ तक कि मट्टी से आपके सीने के बाल ढँक गये, और आप के बाल बहुत अधिक थे, इसी हालत में आप अब्दुल्लाह बिन रवाहा के यह रज्ज़ (अर्थात लड़ाई में पढ़ी जाने वाली छंद) पढ़ रहे थेः

ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हम हिदायत (मार्ग दर्शन) न पाते।

न सद्क़ा (ख़ैरात) करते, न नमाज़ पढ़ते।

अतः हम पर सकीनत (शांति) नाज़िल कर।

और यदि हमारी मुठभेड़ हो तो हमारे पाँव जमा दे।

दुश्मनों ने हम पर अत्याचार किया है।

अगर वह हमें फितने में डालना चाहेंगे तो हम इसका विरोध करेंगे।

बरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप इन्हें ज़ोर- ज़ोर से पढ़ते थे। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

21. सच्चाईः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा आप के बारें में कहती हैंः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नज़दीक झूठ से सर्वाधिक नापसंदीदा (घृणास्पद) कोई और आदत नहीं थी। एक आदमी अल्लाह के पैग़म्बर के पास झूठ बोलता था तो आप उसकी वह बात अपने दिल में लिए रहते थे यहाँ तक कि आप को यह पता न चल जाए कि उसने उस से तौबा कर ली है। (सुनन तिर्मिज़ी)

आप के दुश्मनों तक ने भी आप की सच्चाई की गवाही दी है। यह अबू-जह्ल है जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सब से कट्टर दुश्मनों में से था, उस ने एक दिन आप से कहाः ऐ मुहम्मद! मैं आप को झूठा नहीं कहता, किन्तु आप जो कुछ लेकर आए हैं और जिस की दावत देते हैं, मैं उस का इन्कार करता हूँ। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारीः

﴿قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ﴾ [الأنعام: ٣٣]

"हम अच्छी तरह जानते हैं कि जो कुछ यह कहते हैं इससे आप दुखी होत हैं। सो यह लोग आप को नहीं झुठलाते, लेकिन यह ज़ालिम लोग तो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं।" (सूरतुल-अन्आमः ३३)

22. अल्लाह की हुर्मतों (धर्म-निषिद्ध चीज़ों) का सम्मान : आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब भी दो कामों के बीच चयन करने का अवसर दिया जाता तो आप वही काम चयन करते जो आसान हो, जब तक कि वह गुनाह का काम न होता। अगर वह गुनाह का काम होता तो आप उस से अति अधिक दूर रहते। अल्लाह की क़सम आप ने कभी अपने नफ़्स (स्वार्थ) के लिए बदला

नहीं लिया, किन्तु अगर अल्लाह की हुर्मतों को पामाल किया जाता था तो आप अल्लाह के लिए अवश्य बदला लेते थे। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

23. प्रफुल्लता (हंसमुख चेहरा): अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मैं ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अधिक तबस्सुम करने (मुसकुराने) वाला किसी को नहीं देखा। (सुनन तिर्मिज़ी)

24. अमानत दारी और प्रतिज्ञा पालन: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अमानत दारी अपनी मिसाल आप (अनुपम) थी। ये मक्का वाले जिन्हों ने उस समय जब आप ने अपनी दावत का एलान किया, आप से दुश्मनी का बेड़ा उठा लिया और आप पर और आप के मानने वालों पर अत्याचार किया। इनके और पैग़म्गर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीच इतनी दुश्मनी के बावजूद भी अपनी अमानतें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ही रखते थे। यह अमानत दारी उस समय अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई जब इन्हीं मक्का वालों ने आप को हर प्रकार का कष्ट सहने के बाद मदीना की

ओर हिज्रत करने पर विवश (मज़बूर) कर दिया तो आपने अपने चचेरे भाई अली बिन अबू-तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को यह आदेश दिया कि वह तीन दिन के लिए अपनी हिज्रत स्थगित कर दें ताकि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास (मक्का वालों की) जो अमानतें थीं, उन्हें उनके मालिकों को वापस लौटा दें। (सीरत इब्ने-हिशाम ३/११)

इसी प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रतिज्ञा पालन का एक दर्शन (प्रतीति) यह है कि जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुहैल बिन अम्र से हुदैबिया के दिन संधि की अवधि (मुद्दत) पर समझौता कर लिया और सुहैल बिन अम्र ने जो शर्तें लगाई थीं उन में एक शर्त यह भी थी कि उसने कहाः **हम में से जो भी आदमी - चाहे वह आप के दीन ही पर क्यों न हो - आपके पास जाता है तो आप उसे वापस कर देंगे और उसे हमारे हवाले कर देंगे।** और इस शर्त के बिना सुहैल ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुलह करने से इन्कार कर दिया तो मोमिनों ने इसे नापसंद किया और

क्रोध प्रकट किया। चुनांचे उन्हों ने इसके बारे में बात चीत की। फिर जब सुहैल ने इस शर्त के बिना पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुलह करने से इन्कार कर दिया तो आप ने इस पर सुलह कर ली। अभी सुलह नामा लिखा ही जा रहा था कि सुहैल बिन अम्र के बेटे अबू-जन्दल बेड़ियों में जकड़े हुए आ गए। वह मक्का के निचले हिस्से से निकल कर आए थे। उन्हों ने अपने आप को मुसलमानों के बीच डाल दिया। यह देख कर अबू-जन्दल के बाप सुहैल ने कहाः ऐ मुहम्मद! यह पहला व्यक्ति है जिस के बारे में मैं आप से मामला करता हूँ कि आप इसे वापस कर दें। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः "**इसको मेरे लिए छोड़ दो।**" उसने कहाः मैं इसे आप के लिए नहीं छोड़ सकता। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः **"नहीं, इतना तो कर ही दो"**। उसने कहाः मैं ऐसा नहीं कर सकता। अबु-जन्दल को इसका एहसास हो गया, तो उन्हों ने मुसलमानों को उकसाते (जोश दिलाते) हुए कहाः "मुसलमानो! क्या मैं मुशरिकों की ओर वापस कर दिया जाऊँगा हालांकि मैं

मुसलमान होकर आया हूँ? क्या तुम मेरी परेशानी नहीं देख रहे हो?" उन्हें अल्लाह के रास्ते में बहुत अधिक कष्ट दिया गया था।

चुनाँचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रतिज्ञा का पालन करते हुए उन्हें सुहैल बिन अम्र की ओर वापस कर दिया। (सहीह बुख़ारी)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू-जन्दल से फरमायाः "अबू-जन्दल! धीरज से काम लो और इस पर अल्लाह से पुण्य (अज्र व सवाब) की आशा रखो। अल्लाह तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ जो अन्य कमज़ोर मुसलमान हैं उन सब के लिए कुशादगी (आसानी) और कोई रास्ता अवश्य पैदा करेगा। हम ने इन लोगों से सुलह कर ली है और हमारे और इनके बीच अह्द व पैमान (प्रतिज्ञा) लागू हो चुका है और हम प्रतिज्ञा भंग (अहद शिकनी) नहीं कर सकते।" (मुस्नद अहमद)

फिर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना वापस तशरीफ ले आए, तो कुरैश का अबू-बसीर नामी एक

आदमी मुसलमान हो कर आ गया, तो क़ुरैश ने उसको वापस लेने के लिए दो आदमियों को भेजा, उन्हों ने कहाः आप ने हम से जो वादा किया था उसको पूरा कीजिये। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू-बसीर को उन दोनों आदमियों के हवाले कर दिया।

25. वीरता और बहादुरीः अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः मैं ने बद्र के दिन देखा है कि हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आड़ लेते थे, और हमारे बीच आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बढ़ कर दुश्मन के क़रीब कोई नहीं था। उस दिन आप सब से अधिक बलवान और शक्तिशाली थे। (मुसनद अहमद)

लड़ाई के मैदान से बाहर आप की बहादुरी और दिलेरी के बारे में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैंः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से अच्छे और सब से बड़े वीर-बहादुर थे। एक रात मदीना वाले घबराहट और दहशत के शिकार हो गए और आवाज़ (शोर) की ओर निकले, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें रास्ते में वापस आते हुए मिले। आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों से पहले ही आवाज़ की ओर पहुंच कर यह निरीक्षण कर चुके थे कि कोई खत्रा नहीं है। उस समय आप अबू-तल्हा के बिना ज़ीन के घोड़े पर सवार थे और गर्दन में तलवार लटकाए हुए थे, और कह रहे थेः **"डरो नहीं, डरो नहीं।"**

फिर आप ने कहाः **"हम ने इस (घोड़े) को समुद्र पाया"**, या आप ने यह कहा कि : **"यह (घोड़ा) समुद्र है।"**
(सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

मदीना वाले आवाज़ का शोर सुनकर घबराहट के आलम में हक़ीक़त का पता लगाने के लिए बाहर निकलते हैं, तो रास्ते में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अकेले आवाज़ की ओर से वापस लौटते हुए मिलते हैं। आप उन्हें इतमिनान दिलाते हैं। आप एक ऐसे घोड़े पर सवार हैं जिसकी ज़ीन नहीं कसी गई थी; क्योंकि स्थिति का तक़ाज़ा था कि जल्दी की जाए। आप अपनी तलवार लटकाए हुए थे; क्योंकि उसके इस्तेमाल की आवश्यकता पड़ सकती थी। और आप ने उन्हें बताया कि आपके पास जो घोड़ा था वह समुद्र अर्थात बहुत तेज़ था, इसलिए आप ने मामले

का पता लगाने के लिए अपने साथ लोगों के निकलने की प्रतीक्षा नहीं की।

उहुद की लड़ाई में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम से परामर्श (सलाह-मश्वरा) किया तो उन्हों ने लड़ाई करने की सलाह दी, और स्वयं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की राय दूसरी थी, किन्तु आप ने उनके मश्वरा को स्वीकार कर लिया। लेकिन बाद में सहाबा को इस पर पछतावा हुआ क्योंकि आप की चाहत दूसरी थी। अन्सार ने (आपस में) कहा हम ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की राय को ठुकरा दिया। चुनाँचे वह लोग आप के पास आए और कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप को जो पसंद हो वही कीजिए, उस समय आप ने फरमायाः **"कोई नबी जब अपना हथियार पहन ले तो मुनासिब नहीं कि उसे उतारे यहाँ तक कि वह लड़ाई न कर ले।"** (मुसनद अहमद)

26. दानशीलता और सखावतः इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैंः अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से बढ़ कर

सखावत का दरिया -अति दानी- थे, और आपकी सखावत का दरिया रमज़ान में उस समय सब से अधिक उफान पर होता था जब जिब्रील आप से मुलाक़ात करते थे, और जिब्रील आप से रमज़ान की हर रात में मुलाक़ात करते थे और क़ुरआन का दौर कराते थे, उस समय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खैर की सखावत में तेज़ हवा से भी आगे होत थे। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

अबू-ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैंः मैं मदीना के हर्रा (काले रंग की पथरेली ज़मीन) में चल रहा था कि हम उहुद पहाड़ के सामने आगए, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः **"ऐ अबू-ज़र"**! मैं ने कहाः मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप ने फरमायाः "मुझे यह पसंद नहीं है कि उहुद पहाड़ मेरे लिए सोना बन जाए और एक या तीन रात बीत जाए और उस में से मेरे पास एक दीनार भी बाक़ी रह जाए, सिवाए इसके कि मैं उसे क़र्ज के लिए रख लूँ, सिवाए इसके कि मैं उसे अपने दायें, बायें और पीछे अल्लाह के बन्दों में बांट दूँ।" (सहीह बुख़ारी)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि : ऐसा कभी न हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई चीज़ मांगी गई हो और आप ने नहीं कह दिया हो। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

27. हया (शर्म): अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर्दे में रहने वाली कुंवारी औरत से भी अधिक हयादार (शर्मीले) थे, अगर आप कोई अप्रिय (नापसंदीदा) चीज़ देखते तो हमें आपके चेहरे से उसका पता चल जाता। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

28. आजिज़ी व ख़ाकसारी (नम्रता व विनीति): पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से बढ़ कर ख़ाकसार (विनीत) थे। आप की ख़ाकसारी और इन्किसार का यह हाल था कि मस्जिद में दाख़िल होने वाला आप को आपके साथियों के बीच पहचान नहीं पाता था। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक बार हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

साथ मस्जिद में बैठे थे कि एक आदमी अपने ऊँट पर सवार अंदर प्रवेश किया और उसे मस्जिद में बैठा कर बाँध दिया, फिर उन लोगों से कहाः तुम में से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन हैं? उस समय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके बीच टेक लगाए हुए बैठे थे। तो हम ने कहाः यह टेक लगाए हुए गोरा आदमी. . .।'' (सहीह बुख़ारी)

इसलिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने साथियों और अपने पास बैठने वालों से मुम्ताज़ और अलग-थलग होकर नहीं बैठते थे।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिस्कीन, कमज़ोर और ज़रूरतमन्द के साथ जाकर उनकी ज़रूरतों को पूरी करने से उपेक्षा (घृणा) नहीं करते थे, अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः मदीना की एक औरत जिसकी बुद्धि बराबर नहीं थी, उसने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप से मेरी एक ज़रूरत है, आप ने कहाः **''ऐ फलाँ की माँ ! तू जिस गली में चाहे मैं चल कर तेरी ज़रूरत पूरी करने के लिए तैयार हूँ।''**

चुनाँचे आप उसके साथ किसी गली (रास्ते) में एकांत में मिले यहाँ तक कि वह अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हो गई। (सहीह मुस्लिम)

29. कृपा व दया (रहमत व शफ़्क़त): अबू-मस्ऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: एक आदमी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! अल्लाह की क़सम मैं फलाँ के कारण फज्र की नमाज़ से पीछे रह जाता हूँ क्योंकि वह हमें लम्बी नमाज़ पढ़ाता है। रावी (अबू-मस्ऊद) कहते हैं: जितना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस दिन नाराज़ हुए उस से बढ़ कर मैं ने आप को नसीहत के अंदर कभी नाराज़ होते हुए नहीं देखा, फिर आप ने फरमाया:

"ऐ लोगो! तुम में से कुछ लोग नफ़्रत -घृणा- पैदा करने वाले हैं, तुम में से जो भी लोगों को नमाज़ पढ़ाए वह हल्की नमाज़ पढ़ाए, क्योंकि उनमें बूढ़े, कमज़ोर और ज़रूरतमन्द लोग भी होते हैं।" (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

उसामा बिन ज़ैद बयान करते हैं: हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बैठे थे कि आप के पास आप की किसी बेटी का क़ासिद आया कि वह आप को अपने बेटे को देखने के लिए बुला रही हैं जो जांकनी की हालत में है। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस आदमी से कहा:

"वापस जाकर उन्हें बतला दो कि जो कुछ अल्लाह ने ले लिया वह निःसंदेह अल्लाह ही का है और जो कुछ उसने प्रदान किया है वह भी उसी का ही है, और हर चीज़ का उसके पास एक निश्चित समय है। इसलिए उनसे कहो कि वह सब्र करें और अल्लाह से अज्र व सवाब की आशा रखें।"

आप की बेटी ने क़ासिद को यह कह कर दोबारा भेजा कि उन्हों ने क़सम खा लिया है कि आप अवश्य उनके पास आयें। इस पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ खड़े हुए और सअद बिन उबादा और मुआज़ बिन जबल भी आप के साथ हो लिए। बच्चे को आप के सामने पेश किया गया, उसकी साँस ज़ोर-ज़ोर से चल रही थी गोया

वह पुराने मशकीज़े में है। यह देख कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आँखों से आँसू जारी हो गए। सअद ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ! यह क्या है? आप ने फरमायाः "यह वह दया और रहमत है जिसे अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में डाल दिया है, और अल्लाह तआला अपने बन्दों में से दया व मेहरबानी करने वालों पर दया करता है"। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

30. बुर्दबारी (सहनशीलता) और क्षमाः अनस बिन मालिक कहते हैंः मैं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ चल रहा था और उस समय आप एक मोटी किनारी वाली नजरानी चादर ओढ़े हुए थे कि एक दीहाती आदमी ने उसे पकड़ कर बहुत ज़ोर से खींचा यहाँ तक कि मैं ने देखा कि ज़ोर से खींचने के कारण आप की गर्दन पर चादर के निशान पड़ गये। फिर उसने कहाः हे मुहम्मद, तुम्हारे पास अल्लाह का जो माल है उस में से मुझे भी कुछ दो। आप ने उसकी ओर मुड़ कर देखा और मुसकुरा दिया। फिर आप ने उसे कुछ माल देने का आदेश दिया। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बुर्दबारी और तहम्मुल की एक अनुपम मिसाल ज़ैद बिन सअ्ना -वह एक यहूदी आलिम था- की हदीस है, उसने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुछ उधार दिया था जिसकी आप को कुछ मोअल्लफतुल-कुलूब (यानी नौ-मुस्लिम) की ज़रूरतों को निपटाने के लिए आवश्यकता पड़ गई थी। ज़ैद का कहना हैः अभी क़र्ज़ की अदायगी के नियत समय में दो या तीन दिन बाक़ी थे कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक अन्सारी आदमी के जनाज़ा में निकले, आप के साथ अबू-बक्र, उमर, उसमान और आपके के अन्य सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की एक जमाअत थी। जब आप जनाज़ा पढ़ चुके तो एक दीवार के पास जा कर बैठ गए, तो मैं ने आप की क़मीस का दामन पकड़ लिया और आप को भयानक चेहरे के साथ देखा फिर कहाः हे मुहम्मद! क्या तुम मेरा हक़ (कर्ज़) नहीं लौटाओ गे? अल्लाह की क़सम! मैं बनू अब्दुल-मुत्तलिब को टाल मटोल करने वाला नहीं जानता और मुझे तुम्हारे मेल जोल (मामले दारी) का पता है। ज़ैद का कहना हैः मैं

ने उमर बिन खत्ताब को देखा कि उनकी दोनों आँखें उनके चेहरे में गोल आसमान की तरह घूम रही हैं, फिर उन्होंने मेरी तरफ निगाह की और कहाः ऐ अल्लाह के दुश्मन! क्या तू अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसी बात कर रहा है जो मैं सुन रहा हूँ और आप के साथ ऐसा व्यवहार कर रहा है जो मैं देख रहा हूँ? उस ज़ात की क़सम! जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है अगर मुझे एक चीज़ के छूट जाने का डर न होता तो मैं अपनी इस तलवार से तेरी गर्दन उड़ा देता। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुकून व इतमिनान से उमर को देख रहे थे। फिर आप ने फरमायाः

"ऐ उमर! हम इस से कहीं अधिक ज़रूरत मंद दूसरी चीज़ के थे कि तुम मुझे अच्छी तरह क़र्ज़ की अदायगी के लिए कहते और उसे अपने हक़ को अच्छी तरह से मांगने का हुक्म देते। ऐ उमर! इसे ले जाओ और इसका क़र्ज़ वापस कर दो और तुम ने जो इसे भयभीत किया है उसके बदले २० साअ् और अधिक दे दो।"

ज़ैद ने बयान कियाः चुनांचे उमर मुझे लेकर गए और मेरा क़र्ज़ अदा किया और बीस साअ खजूर और अधिक दिया। मैं ने कहाः यह अधिक क्यों दे रहे हैं? उन्हों ने कहाः अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे आदेश दिया है कि मैं ने जो आप को डराया-धमकाया है उसके बदले कुछ अधिक दे दूँ। मैं ने कहाः ऐ उमर! क्या तुम मुझे पहचानते हो? उन्हों ने कहाः नहीं, अच्छा बताओ तुम कौन हो? मैं ने कहाः मैं ज़ैद बिन सअ्ना हूँ। उन्हों ने कहाः वही यहूदियों का आलिम? मैं ने कहाः हाँ, वही विद्वान। उन्हों ने कहाः तू ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो कुछ कहा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जो कुछ तुम ने किया तुझे इस पर किस चीज़ ने उभारा? मैं ने कहाः ऐ उमर, मैं ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखते ही आप के चेहरे में नुबुव्वत (ईश्दूतत्व—पैग़म्बरी) की सारी निशानियाँ पहचान लीं, केवल दो निशानियाँ आप के अंदर जांचनी रह गई थीं; उनका तहम्मुल और बुर्दबारी उनकी जहालत से बढ़ कर होगी और उनके साथ जितना अधिक जहालत से

पेश आया जाएगा वह उतना ही अधिक बुर्दबारी और तहम्मुल से पेश आयेंगे। अब मैं ने इन दोनों निशानियों को भी जाँच लिया। ऐ उमर, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैं अल्लाह को अपना रब (पालनहार) मान कर, इस्लाम को अपना धर्म मान कर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना ईश्दूत (पैग़म्बर) मान कर प्रसन्न हो गया। और मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मेरा आधा धन - और मैं मदीना में सबसे अधिक धनी हूँ- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत (समुदाय) पर ख़ैरात है। उमर ने कहाः बल्कि उनमें से कुछ लोगों पर, क्योंकि तुम्हारा धन उन सब के लिए काफी (पर्याप्त) नहीं होगा। मैं ने कहाः बल्कि उन में से कुछ लोगों पर। फिर उमर और ज़ैद पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास लौट कर आए तो ज़ैद ने कहाः मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत का योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दा (दास) और पैग़म्बर हैं। इस प्रकार वह ईमान ले आया, आप को सच्चा मान लिया और पैग़म्बर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बहुत सी जंगों में उपस्थित रहा, फिर तबूक के जंग में आगे बढ़ते हुए शहीद हो गए, अल्लाह तआला ज़ैद पर रहमतों की वर्षा करे। (सहीह इब्ने हिब्बान)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्षमा और माफी का सब से बड़ा उदाहरण यह है कि जब आप मक्का में विजेता बन कर दाखिल हुए और आप के सामने मक्का के वह लोग पेश हुए जिन्हों ने आपको नाना प्रकार की तक्लीफें (यातनाएं) पहुँचाई थीं और जिनके कारण आपको अपने शहर से निकलना पड़ा था, तो आप ने उस समय जब वह मस्जिद में एकत्र हुए उनसे कहाः "तुम्हारा क्या ख्याल है मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ? उन्होंने कहाः अच्छा ही, आप करम करने वाले भाई हैं और करम करने वाले भाई के बेटे हैं। आप ने फरमायाः "जाओ तुम सब आज़ाद हो !" (सुनन बैहक़ी अल-कुब्रा)

31. सब्र (धैर्य) : पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब्र और तहम्मुल के पैकर थे। चुनांचे अपनी दावत शुरू करने से पहले आप की क़ौम जो काम करती थी और

बुतों की पूजा करती थी उस पर सब्र करते थे, और अपनी दावत का आरंभ करन के बाद अपनी क़ौम की ओर से मक्का में जो नाना प्रकार की कठिनाईयाँ और परेशानियाँ झेलनी पड़ीं उन पर सब्र किया और उस पर अल्लाह के पास अच्छे बदले की आशा रखी। उसके बाद मदीना में मुनाफिक़ों (द्वयवादियों) के साथ सब्र से काम लिया।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रिश्तेदारों और प्रिय लोगों की वफात पर सब्र का आदर्श थे; आपकी बीवी ख़दीजा की मृत्यु हो गई, फातिमा के सिवाय आपके सारे बाल-बच्चे आप के जीवन ही में मर गए, आपके चचा अबू-तालिब और हम्ज़ा का निधन हो गया; इन तमात हालतों में आप ने सब्र से काम लिया और अल्लाह तआला से पुण्य की आशा रखी।

अनस बिन मालिक कहते हैं: हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अबू-सैफ लोहार के पास गए। उसकी बीवी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटे इब्राहीम को दूध पिलाती थी। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने इब्राहीम को लिया, उनको चुंबन किया और सूँघा। इसके बाद फिर हम अबू-सैफ के पास गए, उस समय इब्राहीम की जान निकल रही थी। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आँखों से आँसू बहने लगे। इस पर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर, आप भी (रो रहे हैं)!! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "ऐ इब्ने औफ, यह रहमत और शफक़त के आँसू हैं"। इसके बाद फिर उन्होंने कहा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "आँख आँसू बहाती है, दिल दुखी है और हम केवल वही कहते हैं जो अल्लाह को पसंद है। ऐ इब्राहीम, हम तेरी जुदाई पर दुखी हैं"। (सहीह बुख़ारी)

32. अद्ल और इन्साफ (न्याय) : पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने जीवन के तमाम मामलों में न्याय करने वाले थे, अल्लाह की शरीअत (क़ानून) को लागू और नाफिज़ करने में इन्साफ से काम लेते थे। आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैंः मख़ज़ूमी औरत का मामला जिसने चोरी की थी क़ुरैश के लिए महत्वपूर्ण बन गया तो

उन्हों ने आपस में कहाः इस के बारे में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कौन बात करेगा? उन्होंने कहाः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चहीते उसामा बिन ज़ैद के सिवा इसकी हिम्मत कौन कर सकता है? उसामा ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बारे में बात की तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "क्या तुम अल्लाह के एक हद (धार्मिक दण्ड) के बारे में सिफारिश करते हो !!" फिर आप खड़े हुए और खुत्बा (भाषण) देते हुए फरमायाः "तुम से पहले के लोग इस कारण तबाह कर दिए गए कि जब उनके अंदर कोई शरीफ (खानदान वाला) चोरी करता था तो उसे छोड़ देते थे और अगर उनके अंदर कोई नीच आदमी चोरी करता था तो उस पर हद (दण्ड) लगाते थे। अल्लाह की क़सम! अगर मुहम्मद की बेटी फातिमा भी चोरी करे तो मैं उसका हाथ काट दूँगा"। (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने नफ़्स से बदला लेने में भी न्याय करने वाले थे, उसैद बिन हुज़ैर कहते हैंः एक अन्सारी आदमी लोगों से बात कर रहा था और वह

कुछ मनोरंजक आदमी था, इस बीच कि वह लोगों को अपनी बातों से हंसा रहा था पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी कमर पर एक लकड़ी से मार दिया, तो उसने कहा मुझे बदला दीजिए, आप ने कहाः "बदला ले लो" उसने कहाः आप क़मीस पहने हुए हैं और मैं बिना क़मीस के हूँ, इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी क़मीस उठा दी, तो वह आप से चिमट गया और आपके पहलू को चूमने लगा, और कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! मैं यही चाहता था। (सुनन अबू दाऊद)

33. अल्लाह का डर और ख़ौफः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में सब से अधिक अल्लाह से डरने वाले और उसका ख़ौफ रखने वाले थे। अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से फरमायाः "मुझे कुरआन पढ़ कर सुनाओ"। मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर, मैं आप को कुरआन पढ़ कर सुनाऊँ जबकि वह आप ही पर उतरा है!? आप ने कहाः "हाँ," तो मैं ने आप को सूरतुन-निसा पढ़ कर सुनाई यहाँ तक कि मैं इस आयत पर पहुँचाः

﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَـؤُلاء شَهِيداً﴾ [النساء:٤١]

"पस क्या हाल होगा जिस समय कि हम हर उम्मत में से एक गवाह लायेंगे और आप को इन लोगों पर गवाह बनाकर लायेंगे।" (सूरतुन-निसाः ४१)

आप ने फरमायाः "बस अब काफी है"। मैं ने आप की ओर देखा तो आप की दोनों आँखों से आँसू बह रहे थे। (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैंः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब आसमान पर गहरे बादल देखते तो कभी आगे होते कभी पीछे होते, कभी अंदर दाखिल होते और कभी बाहर निकलते और आप का चेहरा बदल जाता। जब बारिश हो जाती तो आप इत्मिनान की साँस लेते। आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप से इसका कारण पूछा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "मुझे क्या मालूम कि शायद वह ऐसे ही हो जैसे कि एक क़ौम ने कहा थाः

﴿فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضاً مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُم بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ [الأحقاف:٤]

"फिर जब उन्हों ने बादल के रूप में अज़ाब को देखा अपनी घाटियों की ओर आते हुए तो कहने लगे, यह बादल हम पर बरसने वाला है, (नहीं) बल्कि दरअसल यह बादल वह (अज़ाब) है जिस की तुम जल्दी मचा रहे थे, हवा है जिस में दर्दनाक (कष्ट दायक) अज़ाब है।" (सूरतुल-अहक़ाफः २४)

(सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

34. क़नाअत -संतोष- और दिल की बेनियाज़ीः उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः मैं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया तो मैं ने आप को एक चटाई पर पाया जिसके और आपके बीच कोई चीज़ नहीं थी (चटाई पर कोई चीज़ नहीं बिछी थी) और आपके सिर के नीचे चमड़े का एक तकिया था जो खजूर

के पेड़ की छाल से भरा हुआ था और आप के पैर के पास चमड़े का एक पानी का बर्तन था और आपके सिर के पास कुछ कपड़े टंगे हुए थे। मैं ने चटाई का निशान आप के पहलू में देखा तो रो पड़ा। आप ने कहाः तुम क्यों रो रहे हो? मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर, क़ैसर और किस्रा इस दुनिया का आनंद ले रहे हैं और आप अल्लाह के पैग़म्बर हैं (और आपकी यह हालत है!) आप ने कहाः "क्या तुम्हें यह पसंद नहीं कि उनके लिए दुनिया हो और हमारे लिए आख़िरत की नेमतें हों।" (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

35. तमाम लोगों यहाँ तक कि अपने दुश्मनों का भी भला चाहते थेः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैंः मैं ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि क्या आप पर कोई ऐसा दिन भी आया है जो उहुद के दिन से भी अधिक कठिन रहा हो? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "मुझे तुम्हारी क़ौम की ओर से जिन जिन मुसीबतों का सामना हुआ वह हुआ ही, और उन में से

सब से कठिन मुसीबत वह थी जिस से मैं घाटी के दिन दो चार हुआ, जब मैं ने अपने आप को अब्द-यालील पुत्र अब्द-कुलाल के बेटे पर पेश किया, किन्तु उसने मेरी बात न मानी तो मैं दुख से चूर, ग़म से निढाल अपनी दिशा में चल पड़ा और मुझे क़र्नुस-सआलिब नामी स्थान पर पहुँच कर ही इफ़ाक़ा हुआ। मैं ने अपना सिर उठाया तो क्या देखता हूँ कि बादल का एक टुकड़ा मुझ पर छाया किए हुए है। मैं ने ध्यान से देखा तो उसमें जिब्रील थे। उन्हों ने मुझे पुकार कर कहाः आप की क़ौम ने आप से जो बात कही और आप को जो जवाब दिया अल्लाह ने उसे सुन लिया है। उसने आप के पास पहाड़ का फरिश्ता भेजा है ताकि आप उनके बारे में उसे जो आदेश चाहें, दें। उसके बाद पहाड़ के फरिश्ते ने मुझे आवाज़ दी और मुझे सलाम करने के बाद कहाः ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! बात यही है, अब आप जो चाहें, अगर आप चाहें कि मैं इन को दो पहाड़ों के बीच कुचल दूँ (तो ऐसा ही होगा)। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "नहीं, बल्कि मुझे आशा है कि अल्लाह तआला

इनकी पीठ से ऐसी नस्ल पैदा करेगा जो केवल एक अल्लाह की इबादत (उपासना) करेगी और उसके साथ किसी चीज़ को साझी नहीं ठहराएगी।'' (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं: जब अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल की मृत्यु हो गई तो उसका बेटा अब्दुल्लाह, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और आप से आप की क़मीस मांगी ताकि उसमें अपने बाप को कफनाए, तो आप ने उसे अपनी क़मीस दे दी। फिर उसने आप से निवेदन किया कि उसका जनाज़ा पढ़ा दें तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसका जनाज़ा पढ़ाने के लिए तैयार हो गये। इस पर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और आप के कपड़े को पकड़ कर कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप उसका जनाज़ा पढ़ायेंगे जबकि अल्लाह तआला ने आप को उस पर जनाज़ा पढ़ने से रोक दिया है? पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: ''अल्लाह तआला ने मुझे छूट दिया है, फरमाया:

﴿اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لاَ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِن تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً ...﴾ [التوبة:٨٠]

"आप उनके लिए क्षमा याचना करें या क्षमा याचना न करें, अगर आप उनके लिए सत्तर बार भी क्षमा याचना करें..." (सूरतुत-तौबाः ८०)

और मैं सत्तर से भी अधिक बार क्षमा याचना करूँगा।" उन्हों ने कहाः यह मुनाफिक़ है। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका जनाज़ा पढ़ा और इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारीः

﴿وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَداً وَلاَ تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ﴾ [التوبة: ٨٤]

"उन में से जो मर जाए आप उस पर कभी भी जनाज़ा न पढ़ें और न ही उसकी क़ब्र पर खड़े हों।" (सूरतुत-तौबाः ८४)

(सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ शिष्टाचार (आदाबे ज़िंदगी)

1. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों से निकट और मिल जुल कर रहते थे।

इसकी पुष्टि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन के तमाम विभागों और आप के सारे निजी और सामान्य मामलों की पूरी जानकारी प्राप्त करने से होती है। इस लिए कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही वह आदर्श और नमूना हैं जिनकी तमाम मामलों में पैरवी और अनुसरण करना चाहिए। जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: जब से मैं इस्लाम लाया हूँ पैग़म्बर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे अपने पास आने से नहीं रोका, और जब भी मुझे देखा तो मुसकुरा दिया, मैं ने आप से शिकायत की कि मैं घोड़े पर स्थिर नहीं रह पाता हूँ तो आप ने अपने हाथ से मेरे सीने पर मारा और यह दुआ कीः

"ऐ अल्लाह तू इसे स्थिर कर दे और इसे मार्ग दर्शाने वाला और मार्ग दर्शाया हुआ बना।" (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने साथियों के साथ हंसी-मज़ाक़ और चुहल किया करते थे, अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से अच्छे अख़्लाक़ वाले थे, मेरा एक भाई था जिसे अबू-उमैर कहा जाता था, (हदीस के बयान करने वाले) कहते हैंः मेरा ख़्याल है कि अनस ने कहा कि वह छोटे थे, अनस कहते हैंः जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आते और उनको देखते तो कहतेः "ऐ अबू-उमैर, तुम्हारी चिड़िया क्या हुई।" वह

कहते हैं इस तरह आप उनके साथ खेलते थे। (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हँसी-मज़ाक केवल बात चीत पर बस नहीं थी बल्कि आप अपने साथियों के साथ अमली तौर पर (क्रियात्मक रूप से) हँसी-मज़ाक और चुहल किया करते थे। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक देहाती आदमी जिस का नाम ज़ाहिर बिन हराम था पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उपहार (तोहफा) दिया करता था, जब वह वापस जाना चाहता तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके लिए कोई चीज़ तैयार करते थे। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके बारे में कहाः "ज़ाहिर हमारे देहाती और हम उनके शहरी (साथी) हैं।" अनस कहते हैं, एक दिन वह अपना सामान बेच रहे थे कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आये और उनके पीछे से उन्हें पकड़ लिया और वह आप को देख नहीं पा रहे थे। चुनाँचे उन्हों ने कहाः यह कौन है? मुझे छोड़ दे। आप ने अपना चेहरा उनकी ओर किया, जब वह पहचान गए कि

यह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं तो अपनी पीठ को आपके सीने से चिपकाने लगे। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः "यह ग़ुलाम कौन खरीदेगा?" ज़ाहिर ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर आप मुझे सस्ता पाएंगे। आप ने फरमायाः **"किन्तु तुम अल्लाह के निकट सस्ते नहीं हो"** या पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया कि **"तुम अल्लाह के पास बहुमूल्य हो।"** (सहीह इब्ने हिब्बान)

2. अपने साथियों से परामर्श करनाः जिन चीज़ों के विषय में कोई नस (यानी अल्लाह की ओर से कोई स्पष्ट प्रमाण) नहीं होता था, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन तमाम मामलों में अपने साथियों से सलाह-मश्वरा (परामर्श) किया करते थे और उनके विचार को स्वीकार करते थे। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः मैं ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बढ़ कर किसी को भी अपने साथियों से सलाह-मश्वरा करते हुए नहीं देखा। (सुनन तिरमिज़ी)

3. बीमार की तीमार दारी करना चाहे वह मुसलमान हो या काफ़िरः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने साथियों के बारे में पूछते और उनकी ख़बरगीरी किया करते थे। अगर आप को बताया जाता कि कोई बीमार है तो आप और आपके पास उपस्थित सहाबा उसकी तीमार दारी के लिए दौड़ पड़ते थे। आप केवल मुसलमान बीमारों की ही तीमार दारी नहीं करते थे बल्कि उनके अतिरिक्त दूसरे लोगों की भी तीमार दारी किया करते थे। अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : एक यहूदी बच्चा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा किया करता था, वह बीमार पड़ गया तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसकी तीमार दारी करने के लिए गये, उसके सिर के पास आप बैठ गये और उस से कहाः "तू इस्लाम ले आ" उसने अपने पास बैठ हुए अपने बाप की ओर देखा, तो उसके बाप ने कहाः अबुल-क़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात मान ले, चुनांचे वह मुसलमान हो गया, फिर आप वहाँ से यह कहते हुए निकलेः **"सभी तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने उसे आग से बचा लिया।"** (सहीह बुख़ारी)

4. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भलाई का शुक्रिया अदा करते थे और उसका अच्छा बदला देते थे : आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फर्मान है:

"अगर कोई तुम से अल्लाह के वास्ते पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दिया करो, और जो तुम से अल्लाह के नाम से कोई चीज़ मांगे तो उसे प्रदान कर दिया करो, और जो तुम्हें आमंत्रण दे उसके आमंत्रण को स्वीकार करो, और जो तुम्हारे साथ कोई भलाई करे तो उसका बदला दो, अगर तुम्हारे पास उस को बदला देने के लिए कोई चीज़ न हो तो उसके लिए दुआ करो यहाँ तक कि तुम जान लो कि तुम ने उसका बदला पूरा कर दिया।" (सुनन अबू दाऊद)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा आप के बारे में फरमाती हैं: अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तोहफा स्वीकार करते थे और उसका बदला भी देते थे। (सहीह बुख़ारी)

यानी बदले में आप भी तोहफा देते थे।

5. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर सुंदर और बढ़िया चीज़ को पसंद करते थेः अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः मैं ने कोई हरीर और दीबा नहीं छुआ जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हथेली से अधिक कोमल हो। और न कभी कोई ऐसी खुशबू सूंघी जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खुशबू से अधिक बढ़िया हो। (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

6. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भलाई और नेक काम के हर मैदान में सिफारिश करना पसंद करते थेः इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि बरीरा के पति एक ग़ुलाम थे जिनका नाम मुग़ीस था, गोया मैं उन्हें देख रहा हूँ कि वह उसके पीछे-पीछे रोते हुए चल रहे हैं और उनके आँसू उनकी दाढ़ी पर बह रहे हैं। यह देख कर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्बास से कहाः ऐ अब्बास! क्या आप को इस बात से आश्चर्य नहीं होता कि मुग़ीस किस तरह बरीरा से टूट कर प्यार करते हैं और बरीरा किस तरह मुग़ीस से नफ़्रत करती है? फिर पैग़म्बर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने (बरीरा से) कहाः "अगर तू उसके पास लौट जाती" उसने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! क्या आप मुझे हुक्म दे रहे हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "मैं सिफारिश कर रहा हूँ।" उसने कहाः मुझे उनकी कोई ज़रूरत नहीं। (सहीह बुख़ारी)

7. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी सेवा स्वयं करते थेः आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से जब पूछा गया कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर में क्या करते थे? तो उन्हों ने बतायाः आप मनुष्यों में से एक मनुष्य थे, अपने कपड़े धोते, अपनी बकरी दूहते और अपनी सेवा करते थे। (सहीह इब्ने हिब्बान)

बल्कि आप के अख्लाक़ की शराफत और बड़प्पन केवल अपनी सेवा आप तक ही सीमित नहीं था बल्कि आप दूसरों की भी सेवा किया करते थे। आपकी पत्नी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से जब पूछा गया कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर में क्या किया करते थे? तो उन्हों ने कहाः आप अपने घर वालों की सेवा में लगे रहते थे, जब अज़ान सुनते तो निकल जाते। (सहीह बुख़ारी)

न्याय पूर्ण गवाहियाँ

- जर्मनी का कवि **'गोयटे'** कहता है: मैं ने इतिहास में इस मानवता के लिए सर्वश्रेष्ठ आदर्श ढूँढा तो उसे अरबी पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में पाया।
- प्रोफेसर **'कीथ मोरे'** अपनी किताब **(The developing human)** में कहते हैं: मुझे यह बात स्वीकारने में कोई कठिनाई नहीं होती कि क़ुर्आन अल्लाह का कलाम (कथन) है, क्योंकि क़ुर्आन में

जनीन (गर्भस्थ) के जो विवरण दिये गए हैं उनका सातवीं शताब्दी की वैज्ञानिक जानकारी पर आधारित होना असम्भव है। एक मात्र उचित परिणाम (निष्कर्ष) यह है कि यह विवरण मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह की ओर से वह्य (ईश्वाणी) किये गये थे।

- **'वोल देवरान्त'** अपनी किताब **सभ्यता की कहानी** भाग-११ में कहता है: अगर हम किसी की महानता की कसौटी इस बात को बनाएं कि उस महान पुरूष का लोगों के बीच कितना प्रभाव है, तो हमें कहना पड़ेगा कि मुसलमानों के पैग़म्बर इतिहास के महान पुरूषों में सब से महान हैं। आप ने तअस्सुब (पक्षपात) और ख़ुराफात (मिथ्यावाद) को लगाम लगा दिया और यहूदियत, ईसाइयत और अपने नगर के पुराने धर्म के ऊपर एक सरल, स्पष्ट और ऐसे शक्तिशाली धर्म की स्थापना की जो आज तक एक बहुत बड़ी खतरनाक शक्ति के रूप में बाक़ी है।

- **'जार्ज डी तोल्ज़'** अपनी पुस्तक 'जीवन' में कहता है: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईश्दूत (पैग़म्बर) होने में संदेह करना दरअसल ईश्वरीय शक्ति में संदेह करना है जो सर्व संसार में फैली हुई है।

- वैज्ञानिक **'वील्ज़'** अपनी किताब **'सत्य पैग़म्बर'** में कहता है: पैग़म्बर की सच्चाई का सबसे स्पष्ट प्रमाण यह है कि उनके घर वाले और उनके सबसे क़रीबी लोग उन पर सब से पहले ईमान लाये। वह लोग उनके सारे भेदों को जानते थे, अगर उन्हें आप की सच्चाई के बारे में कुछ संदेह होता तो वे आप पर ईमान न लाते।

- मुस्तशरिक़ **'हील'** अपनी किताब **'अरब की सभ्यता'** में कहता है: मानव इतिहास में हम कोई धर्म नहीं जानते जो इतनी तेज़ी से फैला और दुनिया को बदल डाला हो जिस प्रकार इस्लाम ने किया है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक उम्मत (समुदाय) को जन्माया, धर्ती पर अल्लाह की उपासना का सिक्का

जमा दिया, न्याय और समाजी बराबरी की नीव रखी और ऐसे लोगों में व्यवस्था, प्रबन्ध, आज्ञापालन और प्रतिष्ठा एवं सम्मान स्थापित कर दिया जो कुप्रबंध और दुर्व्यवस्था के सिवा कुछ नहीं जानते थे।

- हस्पानवी मुस्तश्रिक़ **'जान लीक'** अपनी किताब **'अरब'** में कहता हैः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन की विशेषता का वर्णन इस से बेहतर कोई नहीं कर सकता जो विशेषता वर्णन अल्लाह ने अपने इस फर्मान के द्वारा किया हैः

  "हम ने आप को सर्व संसार वालों के लिए रहमत (कृपा और दया) बनाकर भेजा है।" (सूरतुल अम्बियाः १०७)

  मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच-मुच रहमत थे, मैं उन पर शौक़ और उत्सुकता से दरूद भेजता हूँ।

- **'बर्नार्ड शा'** अपनी किताब **'इस्लाम सौ साल के बाद'** में कहता हैः पूरी दुनिया शीघ्र ही इस्लाम को स्वीकार कर लेगी। अगर वह उसे उसके स्पष्ट नाम के साथ

स्वीकार न करे तो उसे मुस्तआर (किसी दूसरे) नाम से अवश्य स्वीकार करेगी। एक दिन ऐसा आएगा कि पश्चिम के लोग इस्लाम धर्म को गले से लगाएंगे। पश्चिम पर कई सदियाँ गुज़र चुकी हैं और वह इस्लाम के संबंध में झूठ से भरी हुई किताबें पढ़ता चला आ रहा है। मैं ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में एक किताब लिखी थी किन्तु अंग्रेज की रीतियों और परम्पराओं से हट कर होने के कारण वह ज़ब्त कर ली गई।

पैग़म्बर ﷺ की बीवियाँ

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी पत्नी खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के स्वर्गवास के बाद दस औरतों से शादी की जो सब की सब आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा -जो कि कुंआरी थीं- को छोड़ कर सैयिबा (यानी पहले से जिनकी शादी हुई थी) और बड़ी उमर वाली थीं। उन में से छः कुरैश खानदान से और एक यहूदन थीं और अवशेष औरतें अन्य अरब क़बीलों से थीं।

तथा आप ने एक लौंडी रखी थी जिन का नाम मारिया क़िब्तिया रज़ियल्लाहु अन्हा है, और यही आप के बेटे इब्राहीम की माँ हैं, -जिन्हें इसकन्दरिया के बादशाह मुक़ौक़िस ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तोहफा में दिया था-, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"तुम मिस्र पर विजय प्राप्त करोगे, उस धरती पर क़ीरात चलता है, जब तुम उसे फत्ह करो तो वहाँ के वासियों के साथ अच्छा व्यवहार करना क्योंकि उनका अह्द व पैमान और रिश्तेदारी है, या आप ने कहाः अह्द व पैमान और सुसराली है।" (सहीह मुस्लिम)

एक दूसरी हदीस में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"जब तुम क़िब्त के मालिक हो जाओ तो उनके साथ अच्छा बर्ताव करना क्योंकि उनका अह्द व पैमान और रिश्तेदारी है।" (मुसन्नफ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

इमाम ज़ोहरी कहते हैंः रिश्तेदारी इस्माईल की माँ हाजर के कारण है और अह्द व पैमान पैग़म्बर के बेटे इब्राहीम के कारण है।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इतनी औरतों से शादी करने के कुछ कारण हैंः

1. धार्मिक और क़ानूनी उद्देश्यः जैसे कि 'ज़ैनब' पुत्री 'जहश' से आप ने इसी कारण शादी की। जाहिलयत के समय काल में अरब के लोग मुँह बोले (ले पालक) बेटे की बीवी से शादी करने को हराम (निषिद्ध) समझते थे, इसलिए कि वह लोग ले पालक की बीवी को सगे बेटे की बीवी के समान मानते थे। चुनाँचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस विचार (भ्रम) का खण्डन करने के लिए ज़ैनब से शादी की, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَراً زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَراً وَكَانَ أَمْرُ اللهِ مَفْعُولاً﴾ [الأحزاب: ٣٧]

"जब ज़ैद ने उस महिला से अपनी ज़रूरत पूरी कर ली, हम ने उसे तेरे निकाह में दे दिया ताकि मुसलमानों पर अपने ले पालकों की बीवियों के बारे

में किसी तरह की तंगी न रहे जबकि वह अपनी ज़रूरत उनसे पूरी कर लें, अल्लाह का यह हुक्म तो होकर ही रहने वाला था।" (सूरतुल-अहज़ाबः ३७)

2. राजनीतिक कारणः अल्लाह के दीन की दावत के उद्देश्य और लोगों के दिलों को इस्लाम की ओर लुभाने और क़बीलों की हमदर्दी (सहानुभूति) जुटाने के लिए, चुनांचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के सबसे बड़े क़बीले और अरब के सबसे शक्तिशाली क़बीले में शादी की। और अपने साथियों को भी यही ढंग अपनाने का आदेश दिया, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्दुर्रहमान बिन औफ को दौमतुल जन्दल की ओर भेजते हुए फरमायाः

"अगर वह तेरी बात मान लें, तो उनके बादशाह की बेटी से शादी कर लेना।" (तारीख तबरी ३/१२६)

डा० **काहान (CAHAN)** कहते हैंः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन के कुछ पहलू हमारी वर्तमान रूजहान (मानसिक अवस्था) के कारण हमें उल्झन एंव

परेशानी में डाल सकते हैं, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सांसारिक इच्छाओं की आलोचना की गई है और आपकी नौ बीवियों के मामले को प्रकाशित किया गया है जिन से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की मृत्यु के बाद शादियाँ कीं। किन्तु यह बात प्रमाणित है कि इन वैवाहिक संबंधों में से अधिकांश पर राजनीतिक छाप है और उनका उद्देश्य कुछ कुलीन लोगों और कुछ क़बीलों की दोस्ती और वफादारी प्राप्त करना था।

3. सामाजिक कारणः जैसे कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने कुछ उन साथियों की बीवियों से शादी की जो अल्लाह के दीन को फैलाने के रास्ते (जिहाद) में मर गए थे। ज्ञात रहे कि यह औरतें उम्र में बहुत बड़ी थीं, लेकिन आप ने उन पर मेहरबानी और हमदर्दी करते हुए और उनका और उनके शौहरों का सम्मान करते हुए उन से शादी कर ली।

इटली देश की लेखिका 'लोरा वेस्सिया वागलियेरी' (*L. Veccia Vaglieri*) अपनी पुस्तक इस्लाम का दिफा

(प्रतिरक्षा) में लिखती हैः "मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी पूरी जवानी के दिनों में जबकि लैंगिक इच्छा अपनी चरम सीमा पर होती है और जबकि आप ऐसे समाज -अरब समाज- में रह रहे थे जहाँ शादी एक समाजी संस्था के रूप में अनुपस्थित थी और जहाँ अनेक बीवियों से शादी करना ही नियम था और तलाक़ देना अत्यंत सरल था, इसके बावजूद आप ने केवल एक औरत से शादी की। वह खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं जिनकी आयु पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आयु से बहुत बड़ी थी, और आप पचीस साल तक उनके मुख्लिस और प्रिय पती रहे, और दूसरी शादी उस समय तक नहीं की जब तक खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की मृत्यु न हो गई और आप की आयु पचास साल को पहुंच गई। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इन शादियों में से हर एक शादी का कोई न कोई राजनीतिक या समाजी कारण अवश्य था, जिन औरतों से आप ने शादियाँ कीं उसका उद्देश्य परहेज़गार और सदाचारी औरतों को सम्मान देना और कुछ क़बीलों और खानदानों के साथ वैवाहिक संबंध

स्थापित करना था ताकि इस्लाम को फैलाने के लिए एक नया रास्ता निकाल सकें। केवल आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को छोड़ कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसी महिलाओं से शादियां कीं जो कुंआरी, जवान और सुंदर नहीं थीं, तो क्या आप एक शह्वानी (कामुक और शह्वत परस्त) व्यक्ति थे? आप एक मनुष्य थे पूज्य नहीं थे। नई शादी करने का कारण यह भी हो सकता है कि आप को औलाद की इच्छा रही हो...आप के पास आय के कोई अधिक साधन नहीं थे इसके बावजूद आप ने एक भारी परिवार का आर्थिक बोझ अपने कन्धे पर उठा लिया और हमेशा उन सब के साथ पूरी बराबरी के साथ निबाह किया और कभी भी उन में से किसी के साथ अंतर और भेद भाव का रास्ता नहीं अपनाया। आप ने पिछले पैग़म्बरों जैसे मूसा अलैहिस्सलाम आदि के आदर्श पर चलते हुए काम किया जिनके अनेक शादियों पर आपत्ति (एतिराज़) करने वाला कोई नहीं। तो क्या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बहुविवाह की आलोचना करने का यही कारण रह जाता है कि हम दूसरे पैग़म्बरों के दैनिक जीवन

के विवरण नहीं जानते हैं जबकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवारिक जीवन की एक एक चीज़ जानते हैं?''

प्रसिद्ध अंग्रेज़ लेखक 'थामस कार्लायल' *(Thomas Carlyle)* अपनी किताब **'हीरोज़'** में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कहता हैः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शह्वत के पुजारी नहीं थे, जबकि अत्याचार, अन्याय और ज़ियादती करते हुए आप पर यह आरोप लगाया गया है। उस समय हम बड़ा अत्याचार और भयानक ग़लती करते हैं जब आप को एक शह्वत परस्त (कामुक) आदमी समझते हैं, जिसका अपनी इच्छा और लालसा पूरी करने के सिवा कुछ काम न था। कदापि नहीं! उसके और लालसाओं के बीच ज़मीन आसमान का अंतर था।

मुहम्मद ﷺ की रिसालत व नुबुव्वत (पैग़म्बरी-ईश्दूतत्व) की पुष्टि करने वाले मूलग्रंथों से कुछ प्रमाण

कुर्आन करीम से प्रमाण:

१. अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है:

﴿ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ﴾ [الأحزاب: ٤٠]

(लोगो!) मुहम्मद ﷺ तुम्हारे आदमियों में से किसी के बाप नहीं, लेकिन आप अल्लाह के पैग़म्बर और

सारे नबियों (ईश्दूतों) के समाप्त कर्ता हैं। (सूरतुल-अहज़ाबः ४०)

२. ईसा अलैहिस्सलाम ने इन्जील में मुहम्मद ﷺ के नबी (ईश्दूत) होने की शुभ सूचना दी है, अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللهِ إِلَيْكُم مُّصَدِّقاً لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَمُبَشِّراً بِرَسُولٍ يَأْتِي مِن بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ﴾ [الصف: ٦]

“और जब मर्यम के बेटे ईसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा, ऐ (मेरी क़ौम) बनी इस्राईल! मैं तुम सब की ओर अल्लाह का पैग़म्बर (ईश्दूत) हूँ, अपने से पहले की ग्रंथ तौरात की मैं पुष्टि करने वाला हूँ और अपने पश्चात आने वाले एक रसूल (पैग़म्बर)

की मैं तुम्हें शुभ सूचना देने वाला हूँ जिसका नाम अहमद है।" (सूरतुस-सफ्फः ६)

३. तथा अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوباً عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَآئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالأَغْلاَلَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ فَالَّذِينَ آمَنُواْ بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُواْ النُّورَ الَّذِيَ أُنزِلَ مَعَهُ أُوْلَـئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ﴾ [الأعراف: ٥٧]

"जो लोग ऐसे उम्मी (जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे) नबी (पैग़म्बर) की पैरवी (अनुसरण) करते हैं जिन को वह लोग अपने पास तौरात व इन्जील में

लिखा हुआ पाते हैं। वह उनको अच्छी (नेक) बातों का आदेश देते हैं और बुरी बातों से मनाही करते हैं और पवित्र चीज़ों को हलाल (वैध) बताते हैं और अपवित्र चीज़ों को उन पर हराम (अवैध, वर्जित) बताते हैं, और उन लोगों पर जो बोझ और तौक़ थे उनको दूर करते हैं। सो जो लोग उस पैग़म्बर पर ईमान लाते हैं और उनका सहयोग करते हैं और उनकी सहायता करते हैं और उस नूर (प्रकाश अर्थात क़ुरआन करीम) की पैरवी करते हैं जो उनके साथ भेजा गया है, ऐसे लोग सफलता पाने वाले हैं।" (सूरतुल-आराफः १५७)

सुन्नते नबवी से प्रमाणः

पैग़म्बर ﷺ ने फरमायाः

"मेरा और मुझ से पहले के पैग़म्बरों का उदाहरण उस व्यक्ति के समान है जिसने एक घर बनाया, उसे संवारा और सजाया किन्तु उसके एक कोने में केवल एक ईंट की जगह ऐसे ही छोड़ दिया। लोग उसकी परिक्रमा करने लगे

और उस पर आश्चर्य प्रकट करने लगे और कहने लगेः यह एक ईंट क्यों नहीं रखी गई? पैग़म्बर ﷺ ने फरमायाः "तो मैं ही वह ईंट हूँ और मैं सारे नबियों का समाप्त कर्ता हूँ।" (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

पिछली आसमानी ग्रंथों से प्रमाणः

(पाठक को इस बात से अवगत होना चाहिए कि तौरात और इन्जील के इन कथनों में वर्णित कुछ बातों को हम स्वीकार नहीं करते हैं, किन्तु हमने यहाँ उनका उल्लेख इसलिए किया है ताकि यहूदियों और ईसाइयों पर उनकी उन किताबों से तर्क स्थापित किया जाए जिन पर वह विश्वास रखते हैं।)

अता बिन यसार कहते हैंः मेरी मुलाक़ात अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से हुई तो मैं ने उनसे कहाः मुझे तौरात में अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गुण विशेषता (विलक्षण) के संबंध में बतलाईये? उन्होंने कहाः हाँ, अवश्य! अल्लाह की सौगंध

तौरात में आपकी उन्हीं कुछ विशेषताओं एंव गुणों का वर्णन हुआ है जो कुर्आन में वर्णित है। "ऐ नबी! हम ने आप को गवाही देने वाला (साक्षी), शुभ सूचना देने वाला, डराने वाला और उम्मियों (अनपढ़ों) के लिए सुरक्षक और सहायक बनाकर भेजा है। आप मेरा बन्दा और संदेश्वाहक (पैग़म्बर) हैं, मैं ने आप का नाम मुतवक्किल रखा है, आप उजड और दुश्चरित्र नहीं हैं और न ही बाज़ारों में हल्ला-गुहार मचाने वाले हैं, और आप बुराई का बदला बुराई से नहीं देते हैं, बल्कि माफ कर देते और क्षमा से काम लेते हैं। मैं आपको उस समय तक मृत्यु नहीं दूंगा जब तक कि आपके द्वारा टेढ़ी मिल्लत (पथ-भ्रष्ट राष्ट्र) को सीधा न कर दूँ और वह लोग यह न कहने लगें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, और जबँ तक कि मैं आपके द्वारा अंधी आँखों, बहरे कानों और बन्द दिलों को खोल न दूँ।" (सहीह बुख़ारी)

प्रोफेसर अब्दुल अहद दाऊद कहते हैंः ... किन्तु मैं ने अपने तर्क-वितर्क में बाईबल के कुछ अंशों को आधार बनाने की कोशिश की है जो बहुत कम ही किसी

भाषा-संबन्धी विवाद की आज्ञा देता है, और मैं लातीनी (प्राचीन रोमन) या यूनानी या आरामी भाषा की ओर नहीं जाऊँगा; क्योंकि इसका कोई लाभ नहीं है। मैं निम्न में केवल ठीक उन्हीं शब्दों को बाईबल के उस संशोधित संस्करण से प्रस्तुत कर रहा हूँ जिसे ब्रिटिश और विदेशी बाईबल सूसायटी ने प्रकाशित किया है। तौरात के पुस्तक "ड्यूटरोनामी" (अध्यायः१८, वाक्यः१८) में हम यह शब्द पढ़ते हैं: **"मैं उनके लिए उनके भाईयों ही में से तेरे समान एक नबी बनाऊँगा और अपने वचन (आदेश) को उसके मुँह में रख दूँगा।"**

यदि ये शब्द "मुहम्मद" ﷺ पर पूरे नहीं उतरते हैं तो अभी तक इनका पूरा होना बाक़ी है। क्योंकि स्वयं ईसा मसीह ने कभी यह दावा नहीं किया है कि जिस नबी की ओर यहां संकेत किया गया है, वह नबी वही हैं। यहाँ तक कि उनके शिष्यों का भी यही विचार था और वह मसीह के पुनः लौट कर आने की आशा कर रहे थे ताकि उपरोक्त पेशीनगोई (भविष्यवाणी) परिपूर्ण हो। यह बात आज तक प्रमाणित और निर्विरोध है कि ईसा मसीह का

प्रथम आगमन इस बात पर तर्क नहीं है जो तौरात के इस वाक्य में आया है कि "मैं उनके लिए तेरे समान एक नबी खड़ा करूँगा।" इसी प्रकार ईसा मसीह का दूसरी बार आगमन भी इन शब्दों का अर्थ नहीं रखता है। ईसा मसीह का (पुनः) आगमन जैसा कि उनके चर्च का मानना है एक न्यायधीश के रूप में होगा, एक धर्म-शास्त्र प्रस्तुत करने वाले के रूप में नहीं होगा। जबकि प्रतिज्ञित व्यक्ति वह है, जो 'अपने दाहिने हाथ में प्रज्वलित अग्निमय शास्त्र' लेकर आएगा।

प्रतिज्ञित नबी की व्यक्तित्व का ठीक ठीक पता लगाने के लिए किसी प्रकार से मूसा अलैहिस्सलाम की ओर मन्सूब एक भविष्यवाणी बहुत सहायक है, जो 'फारान से अल्लाह के चमकने वाले प्रकाश' के विषय पर बात चीत करती है, और वह (फारान) मक्का की एक पहाड़ी है। तथा तौरात -व्यवस्था विवरण- अध्याय (३३) वाक्य (२) मे उल्लिखित शब्द इस प्रकार हैं :

"रब -परमेश्वर- सीना से आया और सेईर से उनके लिए प्रकट हुआ और फारान की पहाड़ी से चमका, और

उसके साथ दस हज़ार पवित्र लोग आए, और उसके दाहिने हाथ से उनके लिए शरीअत (धर्म-शास्त्र) की अग्नि प्रकट हुई।"

इन शब्दों में रब के प्रकाश को सूर्य के प्रकाश के समान बताया गया है, **"जो सीना से आता है और उनके लिए सेईर से उदय होता है"**, किन्तु वह गर्व और शोभा के साथ '**फारान**' से चमकता है जहाँ उसके साथ दस हज़ार सन्त प्रकट होने थे, और वह अपने दाहिने हाथ में उनके लिए धर्म-शास्त्र उठाए हुए होता है। किसी भी इस्राईली का जिसमें ईसा मसीह भी सम्मिलित हैं **'फारान'** से कोई संबंध नहीं है। **'हाजर'** अपने बेटे **'इस्माईल'** के साथ **'बीर-सबा'** के मरूस्थल में घूमती रहीं और उन्हीं लोगों ने इसके बाद **'फारान'** के रेगिस्तान में निवास ग्रहण किया। (जिनेसिस -उत्पत्ति- अध्यायः२१ वाक्यः२१)

इसमाईल अलैहिस्सलाम की माँ ने एक मिस्री औरत से उनकी शादी कर दी, और उनके पहले बेटे 'क़ीदार' की नस्ल से 'अदनान' पैदा हुए जिनके वंश से वह अरब लोग हैं जिन्हों ने उसी समय से **'फारान'** के मरूभूमि में निवास

ग्रहण किया और उसे अपना निवास स्थान बना लिया। तो जब मुहम्मद ﷺ जैसाकि सब जानते हैं **'इस्माईल'** अलैहिस्सलाम और उनके बेटे क़ीदार (अदनान) की नस्ल से हैं, फिर इसके बाद आप फारान मरूभूमि में प्रकट हुए, फिर दस हज़ार पवित्र लोगों (मुसलमानों) के साथ मक्का में प्रवेश किए और अपनी जनता के पास प्रज्वलित धर्म-शास्त्र (शरीअत) लेकर आए। क्या यह वही पीछे उल्लेख की गई भविष्यवाणी (पेशीनगोई) नहीं है जो हरफ ब हरफ (यथाशब्द) पूरी हुई है??...

तथा वह भविष्यवाणी जो (हबक़ूक़ नबी) लेकर आए वह विशेष रूप से विचार करने और ध्यान देने के योग्य है, और वह यह है: "क़ुद्दूस फारान पहाड़ से। उसके जलाल ने आसमानों को ढाँप लिया और धरती उसकी प्रशंसा, सराहना और पाकी से भर गई।"

यहाँ पर **"सराहना"** का शब्द बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि **"मुहम्मद"** नाम का शाब्दिक अर्थ होता है **"जिसकी सराहना कि गई हो"**। इस से बढ़ कर बात यह है कि

अरब के लोग जो कि **'फारान'** मरूस्थल के वासी हैं, उनसे भी वह्य के उतरने का वादा किया गया थाः "मरूभूमि और उनके नगरों उन जगहों पर अपनी आवाज़ बुलंद करो जहाँ क़ीदार (अदनान) ने निवास किया, ''साले'' के निवासियो पहाड़ों की चोटियों के ऊपर से गाओ और ऊँची आवाज़ में चिल्लाओ, रब (पालनहार) की प्रतिष्ठा का वर्णन करो और उसकी पाकी और प्रशंसा को द्वीपों में फैलाओ, रब एक शक्तिमान व्यक्ति के समान बाहर निकलेगा और एक जंगजू (योद्धा) के समान अपनी ग़ैरत को उभारेगा, वह पुकारेगा और ज़ोर से ललकारेगा और अपने दुश्मनों को पराजित करेगा। (यशायाह ४२:११-१३)

इस विषय से संबंधित दो अन्य भविष्यवाणियाँ भी हैं जो ध्यान देने के योग्य हैं जिन में क़ीदार (अद्नान) के चर्चा का संकेत आया है, पहली भविष्यवाणी यशायाह के अध्यायः ६० में है जो इस प्रकार हैः ''तू उठ जाग और जगमगा! क्योंकि तेरा प्रकाश आ रहा है, और रब की महिमा तेरे ऊपर चमकेगी ... मिद्यान और एपा देशों के

ऊँटों के झुण्ड तेरी धरती को ढक लेंगे। शिबा के देश से ऊँटों की लम्बी पंक्तियाँ तेरे यहाँ आयेंगी। ... क़ेदार की सारी भेड़ें तेरे पास इकट्ठी हो जायेंगी, नबायोत के मेढ़े तेरी सेवा में लाए जायेंगेगे और मेरी वेदी -क़ुर्बान गाह- पर स्वीकार करने के लायक़ बलियाँ बनेंगे और मैं अपने अद्‌भुत मन्दिर और अधिक सुंदर बनाऊँगा...''

इसी प्रकार दूसरी भविष्यवाणी भी यशायाह २१:१३-१७ में आई है, वह इस प्रकार है: ''**अरब के लिए परमेश्वर का संदेश।** हे ददानी के क़ाफिले, तू रात अरब के मरूभूमि में कुछ वृक्षों के पास गुज़ार ले। कुछ प्यासे यात्रियों को पीने को पानी दो। तेमा के लोगो, उन लोगों को भोजन दो जो यात्रा कर रहे हैं। वे लोग ऐसी तलवारों से भाग रहे थे जो उन को मारने को तत्पर थे। वे लोग उन धनुषों से बचकर भाग रहे थे जो उन पर छूटने के लिए तने हुए थे। वे भीषण लड़ाई से भाग रहे थे। मेरे स्वामी ने मुझे बताया था की ऐसी बातें घटेंगी। ''एक वर्ष में (एक ऐसा ढँग जिससे मज़दूर किराये का समय गिनता हैं।) क़ेदार

का वैभव नष्ट हो जायेगा। उस समय क़ेदार के थोड़े से धनुषधारी, प्रतापी सैनिक ही जीवित बच पायेंगे।''

यशायाह की इन भविष्यवाणियों को तौरात की एक पुस्तक ''**व्यवस्था विवरण**'' (३३:२) को सामने रख कर पढ़िए जो **''पारान से अल्लाह -परमेश्वर- के प्रकाश के चमकने''** के संबंध में वार्तालाप करता है।

जब इस्माईल अलैहिस्सलाम ने 'पारान' के मरूस्थल में निवास किया, जहाँ उनके घर क़ेदार (अदनान) ने जन्म लिया जो कि अरब के सर्वोच्च पूर्वज हैं। और अगर क़ेदार के संतान पर यह लिख दिया गया था कि उनके पास अल्लाह की ओर से वही (ईश्वाणी) आएगी। और केदार के रेवड़ को पवित्र वेदी पर बलि दिये जाने को स्वीकार करना था, परमेश्वर के प्रतिष्ठा के घर को वैभव प्रदान करने के लिए। जहाँ कई शताब्दियों तक अँधकार छाया रहा था और फिर उसी धरती को अल्लाह के प्रकाश को स्वीकार करना था। और अगर केदार को प्राप्त होने वाला यह सारा वैभव और धनुषधारियों की यह संख्या और इसी प्रकार केदार की संतान के बहादुरों के सारे वैभव - इन

सारी चीज़ों को लटकती हुई तलवार और तनी हुई कमान के सामने से भागने के एक वर्ष के बीच ही नष्ट हो जाना था तो प्रश्न यह है कि क्या इस बात से **'पारान'** के एक व्यक्ति **'मुहम्मद'** के अतिरिक्त कोई और मुराद हो सकता है?! (हबक़ूक़ ३:३)

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्माईल -अलैहिस्सलाम- के वंश से हैं और क़ेदार (अदनान) की संतान से आप उनके बेटे हैं जिसने **'पारान'** के मरूस्थल में स्थाई निवास ग्रहण किया। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही वह एक मात्र पैग़म्बर हैं जिनके द्वारा अरब ने अल्लाह का संदेश प्राप्त किया, जिस समय धरती पर अन्धकार छाया हुआ था। और आपके के द्वारा ही **'पारान'** में अल्लाह के प्रकाश की किरणें चमकीं। और मक्का ही वह एक मात्र नगर है जहाँ परमेश्वर के घर में उसके नाम का आदर और वैभव हुआ। **"और इसी प्रकार केदार के रेवड़ अल्लाह के घर की वेदी पर आकर स्वीकार किए जाने लगे।"**

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी क़ौम ने सताया और आप पर अत्याचार किया। चुनांचे आप मक्का छोड़ने पर विवश हो गए, और आप को लटकती हुई तलवारों और तनी हुई कमानों से भागने के दौरान प्यास लगी। और आपके भागने के एक साल बाद ही बद्र के युद्ध में क़ेदार के पोतों (संतान) से आप की मुठभेड़ हुई। यही वह स्थान है जहाँ मक्का वालों और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीच पहली लड़ाई हुई। और इस के बाद ही केदार के पोते (जो कि धनुषधारी थे) पराजित हो गये। फिर केदार का सारा वैभव नष्ट हो गया। इस लिए अगर पवित्र ईश्दूत (मुहम्मद ﷺ) को वह्य (परमेश्वर का संदेश) स्वीकारने वाला और इन सारी पेशीनगोईयों (भविश्यवाणियों) को सच्चा कर दिखाने वाला नहीं समझा जाता है तो इसका अर्थ यह होता है कि यह भविष्यवाणियाँ अभी तक सच्ची घटित नहीं हुई हैं? ... इसी प्रकार रब (परमेश्वर) का घर जिसमें उसकी प्रतिष्ठा और महिमा का चर्चा किया जायेगा, और जिसकी ओर यशायाह (६०:७) में संकेत किया गया है, वह मक्का में

अल्लाह का पवित्र घर है, उस से तात्पर्य मसीह का गिरजाघर नहीं है जैसा कि ईसाई भाष्यकारों का मानना है। और केदार की भेड़ें जैसा कि आयत (७) में उल्लिखित है, कभी भी मसीह के गिरजाघर में नहीं आईं। और वास्तविकता यह है कि केदार के गावों और उनके वासी ही इस संसार में एक मात्र लोग हैं जो कभी भी मसीही गिरजाघर की किसी शिक्षा से प्रभावित नहीं हुए हैं।

इसी प्रकार तौरात के व्यवस्था विवरण (अध्यायः३३) में दस हज़ार (१०,०००) सन्तों का उल्लेख महत्वपूर्ण अर्थ रखता है। ''अल्लाह की ज्योति पारान पर्वत से प्रकाशित हुई और उसके साथ दस हज़ार पवित्र लोग आए।'' अगर आप पारान की मरूभूमि से संबंधित सारा इतिहास पढ़ जायें तो आप को इसके अतिरिक्त कोई और घटना नहीं मिलेगी कि जब पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का को पराजित किया तो मदीना नगर के अपने दस हज़ार अनुयायियों के साथ प्रवेश हुए और दोबारा अल्लाह के घर में लौट कर आए। आप के दाहिने हाथ में वह शरीअत (धर्म-शास्त्र) थी जिसने सारी

शरीअतों (धर्म शास्त्रों) को राख का ढेर बना दिया। तथा '**मार्गदर्शक**' और '**सत्य-आत्मा**' जिसकी मसीह ने शुभ सूचना दी थी वह स्वयं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त कोई और नहीं है। यह सम्भव नहीं है कि हम उसे '**रूहुल-कुद्स**' (पवित्र आत्मा) समझें जैसा कि कलीसाई धामिर्क सिद्धान्तों (चर्च) का मानना है। क्योंकि मसीह का कहना है:

"तुम्हारे लिए यह उचित है कि मैं दूर चला जाऊँ, इसलिए कि अगर मैं दूर नहीं जाता हूँ तो "मार्गदर्शक" तुम्हारे पास नहीं आयेगा, किन्तु अगर मैं यहाँ से प्रस्थान कर जाता हूँ तो उसे मैं तुम्हारे पास भेज दूँगा।"

इन शब्दों का स्पष्ट अर्थ यही है कि '**मार्गदर्शक**' का मसीह के पश्चात आना अनिवार्य था और यह कि जब मसीह ने यह बात कही तो वह उस समय उनके साथ नहीं था। क्या इससे हमें यह समझना चाहिये कि मसीह बिना पवित्र आत्मा (रूहुल-कुद्स) के थे यदि पवित्र आत्मा (रूहुल-कुद्स) का आगमन मसीह के प्रस्थान पर निर्भर था? इसके

अतिरिक्त जिस प्रकार मसीह ने उसका उल्लेख किया है वह उसे एक मनुष्य बनाकर पेश करता है आत्मा नहीः "वह अपनी ओर से नहीं बोलेगा, बल्कि जो कुछ वह सुनेगा वही लेगों पर दोहरा देगा।" तो क्या हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि अल्लाह और पवित्र आत्मा (रूहुल-कुद्स) दो अलग अस्तित्व हैं और पवित्र आत्मा (रूहुल-कुद्स) अपनी ओर से भी बोलता है और जो कुछ अल्लाह से सुनता है?

मसीह के शब्द स्पष्ट रूप से अल्लाह के भेजे हुए कुछ संदेशवाहकों की ओर संकेत करते हैं। वह उसे सत्य आत्मा के नाम से पुकारते हैं और कुरआन भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में ठीक इसी प्रकार बात कहता हैः

﴿بَلْ جَاء بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ﴾ [

الصافات: ٣٧]

"बल्कि वह (पैग़म्बर मुहम्मद) तो सत्य (सच्चा धर्म) लाये हैं और सब पैग़म्बरों को सच्चा जानते हैं।"

(सूरतुस-साफ्फातः ३७)

इन्जील से प्रमाणः

इन्जील (बर्नाबा ११२:१६-८०) में उल्लेख किया गया है कि ईसा अलैहिस्सलाम ने कहाः "इसलिए कि अल्लाह मुझे धरती से ऊपर चढ़ा लेगा और विश्वास घाती के रूप को बदल देगा यहाँ तक कि हर एक उसे मुझे ही गुमान करेगा। इसके बावजूद जिस समय वह बुरी मौत मर जायेगा मैं संसार में एक लम्बे समय तक उस लज्जा में बाक़ी रहूँगा। किन्तु जब अल्लाह के पवित्र पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आयेंगे तो मुझ से यह कलंक मिट जायेगा।"

पैग़म्बर ﷺ के ईशदूत और संदेशवाहक होने की सत्यता पर कुछ अक़ली तर्क

१. पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अनपढ़ थे, लिखना और पढ़ना नहीं जानते थे और ऐसी क़ौम में थे जो अनपढ़ थी, उसमें लिखना-पढ़ना बहुत ही कम लोग जानते थे। और यह केवल इस कारण था ताकि कोई संदेह करने वाला उस वह्य में संदेह न कर सके जो आप पर अल्लाह की ओर से उतरती थी, और झूठ मूट यह न गुमान कर बैठे कि उसे आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ओर से संपादन कर (गढ़) के पेश कर दिया है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَمَا كُنتَ تَتْلُو مِن قَبْلِهِ مِن كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ بِيَمِينِكَ إِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُونَ﴾ [العنكبوت: ٤٨]

"इस से पहले तो आप कोई किताब पढ़ते न थे और न किसी किताब को अपने हाथ से लिखते थे कि यह मिथ्यावादी लोग संदेह में पड़ते।"
(सूरतुल-अन्कबूतः ४८)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसी चीज़ पेश की जिसने अरब को उसके समान कोई चीज़ पेश करने से विवश और बेबस कर दिया और अपनी फसाहत व बलागत (लाटिका) से उन्हें चकित कर दिया। इस प्रकार आपका अनश्वर चमत्कार वह कुर्आन है जो आप पर अवतरित हुआ है। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैंः

"पैग़म्बरों में से प्रत्येक पैग़म्बर को कुछ न कुछ निशानी (चमत्कार) दी गई थी जिस पर लोग ईमान लाये, और मुझे जो चमत्कार (निशानी) दिया गया है वो वह्य है जिसे अल्लाह तआला ने मेरे ऊपर उतारी है, और मुझे आशा है कि क़ियामत के दिन मेरे मानने वाले सब से अधिक होंगे।" (सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम)

आपकी क़ौम के लोग अरबी भाषा के माहिर और निपुण और फसाहत से पूर्ण थे किन्तु फिर भी अल्लाह तआला ने उन्हें क़ुर्आन के समान कोई चीज़ प्रस्तुत करने के लिए चैलेंज किया तो वह बेबस हो गये, फिर उन्हें क़ुरआन के समान एक सूरत (अध्याय) प्रस्तुत करने के लिए चैलेंज किया फिर भी वह असमर्थ रहे। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَإِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَى عَبْدِنَا فَأْتُواْ بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ وَادْعُواْ شُهَدَاءَكُم مِّن دُونِ اللّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ﴾ [البقرة: ٢٣]

"हम ने जो कुछ अपने बन्दे पर उतारा है उस में अगर तुम्हें संदेह हो और तुम सच्चे हो तो उस जैसी एक सूरत तो बना लाओ, तुम्हें अधिकार है कि अल्लाह के अतिरिक्त अपने सहयोगियों को भी बुला लो।" (सूरतुल-बक़राः २३)

बल्कि सर्व संसार के लोगों को चैलेंज किया, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿قُل لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى أَن يَأْتُواْ بِمِثْلِ هَـذَا الْقُرْآنِ لاَ يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيراً﴾ [الإسراء:٨٨]

"कह दीजिये कि अगर तमाम इन्सान और सारे जिन्नात मिल कर इस क़ुरआन के समान लाना चाहें तो उन सब के लिए इसके समान लाना असंभव है चाहे वह आपस में एक दूसरे के लिए सहयोगी भी बन जायें।" (सूरतुल इस्राः ८८)

२. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निरंतर लोगों को अल्लाह की ओर बुलाते और आमंत्रण देते रहे जबकि आप को अपनी क़ौम की ओर से बहुत अधिक कठिनाईयों और टकरावों का सामना हुआ, यहाँ तक कि वो लोग आप को जान से मार डालने और आपकी दावत का अंत कर देने के लिए आप के विरूद्ध षड़यन्त्रण करने की हद तक पहुँच गये। इन सारी चीज़ों के होते हुए भी आप निरंतर उस दीन के प्रचार में जुटे रहे जिसके साथ आप को भेजा गया था और अल्लाह के दीन को फैलाने के रास्ते में आप को अपनी क़ौम की ओर से जिस कष्ट, परेशानी, कठिनाई और अत्याचार का भी सामना हुआ उस पर धैर्य करते रहे। अगर आप मिथ्यावादी होते -और आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कदापि ऐसा नहीं थे- तो आप धर्म प्रचार को त्याग देते और अपनी जान जोखों में न डालते; इस लिए कि आप देख रहे थे कि आप की पूरी क़ौम आपके विरूद्ध एक जुट हो गई है और आप का और आप की दावत का अंत करने के लिए गंभीरता का प्रदर्शन कर रही है।

डा. एम. एच. दुर्रानी (***M. H. Durrani***) कहते हैं :

"यह विश्वास, यह तीव्र प्रयास और यह दृढ़ता और पक्का संकल्प जिसके द्वारा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने आन्दोलन का अंतिम सफलता तक नेतृत्व किया, इस बात का प्रबल प्रमाण है कि आप अपनी दावत में क़तई सच्चे थे, क्योंकि अगर आप के मन में तनिक भी संदेह या व्याकुलता होती तो आप उस आँधी (तूफान) के सामने कभी टिक नहीं पाते जिसके शोले पूरे बीस साल तक भड़कते रहे। क्या इसके बाद उद्देश्य में पूर्ण सच्चाई, व्यवहार में दृढ़ता (सदव्यवहार) और मन की सर्वोच्चता का कोई और प्रमाण हो सकता है? यह सारे अस्बाब व अवामिल

(कारण) अनिवार्य रूप से इस परिणाम -निष्कर्ष- तक पहुँचाते हैं जिसे स्वीकारने बिना कोई छुटकारा नहीं कि यह व्यक्ति अल्लाह का सच्चा संदेश्वाहक (पैग़म्बर) है, यह हमारे पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। आप अपने अनुपम गुणों में एक चिन्ह, प्रतिष्ठा और अच्छाई व भलाई के पूर्ण आदर्श और सच्चाई एवं निःस्वार्थता की अलामत (पहचान) थे। आप का जीवन, आपके विचार, आप की सच्चाई, आपकी धर्म निष्ठता, आपका संयम, आपकी सखावत व दानशीलता, आप का विश्वास एवं श्रद्धा और आपके कारनामे यह सब के सब आप की नुबुव्वत (ईश्दूतत्व) के अद्वितीय प्रमाण हैं। जो व्यक्ति भी निष्पक्षता के साथ आप के जीवन और संदेश को पढ़ेगा, वह इस बात की गवाही देगा कि वाक़ई आप अल्लाह के भेजे हुए पैग़म्बर हैं, और क़ुर्अना जिसे आप लोगों के लिए लेकर आये हैं, वह अल्लाह की सच्ची किताब है। प्रत्येक गंभीर, न्याय प्रिय विचारक जो सत्य का इच्छुक है वह अवश्य इस निर्णय तक पहुँचेगा।"

३. यह बात स्पष्ट है कि प्रत्येक मनुष्य स्वभाविक रूप से इस सांसारिक जीवन के उपकरणों जैसे माल-धन, खाने-पीने की चीज़ें और शादी-विवाह को पसंद करता है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاء وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللّهُ عِندَهُ حُسْنُ الْمَآبِ﴾ [آل عمران: ١٤]

"इच्छित चीज़ों की रूचि लोगों के लिए सुंदर बना दी गई है, जैसे स्त्रियाँ और बेटे और सोने और चाँदी के इकट्ठा किये हुए खज़ाने और चिन्ह वाले घोड़े और चौपाये और खेती, यह सांसारिक जीवन का सामान है और लौटने का अच्छा ठिकाना तो अल्लाह तआला ही के पास है।" (सूरा आल-इम्रानः १४)

मनुष्य इन उपकरणों को विभिन्न साधनों और तरीक़ों से प्राप्त करने के लिए भरपूर प्रयास करता

है। किन्तू उन्हें प्राप्त करने के ढंग और तरीक़े में लोग विभिन्न हैं, कुछ लोग उन्हें उचित (धर्मसम्मत) साधन से कमाते हैं और कुछ लोग अनुचित और अवैध ढंग से कमाते हैं।

जब हम ने यह जान लिया, तो हम कहते हैं कि जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दावत का आरंभ किया तो आप की क़ौम ने आप से मोल-भाव किया और सारी लुभाने वाली चीज़ों और सांसारिक उपकरणों के द्वारा आप को उकसाया और आप की समस्त इच्छाओं और मांगों को पूरा करने का वादा किया; अगर आप सरदारी चाहते हैं तो वह आप को सरदार बना लेंगे, और अगर विवाह करना चाहते हैं तो सब से सुंदर स्त्री से आप का विवाह कर देंगे और अगर आप धन-दौलत चाहते हैं तो वह भी देने के लिए तैयार हैं, केवल एक शर्त मान लें कि इस नये धर्म को और उसकी ओर लोगों को बुलाना छोड़ दें। इस

पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ईश्वरीय निर्देश से प्राप्त विश्वास के साथ उन्हें उत्तर दिया:

"अल्लाह की क़सम! अगर ये लोग सूर्य को मेरे दाहिने हाथ में और चाँद को बायें हाथ में रख दें और यह चाहें कि मैं इस मामले को छोड़ दूँ तो मैं इसे नहीं छोड़ सकता यहाँ तक कि अल्लाह तआला इस को प्रभुत्व प्रदान कर दे, या इस के लिए मेरी जान चली जाये।" (सीरत इब्ने हिशाम २/१०१)

यदि आप मिथ्यावादी होते -और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कदापि ऐसा नहीं थे- तो इस सौदा (मोल-भाव) को स्वीकार कर लेते और इस अवसर का भरपूर लाभ उठाते; क्योंकि आप के सामने जो कुछ पेश किया गया था, वह हर उस व्यक्ति की सबसे श्रेष्ठ इच्छा होती है जिसका लक्ष्य दुनिया होता है।

डा0 एम0 एच0 दुर्रानी (*Dr. M. H. Durrani*) कहते हैं :

"पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निरंतर तेरा साल मक्का में और निरंतर आठ साल मदीना में कठिनाईयाँ और परेशानियाँ झेलीं, पर आप अपने दृष्टि-कोण से एक बाल भी नहीं हटे, आप पक्के इरादे वाले, निडर एवं बहादुर और अपने लक्ष्यों और दृष्टि-कोण में दृढ़ और पक्के थे। आप के समुदाय ने आप के सामने यह प्रस्ताव रखा कि यदि आप अपने धर्म की ओर बुलाने और अपने संदेश को फैलाने से रूक जायें तो वह आप को अपना राजा बना लेंगे और देश का सारा धन-दौलत आपके पैरों में डाल देंगे। परन्तु आप ने इन सारे बहलावों और फुसलावों को नकार दिया और उनके स्थान पर अपनी दावत (निमंत्रण) के लिए कठिनाईयों को झेलना पसंद कर लिया। आप ने ऐसा क्यों किया? आप ने कभी धन-दौलत, पद, राज्य, वैभव, विश्राम, आराम, सुख-चैन और

संपन्नता और खुशहाली की परवाह क्यों नहीं की? यदि कोई आदमी इसका उत्तर जानना चाहता है तो उसके लिए आवश्यक है कि वह इस बारे में बड़ी गहराई से सोच विचार करे।''

४. यह बात सुप्रसिद्ध और मुशाहिदे में है कि जो व्यक्ति भी किसी राज्य का शासन या नेतृत्व संभालता है तो उसके शासन के अधीन सारा धन दौलत और प्रजा उसके अधिकार में होती है और उसकी सेवा के लिए नियुक्त होती है। किन्तु जहाँ तक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का संबंध है तो आप जानते थे कि यह दुनिया स्थायी और सदा रहने वाला आवास नहीं है। इब्राहीम बिन अल्क़मा से रिवायत है कि अब्दुल्लाह ने कहा किः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक (नंगी) चटाई पर लेटे हुये थे जिस से आप के शरीर (चमड़ी) पर निशान पड़ गये थे। यह देख कर मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! मेरे माता पिता आप पर क़ुर्बान! अगर आप हमें आज्ञा देते तो हम इस पर आप के लिए कोई बिछौना बिछा देते जिस से आप के

शरीर की सुरक्षा होती। इस पर अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"मुझे दुनिया से क्या लेना देना, मेरा और दुनिया का उदाहरण एक सवार की तरह है जिसने एक पेड़ के नीचे आराम किया फिर उसे छोड़ कर प्रस्थान कर गया।" (सुनन तिर्मिज़ी)

और आप के बारे में नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः मैं ने तुम्हारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा है कि (एक समय) आप अपना पेट भरने के लिए रद्दी खजूर भी नहीं पाते थे। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घराने वालों ने लगातार तीन दिन तक पेट भर कर खाना नहीं खाया यहाँ तक कि आप का स्वर्गवास हो गया। (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

जब कि अरब द्वीप आपके शासन अधीन था और मुसलमानों को प्राप्त होने वाली प्रत्येक भलाई और

कल्याण के कारण आप ही थे। फिर भी कुछ समय आप के पास पर्याप्त खाना नहीं रहता था। आपकी पत्नी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं : पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ समय के लिए (उधार पर) एक यहूदी से खाद्यान्न खरीदा और अपनी कवच (ज़िरह) को उसके पास गिरवी रख दी। (सहीह बुख़ारी)

इस का यह अर्थ नहीं है कि आप जो चीज़ चाहते थे, उसे प्राप्त करना आप के बस की बात नहीं थी। क्यों कि मस्जिदे नबवी में धन-दौलत के ढेर के ढेर आप के सामने रखे जाते थे और उस समय तक आप अपने स्थान से नहीं उठते थे और न आप को चैन आता था जब तक कि आप उसे गरीबों और धनहीन लोगों को बांट नहीं देते थे। यही नहीं बल्कि आप के साथियों में बड़े-बड़े धन-दौलत और पूंजी वाले लोग थे और आप की सेवा के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करते थे, और आप के लिए (सब कुछ) बहुमूल्य से बहुमूल्य चीज़ों को निछावर कर देते थे।

किन्तु पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया की वास्तविकता को जानते थे। आप का फरमान है:

"अल्लाह की क़सम आख़िरत के सामने दुनिया की वास्तविकता ऐसे ही है जैसे कि तुम में से कोई आदमी अपनी इस अंगुली -आप ने शहादत की अंगुली की ओर संकेत किया- को समुद्र में डाल कर देखे कि उस में कितना पानी आता है।" (सहीह मुस्लिम)

लेडी इ० कोबोल्ड (**Lady E. Cobold**) अपनी पुस्तक **'मक्का का हज्ज'** (लन्दन १९३४) में कहती है:

जबकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अरब द्वीप के नायक थे... पर उन्होंने उपाधियों के बारे में नहीं सोचा, और न ही उस से लाभ उठाने का प्रयास किया, बल्कि इस बात पर निर्भर करते हुए अपनी हालत पर बाक़ी रहे कि वह अल्लाह के पैग़म्बर हैं और मुसलमानों के सेवक हैं। वह स्वयं

ही अपने घर की सफाई करते थे और अपने हाथ से अपने जूते की मरम्मत करते थे। दयालु, दानशील और सदाचारी थे जैसे कि वह बहने वाली हवा हों। कोई फक़ीर या भिखारी आप के पास आता तो जो कुछ आप के पास होता उसे प्रदान कर देते थे, और अधिकांश समय आप के पास थोड़ा ही होता था जो उसके लिए पर्याप्त नहीं होता था।''

५. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुछ ऐसे दुर्लभ घटनाओं का सामना होता था जिन के स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती थी, किन्तू उसके विषय में आप पर वह्य (ईश्वाणी) न उतरने के कारण आप उसके संबंध में कुछ नहीं कर पाते थे। इसलिए वह्य उतरने से पहले की अवधि को आप दुःख, चिन्ता और शोक की अवस्था में बिताते थे। इसी में से एक इफ़्क की घटना है जिस में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सतीत्व पर आरोप लगाया गया। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

एक महीना तक इस स्थिति में ठहरे रहे कि आप के दुश्मन आप के बारे में अनुचित बातें करते रहे, आपके सतीत्व को निशाना बनाते रहे, यहाँ तक कि वह्य उतरी जिस ने आपकी पत्नी (आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा) को उस आरोप से मुक्त और पवित्र घोषित कर दिया जिस से उन को आरोपित किया गया था। यदि आप मिथ्यावादी होते -और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कदापि ऐसा नहीं थे- तो इस समस्या का उसी समय समाधान कर देते, किन्तु वास्तविकता यह थी कि आप अपनी इच्छा से कोई बात नहीं कहते थे।

६. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने लिए मानव जाति से बढ़ कर किसी पद का दावा नहीं किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह बात पसंद नहीं करते थे कि आप के साथ कोई ऐसा व्यवहार किया जाए जो प्रतिष्ठा और महानता का प्रतीक हो। अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: सहाबा के निकट पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अधिक

प्रिय कोई और नहीं था। तथा उन्होंने कहाः और जब वह लोग आप को देखते तो आप के लिए खड़े नहीं होते थे; इसलिए की वह जानते थे कि आप इस से घृणा करते हैं। (सुनन तिर्मिज़ी)

वाशिंगटन इरविंग (*W. Irving*) कहता हैः

"पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फौजी सफलताओं ने उनके अंदर अभिमान, गर्व एंव घमण्ड नहीं पैदा किया। वह केवल इस्लाम के लिए युद्ध करते थे, किसी व्यक्तिगत (निजी) लाभ अथवा स्वार्थ के लिए नहीं। यहाँ तक कि महानता और श्रेष्ठता की चरम सीमा पर पहुँच कर भी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी सामान्य सरलता, सहजता और नम्रता को संभाल कर रखा। यदि आप किसी कमरे में लोगों के समूह पर प्रवेश करते तो इस बात को नापसंद करते थे कि वह लोग आप के स्वागत के लिए खड़े हो जायें, या असाधारण रूप से आप का अभिनन्दन करें। अगर आप का लक्ष्य एक महान राज्य

स्थापित करना था तो वह इस्लामिक राज्य है, जिसमें आप ने न्याय के साथ शासन किया, और आप ने यह नहीं सोचा कि उस राज्य के शासन को अपने खानदान के लिए उत्तराधिकार बना दें।''

७. कुरआन में कुछ आयतें ऐसी उतरी हैं जिन में पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उनके किसी कार्यवाही या दृष्टि पर निन्दा और डाँट-डपट की गई है, उदाहरण स्वरूपः

प्रथमः अल्लाह तआला का यह कथन हैः

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ وَاللهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾ [التحريم:

''ऐ नबी! (ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए हलाल कर दिया है उसे आप क्यों हराम करते हैं? (क्या) आप अपनी पत्नियों की प्रसन्नता प्राप्त करना

चाहते हैं? और अल्लाह तआला क्षमा करने वाला दया करने वाला है।'' (सूरा तहरीमः १)

इसकी पृष्ठभूमि यह है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी कुछ पत्नियों के कारण अपने ऊपर शहद खाना हराम कर लिया था। अतः आप के अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लेने के कारण आप के पालनहार की ओर से आप की निंदा की गई।

दूसराः अल्लाह तआला का यह फर्मान हैः

﴿عَفَا اللَّهُ عَنكَ لِمَ أَذِنتَ لَهُمْ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُواْ وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ﴾ [التوبة:٤٣]

''अल्लाह तुझे क्षमा कर दे, तू ने उन्हें क्यों अनुमति दे दी? बिना इसके कि तेरे सामने सच्चे लोग खुल जाएं और तू झूठे लोगों को भी जान ले। (सूरा तौबाः ४३)

इस आयत में अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस बात पर निंदा और डाँट-डपट की है कि आप ने तबूक के युद्ध से पीछे रह जाने वाले मुनाफिक़ों के झूठे बहानों को स्वीकार करने में शीघ्रता क्यों की? चुनांचे मात्र उनके क्षमायाचना करने पर ही उन्हें क्षमा कर दिया उनकी छान-बीन और जाँच-पड़ताल नहीं की ताकि सच्चे और झूठे की पहचान कर सकें।

तीसराः अल्लाह तआला का यह फरमानः

﴿مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَن يَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُثْخِنَ فِي الأَرْضِ تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللهُ يُرِيدُ الآخِرَةَ وَاللهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ لَّوْلاَ كِتَابٌ مِّنَ اللهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾ [سورة الأنفال: ٦٧-٦٨]

"नबी के हाथ में बन्दी नहीं चाहियें जब तक कि धरती में अच्छी रक्तपात की युद्ध न हो जाये। तुम तो दुनिया का धन-दौलत चाहते हो और अल्लाह की इच्छा आख़िरत की है, और अल्लाह सर्व शक्तिमान और सर्व तत्वदर्शी है। अगर पहले ही से अल्लाह की ओर से बात लिखी हुई न होती तो जो कुछ तुम ने लिया है उस बारे में तुम्हें कोई बड़ी सज़ा होती।" (सूरा अनूफालः ६७,६८)

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं : यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की उतारी हुई आयतों में से कोई चीज़ छुपाये होते तो इस आयत को अवश्य छुपाते :

﴿ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَاهُ ﴾ [الأحزاب: ٣٧]

"और तू अपने दिल में वह बात छुपाये हुये था जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और तू लोगों

से डरता था, हालाँकि अल्लाह तआला इस बात का अधिक योग्य था कि तू उस से डरे।'' (सूरा अहज़ाबः ३७)

(सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

तथा अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿ لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ ﴾ [آل عمران:١٢٨]

''ऐ पैग़म्बर आप के अधिकार में कुछ नहीं।''

(सूरा आल-इम्रानः १२८)

तथा अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿ عَبَسَ وَتَوَلَّىٰٓ ۝١ أَن جَآءَهُ ٱلْأَعْمَىٰ ۝٢ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُۥ يَزَّكَّىٰٓ ۝٣ أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنفَعَهُ ٱلذِّكْرَىٰٓ ۝٤ ﴾ [عبس: ١-٤]

''उसने विमुखता प्रकट की और मुँह मोड़ लिया (केवल इस लिए) कि उस के पास एक अंधा

आया। तुझे क्या पता शायद वह संवर जाता या उपदेश सुनता और उपदेश उसे लाभ पहुँचाता।''
(सूरत अबसः १-४)

यदि आप मिथ्यावादी होते -और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कदापि ऐसा नहीं थे- तो यह आयतें जिन में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की डाँट-डपट और निंदा की गई है क़ुर्आन में न होतीं।

लाईटनर (Lightner) अपनी पुस्तक **'इसलाम धर्म'** में कहता है:

''एक बार अल्लाह तआला ने अपने नबी की ओर एक ऐसी वह्य अवतरित की जिस में आप की सख्त पकड़ की गई थी, इस लिए कि आप ने अपने चेहरे को एक ग़रीब अंधे आदमी से फेर लिया था ताकि एक धनवान प्रभावशाली आदमी से बात करें। और आप ने उस वह्य का प्रसार किया और उसे फैलाया। यदि आप वैसे ही होते जैसाकि मूर्ख ईसाई आप के संबंध में कहते हैं, तो इस वह्य का वजूद न होता।''

८. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे नबी और पैग़म्बर होने तथा आप जो कुछ लेकर आये हैं उसकी सच्चाई का निश्चित प्रमाण सूरतुल-मसद् है जिसमें इस बात का निश्चित फैसला है कि आप का चाचा अबू-लहब जहन्नम में प्रवेश करेगा, और यह सूरत आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत के शुरू शुरू में उतरी है, अतः यदि आप मिथ्यावादी होते -और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कदापि ऐसा नहीं थे- तो इस प्रकार निश्चित फैसिला न घोषित करते इसलिए कि हो सकता है कि आप का चाचा मुसलमान हो जाये???

डा0 गेरी मिलर (Gary Miller) कहता हैः यह व्यक्ति अबू-लहब इस्लाम से इस हद तक घृणा करता था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जहाँ भी जाते वह आप के पीछे-पीछे चलता ताकि जो कुछ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते उसके महत्त्व को कम कर सके। यदि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपरिचित और अनजाने लोगों से

बात करते हुए देखता तो प्रतीक्षा करता रहता यहाँ तक कि आप अपनी बात खत्म करें ताकि वह उनके पास जाए, फिर उन से पूछता कि मुहम्मद ने तुम से क्या कहा है? अगर वह तुम्हें कोई चीज़ सफेद बताए तो समझो कि वह काली है और वह तुम से रात कहे तो वास्तव में वह दिन है। कहने का मक़्सद यह है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो चीज़ भी कहते वह उसका विरोध करता था और लोगों को उसके बारे में शक में डालता था। अबू लहब की मृत्यु से दस साल पहले क़ुर्आन की एक सूरत उतरी जिसका नाम 'सूरतुल मसद' है, यह सूरत बतलाती है कि अबू लहब आग (नरक) में जाएगा, यानी दूसरे शब्दों में उसका अर्थ यह हुआ कि अबू लहब कभी भी इस्लाम में प्रवेश नहीं करेगा।

(मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झूठा साबित करने के लिए) पूरे दस सालों के दौरान अबू लहब को केवल यह करना चाहिए था कि वह लोगों के सामने आ कर कहताः मुहम्मद मेरे बारे में यह कहता

है कि मैं शीघ्र ही आग (नरक) में जाऊँगा, किन्तु मैं अब यह घोषणा करता हूँ कि मैं इस्लाम स्वीकार करना चाहता हूँ और मुसलमान बनना चाहता हूँ !!

अब तुम्हारा क्या विचार है क्या मुहम्मद अपनी बात में सच्चा है या नहीं? क्या उसके पास जो वह्य आती है वह ईश्वरीय वह्य है?

किन्तु अबू लहब ने ऐसा बिल्कुल नहीं किया जबकि उसका सारा काम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विरोध करना था लेकिन उसने इस मामले में आप का विरोध नहीं किया। यह कहानी गोया यह कह रही है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू लहब से कहते हैं कि तू मुझ से घृणा करता है और मुझे खत्म कर देना चाहता है। ठीक है मेरी बात का तोड़ करने का तेरे पास अच्छा अवसर है! किन्तु पूरे दस साल के बीच उसने कुछ नहीं किया!! न तो वह इस्लाम लाया और न ही कम से कम दिखाने के लिए इस्लाम क़बूल किया!

दस साल तक उसके लिए यह अवसर था कि एक मिनट में इस्लाम को ध्वस्त कर दे ! किन्तु यह बात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात नहीं थी बल्कि उस हस्ती की ओर से वह्य थी जो ग़ैब (परोक्ष) को जानती है और उसे पता था कि अबू लहब कभी भी इस्लाम नहीं लायेगा।

अगर यह अल्लाह की ओर से वह्य न होती तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस बात को कैसे जान सकते थे कि जो कुछ सूरत में बताया गया है अबू लहब उस को साबित कर दिखायेगा?? अगर उन्हें यह पता नहीं होता कि यह अल्लाह की ओर से वह्य है तो वह पूरे दस साल तक इस बात पर दृढ़ता और विश्वास के साथ क़ाइम न रहते कि उनके पास जो चीज़ है वह सत्य है। जो आदमी इस तरह का खतरनाक चैलेंज रखता है उसके पास केवल यही एक अर्थ होता है कि यह अल्लाह की ओर से वह्य है।

﴿ تَبَّتْ يَدَآ أَبِى لَهَبٍ وَتَبَّ ۝١ مَآ أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُۥ وَمَا كَسَبَ ۝٢ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَٱمْرَأَتُهُۥ حَمَّالَةَ ٱلْحَطَبِ ۝٤ فِى جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۝٥ ﴾

[المسد:١-٥]

"अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये और वह (स्वयं) नष्ट हो गया। न तो उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमाई। वह शीघ्र ही भड़कने वाली आग में जायेगा। और उसकी बीवी भी (जायेगी) जो लकड़ियाँ ढोने वाली है, उस की गर्दन में मूंज की बटी हुई रस्सी होगी।" (सूरतुल-मसदः १-५)

६. क़ुरआन की एक आयत में 'मुहम्मद' के बदले 'अहमद' का नाम आया है, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللهِ إِلَيْكُم مُّصَدِّقاً لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَمُبَشِّراً بِرَسُولٍ يَأْتِي مِن بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ فَلَمَّا جَاءهُم بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴾ [الصف: ٦]

“और उस समय को याद करो जब मर्यम के बेटे ईसा ने कहा ऐ (मेरी क़ौम) बनी इस्राईल! मैं तुम सब की ओर अल्लाह का रसूल हूँ, मुझ से पहले की किताब तौरात की मैं पुष्टि (तस्दीक़) करने वाला हूँ और अपने बाद आने वाले एक रसूल की मैं तुम्हें शुभ सूचना सुनाने वाला हूँ जिनका नाम अहमद है। फिर जब वह उनके पास स्पष्ट और खुले हुए प्रमाण लेकर आए तो ये कहने लगे यह तो खुला हुआ जादू है।”

(सूरतुस्सफः ६)

अगर आप झूठे दावेदार होते –और आप हरगिज़ ऐसा नहीं थे– तो क़ुरआन में इस नाम का वर्णन न होता।

१०. आप ﷺ का दीन आज तक क़ाइम है, और बराबर लोग बड़ी संख्या में इस में दाखिल हो रहे हैं और इसे अन्य धर्मों पर तर्जीह (प्रधानता) दे रहें हैं, जबकि इस्लाम का दावती संघर्ष चाहे वह आर्थिक हो या मानवी जो इस्लाम के प्रसार एंव प्रचार के मैदान में किया जा रहा है वह कमज़ोर है, जबकि दूसरी ओर इस्लामी दावत के विरूद्ध किये जाने वाले संघर्ष बहुत शक्तिशाली और निरंतर हैं जो इस दीन को आड़े हाथों लेने, इस को बदनाम करने और इसकी ओर से लोगों का ध्यान फेरने में कोई कमी नहीं करते हैं। यह केवल इस लिए है कि अल्लाह तआला ने इस दीन की हिफाज़त की ज़िम्मे दारी ली है, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ﴾ [الحجر:٩]

"बेशक हम ने ही क़ुर्आन को उतारा है और हम ही उसकी हिफाज़त करने वाले हैं।" (सूरतुल हिज्रः ९)

अंग्रेज़ लेखक थामस कार्लायल (*Th. Carlyle*) मुहम्मद ﷺ के बारे में कहता है:

"क्या तुम ने कभी किसी झूठे आदमी को देखा है कि वह एक अनोखा दीन ईजाद (अविष्कार) कर सकता है? वह ईंट का एक घर भी नहीं बना सकता! अगर वह चूना, गच्च और मट्टी और इस प्रकार की अन्य चीज़ों की विशेषताओं को नहीं जानता है तो जो कुछ वह बनायेगा वह घर नहीं है बल्कि वह मल्बे का ढेर और विभिन्न सामग्रियों से मिला जुला एक टीला है। और वह इस बात के योग्य नहीं है की अपने स्तंभों पर बारह शताब्दी तक स्थापित रहे जिसमें बीस करोड़ मनुष्य बसते हों, बल्कि वह इस बात के योग्य है कि उसके स्तंभ ढह जायें और वह इस प्रकार ध्वस्त हो जाए कि उसका निशान भी न रह जाए। मुझे पता है कि मनुष्य पर अनिवार्य है कि वह अपने तमाम मामले में प्रकृति के क़ानून के अनुसार चले अन्यथा वह उसका काम करना बन्द कर देगी... वो काफिर लोग जो बात फैलाते हैं वह झूठ है चाहे वह उसको कितना

ही बना सवाँर कर पेश करें यहाँ तक कि उसे वह सच्चा ख्याल करने लगें।.. यह एक सानिहा (दुर्घटना) है कि लोग राष्ट्र के राष्ट्र और समुदाय के समुदाय इन भ्रष्टाचारों के धोखे में आ जायें।''

चुनाँचे अल्लाह तआला की ओर से कुर्आन की हिफाज़त और सुरक्षा के बाद कुर्आन करीम एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी में किताबों और लोगों के सीनों में सुरक्षित कर दिया गया। क्योंकि उसको याद करना, उसकी तिलावत -पाठ- करना, उसको सीखना और सिखाना उन कामों में से है जिन्हें करने के मुसलमान बड़े इच्छुक होते हैं और उसके लिए दौड़ पड़ते हैं ताकि वह भलाई और कल्याण प्राप्त करें जिसका उल्लेख करते हुए पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''तुम में से सब से अच्छा -सर्वश्रेष्ठ- वह आदमी है जो कुर्आन सीखे और सिखाए।'' (सहीह बुख़ारी)

कुरआन करीम में कुछ बढ़ाने या घटाने या उसके कुछ अक्षरों को बदलने के कई प्रयास किए गए किन्तु वह सारे प्रयास असफल हो गए, इसलिए कि उन्हें शीघ्र ही भाँप लिया गया और उनके और कुर्‌आन की आयतों के बीच अन्तर को जानना सरल है।

जहाँ तक पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र सुन्नतों -अहादीसे पाक- की बात है जो इस्लाम धर्म -इस्लामी धर्म-शास्त्र- का दूसरा साधन है, उनकी हिफाज़त विश्वसनीय और भरोसे मन्द लोगों के द्वारा हुई है जिन्हों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों को ढूँढने और ढूँढ-ढूँढ कर जमा करने के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया। चुनाँचे सहीह (विशुद्ध) हदीसों को बाक़ी रखा और ज़ईफ -कमज़ोर- हदीसों को स्पष्ट किया और घढ़ी हुई हदीसों पर टिप्पणी की। जो आदमी हदीस की उन किताबों को देखे जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से संबंधित हैं तो उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सादिर होने वाली तमाम चीज़ों की हिफाज़त के लिए की जाने वाली कोशिशों और प्रयासों की

हक़ीक़त का पता चल जायेगा और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो हदीसें सहीह प्रमाणित हैं उनकी शुद्धता के बारे में उसके संदेहों का निवारण होजायेगा।

माईकल हार्ट -**Michael Hart**- अपनी **"सौ प्रथम लोगों का अध्ययन"** नामक किताब में कहता है:

> "मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने संसार के एक महान धर्म की स्थापना और प्रसार की और एक महान (हम यह कहते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पद का कोई और आदमी नहीं है बल्कि वह सबसे महान हैं) राजनीतिक विश्व व्यापी लीडर हो गये, चुनाँचे आज उनकी मृत्यु पर लगभग तेरह सदी बीत जाने के बाद भी उनका प्रभाव निरंतर शक्तिशाली और गहरा है।"

११. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा लाये हुए सिद्धांतों (उसूलों) की यथार्थता और उनका हर समय हर स्थान के लिए उचित और योग्य होना, तथा उन्हें लागू करने के जो अच्छे और शुभ परिणाम

(नतीजे) सामने आ रहे हैं - यह सब इस बात की गवाही देते हैं कि जो कुछ आप लेकर आए हैं, वह अल्लाह की ओर से वह्य है। तथा यहाँ पर यह प्रश्न है कि क्या पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अल्लाह की ओर से भेजे हुए संदेशवाहक होने में कोई बाधा और रुकावट है जबकि आप से पहले बहुत से नबी और रसूल भेजे जा चुके हैं? अगर इसका उत्तर यह है कि इस में कोई अक़्ली और शरई रुकावट नहीं है तो फिर (प्रश्न यह है कि) आप पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारे लोगों के लिए पैग़म्बरी (ईश्दूतत्व) को क्यों नकारते हैं जबकि आप से पहले पैग़म्बरों की पैग़म्बरी को मानते हैं?!

१२. कारोबार, जंग, शादी-विवाह, आर्थिक मामलों, राजनीति और इबादतों...आदि के मैदान में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबानी (द्वारा) इस्लाम ने जो संविधान और क़वानीन प्रस्तुत किये हैं, पूरी दुनिया के लोग एक साथ मिल कर भी उस तरह के संविधान और क़वानीन पेश नहीं कर सकते। फिर

क्या यह बात समझ में आने वाली है कि एक अनपढ़ आदमी जो लिखना पढ़ना तक नहीं जानता था इस तरह का परिपूर्ण संविधान पेश कर सकता है जिसने पूरी दुनिया के मामले को संगठित कर दिया? क्या यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैग़म्बरी और ईश्दूतत्व की सच्चाई को प्रमाणित नहीं करती और यह कि आप अपनी खाहिश (इच्छा) से कोई बात नहीं कहते थे?

१३. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दावत का आरंभ और उसका खुल्लम खुल्ला प्रसार उस समय किया जब आप चालीस साल की उमर को पहुँच गये और जवानी और शक्ति की अवस्था को पार कर गये और बुढ़ापा और आराम पसंदी की उमर आ गई।

थामस कार्लायल अपनी किताब 'हीरोज़' में कहता है:

"....जो लोग यह कहते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी पैग़म्बरी में सच्चे नहीं थे,

उनके दावे का खण्डन करने वाली चीज़ों में से एक यह भी है कि उन्हों ने अपनी जवानी और उसके खूब सूरत दिनों को (खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ) चैन और आराम में बिताया और उस दौरान कोई ऐसी आवाज़ नहीं उठाई जिस के पीछे उनको कोई शोहरत, चर्चा, नामवरी, पद और शासन प्राप्त हो... और जब जवानी चली गई और बुढ़ापा आ घेरा तो आप के सीने में वह ज्वालामुखी फूट पड़ा जो मांद पड़ा था और आप एक महान और भव्य चीज़ की इच्छा करने लगे।''

आर० लानडाऊ (**R. Landau**) अपनी किताब 'इस्लाम और अरब' में कहता है:

''मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मिशन बहुत बड़ा था, वह ऐसा मिशन था जो किसी दज्जाल के बस में नहीं जिसे स्वार्थिक प्रलोभन -कुछ नवीन योरपी लेखकों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसी चीज़ से आरोपित किया है- इस बात की प्रेरणा दे रहे हों कि वह अपनी ज़ाती कोशिश और परिश्रम

से उस लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता की आशा रखता हो। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपने पैग़ाम और संदेश को पहुँचाने में खुल कर सामने आने वाला इख़्लास और आप के मानने वालों का आप पर उतरी हुई वह्य पर मुकम्मल ईमान (विश्वास) और पीढ़ियों और सदियों का अध्ययन और तजरूबा - यह सारी चीज़ें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी प्रकार के ज्ञान पूर्वक धोखाबाज़ी से आरोपित किये जाने को ग़ैर माक़ूल (तर्कहीन, बुद्धिहीन) और अनाधार ठहराती हैं, और इतिहास में किसी दानिस्ता -ज्ञान पूर्वक- (धार्मिक) जालसाज़ी का पता नहीं चलता है जो एक लम्बे समय तक बाक़ी रही हो, और इस्लाम अभी तेरह सौ साल से भी अधिक समय से बाक़ी ही नहीं है बल्कि हर साल उस के नये नये मानने वाले लोग पैदा हो रहे हैं। इतिहास के पन्ने किसी झूठे-फरेबी का एक उदाहरण भी नहीं पेश कर सकते जिसके संदेश को दुनिया के राज्यों में से एक

राज्य और एक सबसे अधिक कुलीन सभ्यता को जन्म देने का आश्रय प्राप्त हो।"

मुहम्मद ﷺ के अल्लाह के पैग़म्बर होने की गवाही देने के तक़ाज़े

१. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैग़म्बरी को सच्चा मानना और यह विश्वास रखना कि वह सर्व मानव जाति के लिए आम (सर्व व्यापी) है। चुनाँचे आप की पैग़म्बरी केवल आप की क़ौम या केवल आप के समय काल तक के लिए सीमित नहीं है, बल्कि यह क़यामत क़ाइम होने तक एक सामान्य (सर्व व्यापी) पैग़म्बरी है, किसी स्थान या किसी समय के साथ विशिष्ट नहीं है, अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا﴾ [الفرقان: ١]

"बहुत बरकत वाला है वह अल्लाह तआला जिस ने अपने बन्दे पर फ़ुर्क़ान (यानी क़ुर्आन जो हक़ और बातिल, तौहीद और शिर्क और न्याय और अन्याय के बीच फर्क़ करने वाला है) उतारा ताकि वह सारे लोगों के लिए आगाह करने वाला -डराने वाला- बन जाए।"
(सूरतुल फ़ुर्क़ानः १)

२. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला की ओर से जो बातें पहुँचाते हैं उनमें आप के ग़लतियों से मासूम (पाक) होने का अक़ीदा रखना। क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता हैः

﴿وَمَا يَنطِقُ عَنِ الْهَوَى ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَى﴾

[النجم: ٣-٤]

"और वह अपनी इच्छा से कोई बात नहीं कहते हैं। वह तो केवल वह्य (ईश्वाणी) होती है जो उतारी जाती है।" (सूरतुन-नज्मः ३-४)

किन्तु इसके अतिरिक्त जो अन्य बाक़ी मामले हैं तो आप एक मनुष्य हैं, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने फैसले में इज्तिहाद करते थे, जैसा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान हैः

"तुम लोग मेरे पास अपने झगड़े ले कर आते हो, हो सकता है तुम में से कोई अपनी हुज्जत को पेश करने में दूसरे से फसीह और बलीग़ (चर्ब जुबान) हो, सो मैं जो कुछ उस से सुनता हूँ उसके अनुसार उसके हक़ में फैसला दे देता हूँ। अगर मैं किसी को उसके भाई के हक़ से कुछ दे दूँ तो वह उसको न ले, क्योंकि मैं उसे आग का एक टुकड़ा दे रहा हूँ।" (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

३. यह अक़ीदा रखना कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर्व संसार के लिए रहमत बनाकर भेजे गए हैं, अल्लाह तआल ने फरमायाः

﴿وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ﴾ [

الأنبياء: ١٠٧]

"और हम ने आप को तमाम जहान वालों के लिए रहमत बनाकर भेजा है।" (सूरतुल अम्बियाः १०७)

अल्लाह का फर्मान सच्चा है, आप सच मुच रहमत के पैकर हैं, आप बन्दों को बन्दों की बन्दगी से निकाल कर बन्दों के पालनहार की बन्दगी की ओर ले आए और धर्मों के अत्याचार से निकाल कर इस्लाम के न्याय और दुनिया की तंगी से निकाल कर आख़िरत के विस्तार (कुशादगी) की ओर ला खड़ा किया।

४. इस बात का दृढ़ विश्वास रखना कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सारे पैग़म्बरों में सर्वश्रेष्ठ, उनके समाप्त कर्ता (मुद्रिका) और अंतिम पैग़म्बर हैं, आप के बाद कोई ईश्दूत और पैग़म्बर नहीं है, इसलिए कि अल्लाह तआला का फरमान हैः

﴿مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ﴾ [الأحزاب:٤٠]

“ (लोगो!) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं, किन्तु आप अल्लाह के पैग़म्बर और तमाम नबियों के समाप्त कर्ता (मुद्रिका) हैं।” (सूरतुल अहज़ाबः ४०)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“मुझे छः चीज़ो के द्वारा अन्य पैग़म्बरों पर श्रेष्ठता दी गई हैः मुझे ‘जवामिउल-कलिम’ (यानी कम शब्दों में बहुत अधिक अर्थ वाली बात कहने की योग्यता) दी गई है, रोब-दाब (धाक) के द्वारा मेरी सहायता की गई है, मेरे लिए ग़नीमत का माल (लड़ाई में दुश्मनों से प्राप्त होने वाला धन) हलाल कर दिया गया है, पूरी धरती को मेरे लिए सजूदा करने (नमाज़ पढ़ने) का स्थान और पवित्र बना दिया गया है, मुझे सर्व संसार के लोगों के लिए पैग़म्बर बनाकर भेजा गया है और

मुझ पर ईश्दूतों की कड़ी को समाप्त कर दिया गया है।'' (सहीह मुस्लिम)

५. इस बात पर पक्का विश्वास रखना कि इस्लाम धर्म मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा सम्पूर्ण और सम्पन्न हो चुका है, इसलिए उसमें कुछ बढ़ाने या घटाने की कोई सांस (गुंजाइश) नहीं है, अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الإِسْلاَمَ دِينًا﴾ [المائدة:٣]

''आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत -अनुकम्पा- भर पूर कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसंद कर लिया।'' (सूरतुल-माइदाः ३)

इस्लाम के सम्पूर्ण धर्म होने का मुशाहदा (अवलोकन) इस बात से होता है कि इस्लाम जीवन के सभी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और अखलाक़ी गोशों

को सम्मिलित है, वह धर्म और राज्य दोनों का संगम है जितना कि यह शब्द अपने अंदर अर्थ रखता है। अंग्रेज़ विचारक क्वेलिम (**Kwelem**) अपनी किताब 'इस्लामी अक़ीदा' (पृ॰११६-१२०) में इस संबंध में कहता है:

''क़ुर्आन के आदेश धार्मिक और व्यवहारिक कर्तव्यों तक ही सीमित नहीं हैं... बल्कि वह इस्लामी जगत के लिए एक सामान्य और सर्व व्यापी क़ानून है, और वह ऐसा क़ानून है जो शहरी, व्यापारिक, जंगी, न्यायिक, फौजदारी और दण्ड से संबंधित क़ानूनों को सम्मिलित है, फिर वह एक धार्मिक क़ानून है जिसकी धुरी पर धार्मिक मामलों से लेकर दुनियावी मामले तक, जान की सुरक्षा से ले कर शरीर की सुरक्षा तक, प्रजा के हुक़ूक़ से लेकर हर व्यक्ति के हुक़ूक़ तक, मनुष्य के निजी लाभ से लेकर सामाजिक संस्था के लाभ तक, प्रतिष्ठा से लेकर पाप तक और इस दुनिया में क़िसास (ख़ून का बदला) से लेकर आखिरत में क़िसास तक के सारे मामले उसी धार्मिक क़ानून की धुरी पर घूमते हैं ...

इस प्रकार कुर्आन भौतिक रूप से ईसाइयों की उन पवित्र किताबों से विभिन्न है जिन में धर्म के सिद्धांत और नियम नाम की कोई चीज़ नहीं है, बल्कि वह प्रायः कहानियों, खुराफात (मिथ्यावाद) और उपासना से संबंधित मामलों में अति उन्माद का संमिश्रण है... वह अनुचित (तर्कहीन) और प्रभाव हीन है।''

यह दृढ़ विश्वास रखना कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला की ओर से जो अमानत सौंपी गई थी आप ने उसको अदा कर दिया, उसके संदेश को पहुँचा दिया और अपनी उम्मत की भलाई और कल्याण के इच्छुक रहे। चुनांचे जो भी भलाई और कल्याण की चीज़ थी उसे बतला दिया और उसको अपनाने का आदेश दिया, और जो भी बुराई थी उससे डराया और मना किया, जैसा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अंतिम हज्ज के अवसर पर हज़ारों लोगों के समूह को सम्बोधित करते हुए फरमायाः **''क्या मैं ने दीन को पहुँचा दिया?''** सब ने कहाः हाँ, (आप ने दीन की तब्लीग़ कर दी।)

इस पर आप ने कहा: **"ऐ अल्लाह तू गवाह रह।"** (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

६. यह विश्वास रखना कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैग़म्बर बनाए जाने के बाद अल्लाह के पास केवल वही शरीअत (धर्म-शास्त्र) स्वीकार की जाएगी जो शरीअत आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी गई है, इसलिए आप की शरीअत को छोड़ कर किसी दूसरी शरीअत के द्वारा अल्लाह की उपासना नहीं की जायेगी, और इसके सिवा कोई अन्य शरीअत अल्लाह तआला हरगिज़ क़बूल नहीं करेगा, और इन्सान का हिसाब और किताब इसी शरीअत के आधार पर होगा। अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الإِسْلاَمِ دِيناً فَلَن يُقْبَلَ مِنْـهُ وَهُـوَ فِي الآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾ [آل عمران:٨٥]

"और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा कोई अन्य धर्म ढूँढेगा, तो वह (धर्म) उस से स्वीकार नहीं किया

जायेगा, और आखिरत में वह घाटा उठाने वालों में से होगा।'' (सूरत आल-इम्रानः ८५)

और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, इस उम्मत का जो भी आदमी चाहे यहूदी हो या ईसाई मेरे बारे में सुने, फिर भी उस शरीअत पर ईमान न लाए जो मैं देकर भेजा गया हूँ तो वह अवश्य जहन्नमियों में से है।'' (सहीह मुस्लिम)

७. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत और फरमांबरदारी करना, इसलिए कि अल्लाह तआला ने फरमाया हैः

﴿وَمَن يُطِعِ اللهَ وَالرَّسُولَ فَأُوْلَـئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاء وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَـئِكَ رَفِيقاً﴾ [النساء:٦٩]

"जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल की फरमांबरदारी करता है, वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह तआला ने इनूआम किया है जैसे कि पैग़म्बरों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सदाचारियों के साथ, और उनकी संगत बहुत अच्छी है।" (सूरतुन-निसाः ६९)

आप की इताअत और फरमांबरदारी यह है कि आपके आदेश का पालन किया जाए और जिन चीजों से आप ने मनाही की है उन से बचा जाए, जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान हैः

﴿وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانتَهُوا﴾ [الحشر:٧]

"और पैग़म्बर जो कुछ तुम्हें दें, उसे ले लो और जिन चीजों से तुम्हें रोक दें, उनसे रूक जाओ।" (सूरतुल-हश्रः ७)

और अल्लाह तआला ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात न मानने पर क्या परिणाम सामने आता है, चुनांचे फरमायाः

﴿وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَاراً خَالِداً فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ﴾ [النساء:١٤]

"जो आदमी अल्लाह और उसके पैग़म्बर की नाफरमानी करेगा और उसकी सीमाओं से आगे बढ़ेगा तो अल्लाह तआला उसे (जहन्नम की) आग में दाखिल कर देगा जिस में वह हमेशा रहेगा और उसके लिए अपमानजनक अज़ाब होगा।" (सूरतुन-निसाः १४)

८. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फैसले से प्रसन्न होना और जो कुछ आप ने धार्मिक नियम और सुन्नत

घोषित किया है उस पर कोई आपत्ति व्यक्त न करना, जैसाकि अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿فَلاَ وَرَبِّكَ لاَ يُؤْمِنُونَ حَتَّىَ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لاَ يَجِدُواْ فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجاً مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُواْ تَسْلِيماً﴾ [النساء:٦٥]

"तेरे रब (पालनहार) की क़सम! यह लोग उस समय तक पक्के मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि आप को अपने आपसी विवादों में हकम् (फैसला करने वाला) न मान लें, फिर आप उनके बीच जो फैसला कर दें उसके बारे में अपने दिलों में कोई तंगी न महसूस करें और उसे पूरी तरह स्वीकार कर लें।" (सूरतुन-निसाः ६५)

इसी प्रकार आप की शरीअत और आप के फैसले को इसके सिवा दूसरी शरीअतों, फैसलों, नियमों और सिद्धांतों पर प्रधानता दी जाए, इस लिए कि अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللهِ حُكْماً لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ﴾ [المائدة:٥٠]

"क्या यह लोग फिर से जाहिलियत का फैसला चाहते हैं, विश्वास रखने वाले लोगों के लिए अल्लाह तआला से बेहतर फैसले करने वाला कौन हो सकता है?"
(सूरतुल माईदाः ५०)

६. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत (पद्धति, तरीक़ा) की पैरवी करना, इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है:

﴿قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾

[آل عمران: ٣١]

"कह दीजिए अगर तुम अल्लाह तआला से महब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी (अनुसरण) करो, स्वयं अल्लाह तआला तुम से महब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और अल्लाह तआला बड़ा माफ करने वाला और बहुत मेहरबान (दयालु) है।"
(सूरत आल इम्रानः३१)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नक्शे क़दम की पैरवी करना, आपके तरीक़े पर चलना और आपको क़ाबिले तक़्लीद (अनुसरण योग्य) नमूना (आदर्श) बनाना, इस बारे में अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللهَ كَثِيراً﴾

[الأحزاب: ٢١]

"निःसंदेह तुम्हारे लिए पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में बेहतरीन नमूना (उत्तम आदर्श) है, हर उस आदमी के लिए जो अल्लाह तआला और क़ियामत के दिन की आशा रखता है और अधिकाधिक अल्लाह तआला को याद (ज़िक्र) करता है।" (सूरतुल-अह्ज़ाबः २१)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी और अनुसरण का लाज़मी (अनिवार्य) तक़ाज़ा यह है कि आप की सीरते-पाक यानी जीवनी की जानकारी प्राप्त

की जाए और उसका अध्ययन किया जाए, ताकि उसके आधार पर आपका अनुसरण और ताबेदारी हो सके।

ज़ैनुल-आबदीन यानी अली बिन हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब कहते हैं: हमें पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मग़ाज़ी (पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं या अपनी किसी फौज के द्वारा काफिरों से जंगें लड़ीं उन्हें मग़ाज़ी कहा जाता है) की शिक्षा दी जाती थी जिस प्रकार कि हमें कुर्आन की सूरतों को पढ़ाया जाता था। (इब्ने कसीर की किताबः अल-बिदाया वन्निहाया ३/२४२) और मग़ाज़ी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी का एक भाग है।

१०. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस स्थान और पद पर रखना जो अल्लाह तआला ने आप को प्रदान किया है, उसमें किसी प्रकार की अतिशयोक्ति और सीमा को पार न किया जाए और न ही उसमें कमी, उजड्पन और अन्याय से काम लिया जाए, इसलिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान हैः

"मेरी बढ़ा चढ़ाकर तारीफ कर के मुझे हद से आगे न बढ़ाओ जिस प्रकार कि ईसाईयों ने ईसा बिन मर्यम को हद से आगे बढ़ा दिया (यहाँ तक कि उनको अल्लाह का बेटा बना डाला) मैं केवल उसका बन्दा और दास हूँ, इसलिए मुझे अल्लाह का बन्दा और उस का पैग़म्बर कहो।" (सहीह बुख़ारी)

११. जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम आये तो आप के लिये प्रार्थना करना यानी आप पर दरूद व सलाम भेजना, इस लिए कि अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿إِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيماً﴾

[الأحزاب:٥٦]

"निःसंदेह अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजते हैं, ऐ

ईमान वालो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो और खूब सलाम भेजते रहा करो।" (सूरतुल अहज़ाबः ३६)

और इसलिए भी कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया हैः

"असली कंजूस वह आदमी है जिसके पास मेरा नाम आए और वह मुझ पर दुरूद न भेजे।" (सुनन तिर्मिज़ी)

१२. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से महब्बत करना, आप का आदर और सम्मान करना और आप की महब्बत पर हर प्रकार की महब्बत को कुर्बान कर देना, इसलिए कि सच्चा धर्म 'इस्लाम', जिस के स्वीकारने में लोक और परलोक का सौभाग्य और कामयाबी है, उसकी ओर मार्ग दर्शाने में अल्लाह तआला के बाद आप ही का फ़ज़्ल और एहसान है। अल्लाह तआला फरमाता हैः

﴿قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا

وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُواْ حَتَّى يَأْتِيَ اللهُ بِأَمْرِهِ وَاللهُ لاَ يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ﴾ [التوبة:٤]

"आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे कुंबे-क़बीले और तुम्हारे कमाए हुए धन और वह तिजारत जिसके मंदा होन से तुम डरते हो और वह हवेलियाँ जिन्हें तुम पसंद करते हो - अगर ये सब तुम्हें अल्लाह से और उसके पैग़म्बर से और उसके रास्ते में जिहाद से भी अधिक प्यारे हैं, तो तुम प्रतीक्षा करो कि अल्लाह तआला अपना अज़ाब ले आए। अल्लाह तआला फासिक़ों को हिदायत नहीं देता।"
(सूरतुत-तौबाः २४)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

महब्बत करने का क्या परिणाम सामने आता है, आप ने एक आदमी के प्रश्न का उत्तर देते हुए जिसने आप से पूछा था कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ! क़यामत कब आएगी? फरमायाः **"तुम ने उसके लिए क्या तैयारी की है?"** इस पर गोया वह आदमी ढीला पड़ गया फिर उसने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ! मैं ने उसके लिए बहुत अधिक रोज़ा, नमाज़ और ख़ैरात के द्वारा तैयारी तो नहीं की है, किन्तु मैं अल्लाह और उसके पैग़म्बर से महब्बत करता हूँ। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"जिस से तू महब्बत करता है तू उसी के साथ होगा।"** (सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"तीन बातें ऐसी हैं कि जिस के अंदर वह पाई गईं वह उनके कारण ईमान की मिठास पा लेगाः अल्लाह और उसके पैग़म्बर उसके नज़दीक उन दोनों के अतिरिक्त तमाम चीज़ों से अधिक प्रिय हों, और वह किसी आदमी से महब्बत करे तो केवल अल्लाह के लिए महब्बत करे, और वह कुफ़्र की ओर पलटना

जबकि अल्लाह ने उसे उससे नजात दे दी है वैसे ही नापसंद करे जैसे वह आग में डाला जाना नापसंद करता है।" (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत करने का तक़ाज़ा है की उन लोगों से भी महब्बत की जाए जिन से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महब्बत करते थे जैसे- आप के घराने वाले और आपके सहाबा, और जिन्हें आप नापसंद करते थे उन्हें नापसंद किया जाए, जिनसे आप दोस्ती रखते थे उनसे दोस्ती की जाए और जिनसे आप दुश्मनी रखते थे उनसे दुश्मनी रखी जाए, इसलिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम केवल अल्लाह ही के लिए किसी से दोस्ती रखते थे और अल्लाह ही के लिए किसी से दुश्मनी रखते थे।

१३. हिक्मत और अच्छी नसीहत के साथ आपके दीन की दावत देना, लोगों के बीच उसको फैलाना और जिसके पास दीन नहीं पहुँचा उस तक उसे पहुँचाना, तथा आपकी सुन्नत को ज़िन्दा करना और वह इस

प्रकार कि जाहिल (अनजाने) को शिक्षा दी जाए, ग़ाफिल (निश्चेत) को सावधान किया जाए और सीधे रास्ते पर चलने वाले का सहयोग किया जाए, अल्लाह तआला के इस फरमान पर अमल करते हुए:

﴿ادْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾

[سورة النحل: ١٢٥]

"अपने रब के रास्ते की ओर लोगों को हिक्मत और बेहतरीन नसीहत के साथ बुलाईये, और उनसे बेहतरीन तरीक़े से बात कीजिये।" (सुरतुन-नह्लः १२५)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"मेरी ओर से दीन की बात को दूसरों तक पहुँचाओ, चाहे वह एक आयत ही क्यों न हो।" (सहीह बुख़ारी)

१४. आप का और आप की सुन्नत का दिफाअ और समर्थन करना, यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के व्यक्तित्व की साथ जो ऐसी बातें जोड़ दी गई हैं जिन से आप बरी हैं उनको नकारना और न

जानने वालों के सामने सच्चाई और वास्तविकता को स्पष्ट करना, इसी तरह आप की सुन्नत और दावत की रक्षा एवं सुरक्षा इस प्रकार करना कि उसके बारें में इस्लाम के द्वेषी दुश्मनों की ओर से जो संदेहें उठाई और शंकाएं व्यक्त की जाती हैं उनका निवारण और खण्डन करना।

१५. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत को मज़बूती के साथ थामे रहना, इस लिए कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है:

"तुम मेरी सुन्नत और मेरे हिदायत से सम्मानित खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को मज़बूती से पकड़ लो, और उसे दांतों से जकड़ लो, और (दीन में) नयी नयी पैदा कर ली गई चीज़ों से बचो, क्योंकि (दीन के नाम पर पैदा कर ली गई) हर चीज बिद्अत है और हर बिद्अत गुमराही है।" (मुसनद अहमद)

अंत

इस पुस्तिका को हम फ्रांस के कवि "**लामारतीन**" के कथन पर सम्पन्न करते हैं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानता का बखान करते हुए कहता हैः

"इस से पहले कभी ऐसा नहीं हुआ है कि किसी मनुष्य ने चाहते या न चाहते हुए अपने सामने इतना उच्च और महान लक्ष्य रखा हो, आपका उद्देश्य मनुष्य की शक्ति से बढ़ कर था, आप का उद्देश्य उस गुमराही और पथ भ्रष्टता को समाप्त करना था जो मनुष्य और उसके खालिक़ (उत्पत्तिकर्ता) के बीच बाधा और रुकावट बन के खड़ी थी, अल्लाह को मनुष्य से और मनुष्य को अल्लाह से जोड़ना और संबंधित करना था, और अनेक बुतों के देवताओं -जिनकी उस समय लोग पूजा करते थे- के उपद्रव (अफरातफरी) के बीच उलूहियत के उचित और पवित्र कल्पना को दुहराना और बहाल करना था। इस से पहले कभी भी ऐसा नहीं हुआ है कि किसी मनुष्य ने इस प्रकार के कमज़ोर साधन के साथ ऐसे महान कार्य का बेड़ा

उठाया हो जो मनुष्य के बस से बाहर की चीज़ है, इसलिए कि आप ने अपने महान लक्ष्य की कल्पना करने और उसको नाफ़िज़ (लागु) करने में सर्वथा अपने ऊपर भरोसा किया, उस दूर रेगिस्तान के एक अज्ञात कोने में आप पर ईमान रखने वाले लोगों की एक मुठ्ठी भर लोगों के अतिरिक्त कोई अन्य आप का सहायक और मदद करने वाला नहीं था।

अन्ततः इस से पहले ऐसा भी कभी नहीं हुआ है कि किसी मनुष्य ने पूरी दुनिया में इस प्रकार की महान और सदा रहने वाली क्रान्ति और परिवर्तन पैदा करने में सफलता प्राप्त की हो, इसलिए कि इस्लाम के आने के दो शताब्दियों के अंदर ही उसने ईमान और हथियार के द्वारा पूरे अरब द्वीप पर प्रभुत्ता प्राप्त कर लिया, और फिर अल्लाह के नाम से फ़ारिस, खुरासान, मा बैनन-नहरैन के देशों, पच्छिमी हिन्दुस्तान, सीरिया, हब्शा, पूरा उत्तरी अफ्रीक़ा, मध्य सागर के अनेक द्वीप, हस्पानिया, और गाल (फ्रांस) के कुछ भाग पर विजय प्राप्त कर लिया।

जब हम किसी मानव के अबक़री (अपूर्व बुद्धि का मनुष्य) होने के तीन मेयार (कसौटियों): उद्देश्य की महानता और उच्चता, साधनों की हीनता और कमी, तथा आश्चर्यजनक सफलता और कामयाबी को सामने रखें, तो किस के अंदर यह साहस (दम) है कि वह वर्तमान इतिहास में महान पुरूषों में से किसी की तुलना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कर सके? इन महा पुरूषों ने केवल हथियारों, या खुद-साख्ता क़ानूनों, या राज्यों का निर्माण किया, उन्होंने भौतिक ढाँचों को खड़ा करने के सिवा कुछ नहीं किया जिन्हें उन्हों ने बहुधा अपनी आँखों के सामने गिरते और टूटते देखा।

किन्तु इस आदमी ने केवल सेनाओं, क़वानीन, राज्यों, प्रजा और ग़ुलामों को आन्दोलित नहीं किया, बल्कि उसके साथ ही उस समय एक तिहाई से अधिक भाग पर बसने वाले लाखों लोगों को भी आन्दोलित किया, बल्कि इस से भी कहीं अधिक उसने परमेश्वरों, मुक़द्दसात (पवित्र स्थलों), धर्मों, विचारों, आस्थाओं और प्राणों में भी आन्दोलन पैदा कर दिया, यह सब उस किताब की शिक्षाओं के आधार पर

हुआ जिस की एक एक आयत (श्लोक) एक संगठित क़ानून है। आप ने एक ऐसे रूहानी समुदाय (उम्मत) को जन्म दिया जिस में प्रत्येक नस्ल, रंग और भाषा के लोग घुल मिल गए। आप ने हमारे बीच इस्लामी उम्मत की एक अनमिट विशेषता छोड़ी है और वह है अल्लाह के साथ शिर्क करने से घृणा और नापसंदीदगी और केवल एक अकेले अल्लाह की इबादत करना जिसे निगाहें नहीं पा सकतीं। इस प्रकार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान रखने वाले, झूठे और जाली माबूदों (पूजकों) और आसमान को अपवित्र कर देने वाले शिर्क के विरूद्ध अपने सख्त मौक़िफ से विशिष्ट हैं, पूरी दुनिया की एक तिहाई आबादी का आपके धर्म में प्रवेश कर लेना आप की चमत्कार (मोजिज़ा) है, और अधिक उचित होगा कि हम यह न कहें कि यह आदमी की चमत्कार है, बल्कि यह बुद्धि और अक़्ल की चमत्कार है।

एक माबूद की उपासना का तसव्वुर, जिस की आप ने बुतों के सेवकों और पुजारियों के द्वारा लोगों के दिलों में बैठाये हुये खुराफातों और मिथ्याओं के बीच दावत दी, वह

अपने आप में एक चमत्कार था कि आप के मुँह से निकलते ही उस ने बुतपरस्ती के सारे स्थलों को ध्वस्त कर दिया और एक तिहाई जगत में आग लगा दिया। आप का जीवन, संसार में आप के चिंतन और विचार, अपने देश में पथ भ्रष्टाओं और ख़ुराफात के विरूद्ध आपका बहादुराना आंदोलन, बुतों के पुजारियों की नाराज़गी और क्रोध के चैलेंज को स्वीकारने का साहस, पन्द्रह साल (सहीह बात यह है कि आप ने मक्का में तेरह साल तक दावत दी) तक मक्का में तक़्लीफों और यातनाओं को सहने की क्षमता, क़ौम के अत्याचार और अपमान पर आप का सब्र करना यहाँ तक कि आप उनका शिकार बनने के क़रीब थे, इन सारी चीज़ों के होते हुए भी आपका अपनी दावत को निरंतर फैलाते रहना, जाहिलियत की आदतों और बुरे अख़्लाक़ के विरूद्ध जंग करना, कामयाबी पर आपका गहरा विश्वास, कठिनाईयों के समय स्थिरता और शांति, जीत के समय आप की खाकसारी, आप का उत्साह जो केवल एक ही बिंदू पर केन्द्रित था राज-काज और पद के संघर्ष में नहीं था, आप की नमाज़ें

और प्रार्थनाएं जिनका सिलसिला बन्द नहीं होता था, अल्लाह से आप की मुनाजात और सरगोशियाँ, और आपका मरना और मरने के बाद आप की शानदार कामयाबी - यह सब इस बात की गवाही देती हैं कि हम किसी झूठे दावेदार के सामने नहीं हैं, बल्कि सुदृढ़ और पक्का ईमान और टस से मस न होने वाले आश्वासन के सामने हैं जिसने आपके दीन को स्थापित करने की शक्ति प्रदान की, आप ने अपने अक़ीदा और आस्था की नीव दो बुनियादी सिद्धांतों पर रखीः वो यह कि अल्लाह एक है, और भौतिक रूप में उसको महसूस नहीं किया जा सकता, पहले सिद्धांत से हमें यह पता चलता है कि अल्लाह कौन है, और दूसरा सिद्धान्त उसकी जानकारी को ग़ैब से जोड़ता है, आप एक फिलासूफर (दार्शनिक) खतीब (वक्ता) धर्म-शास्त्री, विजेता, विचारक, संदेशवाहक, एक बुद्धिमान-धर्म और बिना बुतों और प्रतिमाओं वाली उपासना के संस्थापक, बीस राज्यों के नेता, इसके अतिरिक्त एक आत्मिक राज्य (के नेता) जिसकी कोई सीमा नहीं, यह हैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

जब हम किसी मनुष्य की महानता को मापने की सभी कसौटियों को देखें तो फिर हमें अपने आप से यह प्रश्न करना चाहिए कि क्या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महान कोई व्यक्ति है?''

α___α

विषय सूचि

विषय	पृष्ठ सं.
प्रस्तावना	३
भूमिका	१०
पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन हैं?	२३
आप का नसब नामा (वंशावली)	२३
आप का जन्म और पालन-पोषण	३६
पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुल्या	५६

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ सद्व्यवहार, स्वभाव और गुण-विशेषण ६१

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ शिष्टाचार (आदाबे ज़िंदगी) ११२

न्याय पूर्ण गवाहियाँ १२१

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियाँ १२६

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत व नुबुव्वत (ईश्दूतत्व) की पुष्टि करने वाले मूलग्रंथों से कुछ प्रमाण १३५

कुर्आन करीम से प्रमाण १३५

सुन्नते नबवी से प्रमाण १३८

पिछली आसमानी ग्रंथों से प्रमाण १३९

इन्जील से प्रमाण १५४

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ईशदूत होने की सत्यता पर कुछ अक़्ली तर्क १५६

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्लाह के पैग़म्बर होने की गवाही देने के तक़ाज़े १९९

अंत २२५